3 राजधानी
स्टोमा प्रबंधन पर कार्यशाला

6 अभिमत
बांग्लादेश में अनिश्चितता और अराजकता

11 विदेश
विदेश सचिव मिस्री नेपाल के शीर्ष नेतृत्व से मिले

12 स्पोर्ट्स
खाप पंचायतों ने विनेश लिए न्याय की मांग की

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 289
लखनऊ, सोमवार, 12 अगस्त, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

एससी सांसदों को लामबंद करेंगे चिराग पासवान

राष्ट्रीय-10

विदेशी आतंकियों के सफाए को सर्च अभियान तेज

मोहित कंधारी। जम्मू

दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग जिले के अहलान गगरमांडू वन क्षेत्र में रविवार को आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ के दौरान सुरक्षाकर्मी।

सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम ने अपने साथी सैनिकों के सर्वोच्च बलिदान का बदला लेने के लिए अनंतनाग जिले के अहलान गगरमांडू वन क्षेत्र में लगातार दूसरे दिन विदेशी आतंकवादियों के समूह का पीछा करना जारी रखा। शनिवार को हुई गोलीबारी में दो सैनिक शहीद हो गए और गंभीर रूप से घायल एक नागरिक ने रविवार को इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

सुरक्षा बल 10,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाने के बावजूद, पाकिस्तानी आतंकवादियों के समूह को नहीं खोज पाए। यह भी संदेह है कि विदेशी आतंकवादियों ने एक बार फिर घने पेड़ों और क्षेत्र में व्याप्त खराब मौसम की स्थिति का फायदा उठाकर कड़ी घेराबंदी को तोड़ दिया हो।शहीद होने वाले सैनिकों की पहचान हवलदार दीपक कुमार यादव और लेफ्टिनेंट कमांडर प्रवीण शर्मा के रूप में हुई है।

एक्स पर एक पोस्ट में, भारतीय सेना के प्रवक्ता ने कहा, भारतीय सेना गहरी संवेदना व्यक्त करती है और इस दुख की घड़ी में शोक संतप्त परिवारों के साथ खड़ी है। जनरल उपेंद्र द्विवेदी सीओएएस और भारतीय सेना के सभी रैंक के अधिकारी जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग में कर्तव्य निभाते हुए अपने प्राणों की आहुति देने वाले बहादुर हवलदार दीपक कुमार यादव और लेफ्टिनेंट कमांडर प्रवीण शर्मा के सर्वोच्च बलिदान को सलाम करते हैं। इस बीच, मुठभेड़ स्थल का दौरा करने वाले कश्मीर के महानिरीक्षक (आईजी) वीके बिरदी ने रविवार को संवाददाताओं को बताया कि एक दिन पहले शुरू हुआ अभियान जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के कोकरनाग के गागर-मांडू इलाके के ऊपरी इलाकों में जारी रहा। आईजी बिरदी ने संवाददाताओं को बताया, सुरक्षा बलों को ऊपरी इलाकों में आतंकवादियों की गतिविधि के बारे में जानकारी थी। गागर-मांडू इलाके में तलाशी अभियान चलाया जा रहा था। ऑपरेशन जारी है, सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों की गतिविधि देखी और सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच गोलीबारी भी हुई। उन्होंने कहा कि मुठभेड़ में मारे गए नागरिक की पहचान अब्दुल राशिद डार के रूप में हुई है। मौजूदा अभियान का ब्यौरा देते हुए श्रीनगर स्थित रक्षा प्रवक्ता ने कहा कि 5 अगस्त को सूत्रों और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से पुष्टि हुई कि जुलाई में डोडा क्षेत्र में हमलों के लिए जिम्मेदार आतंकवादी किश्तवाड़ रेंज को पार कर दक्षिण कश्मीर के कापरान-गरोल क्षेत्र में घुस आए हैं। राष्ट्रीय राइफल्स और जम्मू-कश्मीर पुलिस ने लगातार इन आतंकवादियों का पीछा किया और 9 और 10 अगस्त की रात को कापरान के पूर्व में पहाड़ों में सटीक अभियान चलाया गया, जहां कथित तौर पर ये आतंकवादी छिपे हुए थे।

प्रवक्ता ने कहा, 10 अगस्त को दोपहर करीब 2 बजे संदिग्ध हलचल देखी गई। सुरक्षा बलों द्वारा चुनौती दिए जाने पर आतंकवादियों ने तुरंत अंधाधुंध, हताश और लापरवाही से गोलीबारी की, जिसमें दो सैन्यकर्मी और आसपास के दो नागरिक घायल हो गए। उन्होंने कहा कि घायल नागरिकों के आतंकी इतिहास का पता लगाया जा रहा है। प्रवक्ता ने कहा, यह इलाका 10,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर है, यहां घने जंगल, बड़े-बड़े पत्थर, नाले और फिर से प्रवेश करने वाले रास्ते हैं जो ऑपरेशन के लिए गंभीर चुनौती पेश करते हैं। सुरक्षा बल सोच-समझकर आगे बढ़ रहे हैं और आतंकवादियों को पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

दूसरी ओर जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने रविवार को कहा कि पाकिस्तान केंद्र शासित प्रदेश की सुरक्षा स्थिति को अस्थिर करने के लिए विदेशी आतंकवादियों को भेज रहा है। उन्होंने कहा कि पड़ोसी देश के नापाक मंसूबों को नाकाम करने के लिए रणनीति बनाई गई है तथा सुरक्षाबलों की नए सिरे से तैनाती की जा रही है। सिन्हा ने कहा कि अगले तीन महीनों में स्थिति में बड़ा बदलाव आएगा। जम्मू क्षेत्र में स्थिति पहले शांतिपूर्ण थी लेकिन हालिया समय में खासकर सीमावर्ती जिलों में आतंकी घटनाओं में वृद्धि देखी गई है। पिछले कुछ महीनों के दौरान भारतीय वायुसेना के काफिले, तीर्थयात्रियों की बस पर हमले और कठुआ में जवानों पर हमले ने उभरते खतरे को उजागर किया है।

कोलकता में डॉक्टर से रेप-हत्या मामले में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए

सौगर सेनगुप्ता। कोलकाता

कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में रविवार को रेजीडेंट डॉक्टर रेप और हत्या के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते जूनियर डॉक्टर और मेडिकल छात्र।

उत्तरी कोलकाता के आरजी मेडिकल कॉलेज की महिला डॉक्टर के साथ रेप के बाद हत्या मामले में प्रारंभिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट में खून जमा देने वाली क्रूरता सामने आई है। पीड़िता को सहकर्मी 'अभया' कहकर पुकार रहे हैं, उसे 10 घातक चोटें आई थीं, जिससे दिल्ली के दशक पुराने निर्भया मामले की याद ताजा हो गई। पीड़िता चेस्ट मेडिसिन में पोस्ट ग्रेजुएशन कर रही थी। राज्यव्यापी अनिश्चितकालीन काम बंद करने वाले मेडिकल स्टाफ में शामिल एक साथी डॉक्टर ने बताया, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आपको अंदर तक हिला देगी, उसकी एक उंगली, कॉलर बोन और पेल्विक बोन टूटी हुई थी, उसकी दोनों आंखों, होठों, पेट और गुप्तांगों से खून बह रहा था, उसके बालों के गुच्छे उखाड़े गए थे और उसके गुप्तांगों में क्लिप लगाई गई थी।

पुलिस के अंदरूनी सूत्रों ने कहा, यह सब 30 से 35 मिनट में हुआ। उन्होंने कहा कि पोस्टमार्टम करने वाले डॉक्टरों के पैनल ने भी सुझाव दिया है कि उसकी हत्या के बाद उसके साथ बलात्कार किया गया हो सकता है, अन्यथा एक व्यक्ति के लिए इतने कम समय में इतनी चोटें पहुंचाना संभव नहीं हो सकता। परिवार के सूत्रों ने बताया कि पीड़िता डॉक्टर की अगले साल शादी होने वाली थी। उसी कॉलेज के एक डॉक्टर ने नाम नहीं बताने की शर्त पर कहा कि महिला डॉक्टर अपनी मौत से पहले बहुत दर्द में रही होगी, क्योंकि उस उम्र के एक युवा (शेष पृष्ठ 9)

महिला डॉक्टर को धमकी

बंगाल पुलिस ने रविवार को पूर्वी बर्दवान जिले के भतार स्टेट जनरल हॉस्पिटल में एक महिला डॉक्टर को आरजी कर जैसा अंजाम भुगतने की धमकी देने के आरोप में एक और नागरिक स्वयंसेवक को गिरफ्तार किया। महिला डॉक्टर के अनुसार, उस व्यक्ति ने सुशांत रॉय को फोन करके उसके साथ कहासुनी के बाद धमकी दी कि उसे आरजी कर जैसे आचरण का सामना करना पड़ेगा, क्या तुम्हें पता है कि वहां डॉक्टर के साथ क्या हुआ है। अस्पताल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, वह नशे की हालत में था और उसने हमारी एक डॉक्टर के साथ दुर्व्यवहार किया, जब वह रात की ड्यूटी पर थी...यह बहुत डरावना है...हमने इसे पुलिस के संज्ञान में लाया है।। इसके बाद रॉय को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस अधिकारियों ने कहा, हमें पता चला है कि आरोपी इलाज के लिए भटार सरकारी अस्पताल गया था और उसने इलाज शुरू करने में देरी के लिए महिला डॉक्टर को धमकाया।

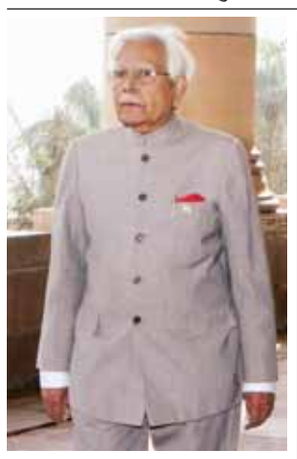

नहीं रहे पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

कांग्रेस नेता व पूर्व विदेश मंत्री के नटवर सिंह का लंबी बीमारी के बाद शनिवार रात 93 वर्ष के आयु में निधन हो गया। उन्होंने दिल्ली से सटे हरियाण के गुरुग्राम स्थित मेदांता अस्पताल में अंतिम सांस ली, जहां वह पिछले कुछ हफ्तों से भर्ती थे। वह पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली यूपीए-द्ध सरकार में वर्ष 2004-05 में भारत के विदेश मंत्री थे। उन्होंने पाकिस्तान में राजदूत के रूप में भी काम किया और वर्ष 1966 से 1971 तक पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के कार्यालय से जुड़े रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को नटवर सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया और कहा कि उन्होंने कूटनीति और विदेश नीति की दुनिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पीएम मोदी ने एक्स पर कहा नटवर सिंह के निधन से दुखी हैं। उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता के साथ-साथ विपुल लेखन के लिए भी जाने जाते थे। दुख की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके परिवार और प्रशंसकों के साथ हैं। ओम शांति। इस बीच कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा नटवर सिंह के निधन पर हमारी गहरी संवेदनाएं। बुद्धिजीवी और पद्म भूषण से सम्मानित व्यक्ति जिन्होंने भारत की कूटनीति और विदेशी मामलों में गहरा योगदान दिया। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने अपने शोक संदेश में कहा, बेहद शानदार राजनीतिक व्यक्तित्व। सिंह को 1953 में भारतीय विदेश सेवा में चुना गया था, लेकिन 1984 में उन्होंने कांग्रेस के सदस्य के रूप में चुनाव लड़ने के लिए इस्तीफा दे दिया। उन्होंने चुनाव जीता और 1989 तक केंद्रीय राज्य मंत्री के रूप में कार्य किया। उन्हें 1984 में भारत सरकार से भारत का तीसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण मिला था।

उपचुनाव में सभी सीटों पर लड़ेगी बसपा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश में विधानसभा की 10 सीटों पर होने जा रहे उपचुनाव में बसपा मजबूती के साथ उतरेगी। रविवार को पार्टी के प्रदेश कार्यालय में पार्टी की उत्तर प्रदेश इकाई के सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों और जिलाध्यक्षों की एक समीक्षा बैठक में बसपा सुप्रीमो मायावती ने उपचुनाव लड़ने की घोषणा की। मायावती ने कहा कि खासकर सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी और उसकी सरकार की ओर से उपचुनाव को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेने के कारण इन उपचुनावों में लोगों की रुचि काफी बढ़ी है, लिहाज़ा बसपा ने भी इन उपचुनावों में सभी (10) सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने और पूरे दमखम के साथ चुनाव लड़ने का फैसला किया है। बसपा गरीबों, वंचितों और पीड़ितों की पार्टी है तथा दूसरे दलों की तरह यह बड़े पूंजीपतियों और धन्नासेठों के सहारे और इशारे पर नहीं चलती है, इसलिए इसके समर्थक पूरे तन-मन-धन से सहयोग कर पार्टी के आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाएं। समीक्षा बैठक में सत्तारूढ़ बीजेपी पर निशाना साधते हुए बसपा प्रमुख ने दावा किया कि प्रदेश व पूरे देश में बढ़ती गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई और पिछड़ेपन को रोक पाने में सरकार की विफलता की वजह से लोगों में आक्रोश है और बीजेपी लगातार ध्यान भटकाने का प्रयास कर रही है। मायावती ने आरोप लगाया कहा कि इन मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने के लिए वे (बीजेपी) विनाशकारी बुलडोजर राजनीति का सहारा ले रहे हैं और लगातार नए जातिवादी और धार्मिक उन्माद/विवाद पैदा करने का षड्यंत्र रच रहे हैं। इसी क्रम में धर्मांतरण पर नया कानून (लाया गया है), एससी-एसटी समाज के लोगों का उप-वर्गीकरण और 'क्रीमी लेयर' उन्हें विभाजित करने का नया प्रयास है। जातिगत जनगणना को नकारना, मस्जिदों-मदरसों और वक्फ के संचालन में सरकारी हस्तक्षेप किया जा रहा है।उन्होंने कहा कि जनता का गरीब और मेहनतकश वर्ग स्वाभिमान के साथ जीने, सम्मान के साथ रोजी-रोजगार कमाने की कोशिश कर रहा है (शेष पृष्ठ 9)

बांग्लादेश की यूनुस सरकार ने फर्जी खबरों पर मीडिया को चेताया

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

बांग्लादेश की अतंरिम सरकार ने मीडिया संस्थानों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि अगर झूठी या भ्रामक खबरें प्रकाशित या प्रसारित की गई तो उस संगठन को बंद कर दिया जाएगा। गृह मामलों के सलाहकार ब्रिगेडियर जनरल (सेवानिवृत्त) एम सखावत हुसैन ने माना की अगर मीडिया ने घटनाओं की सही रिपोर्टिंग की होती तो पुलिस से जुड़ी मौजूदा स्थिति से बचा जा सकता था। हुसैन ने राजाबाग केंद्रीय पुलिस अस्पताल में घायल पुलिसकर्मियों से मुलाकात के दौरान कहा, जब मीडिया सच्चाई को सामने नहीं लाता तो राष्ट्र लड़खड़ा जाता है।

ढाका के एक समाचार पत्र की खबर के अनुसार उन्होंने चेतावनी दी कि यदि मीडिया ने भ्रामक खबरें प्रसारित कीं तो उन्हें बंद कर दिया जाएगा। हुसैन ने मीडिया पर सच्चाई पेश न करने का आरोप लगाते हुए कहा, जब मीडिया ईमानदारी से खबरें पेश करने में विफल रहता है तो देश की स्थिति खराब हो जाती है। उन्होंने कहा कि यदि मीडिया ने घटनाओं की सही खबर दी होती तो वर्तमान स्थिति से बचा जा सकता था। मीडिया अक्सर सच्चाई को नजरअंदाज कर देता है। वार्तालाप कार्यक्रमों में ठोस तथ्यों का अभाव रहता है और मीडिया सटीक जानकारी देने में विफल रहता है। दूसरी ओर बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस को भ्रष्टाचार निरोधक आयोग द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार के एक मामले में रविवार को बरी कर दिया गया। यूनुस ने तीन दिन पहले ही पदभार ग्रहण किया है। मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

बांग्लादेश की राजधानी ढाका में सुप्रीम कोर्ट क्षेत्र के सामने मुस्तैद बांग्लादेशी सेना और नौसेना के अधिकारी।

हिंडनबर्ग : सेबी प्रमुख व उनके पति ने आरोपों को नकारा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

अमेरिकी शोध एवं निवेश फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च ने संदेह जताया है कि अदाणी समूह के खिलाफ कार्रवाई करने में पूंजी बाजार नियामक सेबी की अनिच्छा का कारण सेबी की चेयरपर्सन माधवी पुरी बुच और उनके पति की अदाणी समूह से जुड़े विदेशी कोष में हिस्सेदारी हो सकती है। हालांकि सेबी प्रमुख ने इस आरोप को आधारहीन और चरित्र हनन का प्रयास बताया है। माधवी पुरी बुच और उनके पति ने एक संयुक्त बयान जारी कर हिंडनबर्ग के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए इसे पूरी तरह से बेबुनियाद बताया है। बुच दंपति ने कहा, रिपोर्ट में लगाए गए आरोप पूरी तरह से आधारहीन और बेबुनियाद हैं। इनमें तनिक भी सच्चाई नहीं है। हमारा जीवन और वित्तीय स्थिति एक खुली किताब की तरह है। सभी जरूरी खुलासे पहले ही वर्षों से सेबी को दिए जा चुके हैं। हमें किसी भी वित्तीय दस्तावेज का खुलासा करने में कोई हिचकिचाहट नहीं है। बुच ने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस हिंडनबर्ग रिसर्च के खिलाफ सेबी ने प्रवर्तन कार्रवाई की है और कारण बताओ नोटिस जारी किया है, उसी के जवाब में हमें ही घेरने और चरित्र हनन करने का प्रयास किया गया है। हालांकि बुच दंपती ने अदाणी समूह के खिलाफ सेबी की जांच को लेकर हिंडनबर्ग की तरफ से लगाए गए आरोपों पर कुछ नहीं कहा है। लेकिन उन्होंने कहा कि नियत समय में एक विस्तृत बयान जारी किया जाएगा।

हिंडनबर्ग ने शनिवार देर रात जारी अपनी एक रिपोर्ट में कहा कि भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की प्रमुख बुच और उनके पति धवल बुच के पास उस विदेशी कोष में हिस्सेदारी है, जिसका इस्तेमाल अदाणी समूह में धन की कथित हेराफेरी के लिए किया गया था। हिंडनबर्ग के मुताबिक, बुच और उनके पति ने बरमूडा और मॉरीशस में अस्पष्ट विदेशी कोषों में अघोषित निवेश किया था। उसने कहा कि ए वही कोष हैं जिनका कथित तौर पर विनोद अदाणी ने पैसों की हेराफेरी करने और समूक की कंपनियों के शेयरों की कीमतें बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया गया था। विनोद अदाणी, अदाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी के बड़े भाई हैं।हिंडनबर्ग ने जनवरी, 2023 में जारी अपनी पिछली रिपोर्ट में अदाणी समूह पर वित्तीय लेनदेन में गड़बड़ी और शेयरों की कीमतें चढ़ाने के लिए विदेश कोष के दुरुपयोग के आरोप लगाए गए थे। हालांकि अदाणी समूह ने इन सभी आरोपों को खारिज करते हुए कहा था कि वह नियामकीय प्रावधानों का पालन करता है। इस बीच, कांग्रेस ने केंद्र से अदाणी समूह की नियामकीय जांच में हितों के सभी टकरावों को खत्म करने के लिए तुरंत कार्रवाई करने की मांग की है। मुख्य विपक्षी दल ने देश के शीर्ष अधिकारियों की कथित मिलीभगत का पता लगाने और घोटाले की पूरी जांच के लिए एक संयुक्त संसदीय समिति गठित करने की भी मांग की है। हिंडनबर्ग ने शनिवार रात को एक ब्लॉगपोस्ट में कहा कि माधवी और उनके पति ने ऑफशोर इकाइयों में निवेश किया जो कथित तौर पर इंडिया इन्फोलाइन (आईआईएफएल) द्वारा प्रबंधित फंड का हिस्सा थे और उसमें विनोद अदाणी ने भी निवेश किया था। हिंडनबर्ग के मुताबिक, कथित तौर पर ए निवेश 2015 में किए गए थे। (शेष पृष्ठ 9)

मुल्लापेरियार बांध : केरल में एक और आपदा की आशंका

कुमार चेल्लप्पन। कोच्चि

वायनाड में भूस्खलन और बाढ़ के बाद केरल में एक और बड़ी आपदा आने वाली है। इस बाढ़ में 400 से ज़्यादा लोगों की जान चली गई और 300 घर नष्ट हो गए। पेरियार नदी पर बना 130 साल पुराना मुल्लापेरियार बांध टूटने के कगार पर है और इससे राज्य के पांच जिलों की पूरी आबादी खत्म होने की आशंका है। हालांकि बांध केरल में है, लेकिन जलग्रहण क्षेत्र का पूरा पानी तमिलनाडु में जाता है, जो यह शोर मचा रहा है कि मुल्लापेरियार बांध सुरक्षित है। लेकिन बांध निर्माण और सुरक्षा के विशेषज्ञ इससे सहमत नहीं हैं। हालांकि तुंगभद्रा बांध कर्नाटक में है, लेकिन बाढ़ के पानी से चेन लिंक टूटने के कारण इसके एक गेट के बहने की खबर ने केरल के पांच जिलों के लोगों को हिला कर रख दिया है। 1953 में बने तुंगभद्रा बांध और 130 साल पहले केरल में बने मुल्लापेरियार बांध में काफी समानताएं हैं। दोनों को सुरखी, मोर्टार, मिट्टी और चूना पत्थर से बनाया गया है, जो उन्हें भारत में अंतिम जीवित गैर-सीमेंट बांध बनाता है। तमिलनाडु के चार जिलों को पीने और सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराने के एकमात्र उद्देश्य से केरल में पेरियार नदी पर बनाया गया मुल्लापेरियार बांध आधुनिक समय का जल बम बन गया है। बांध के टूटने के बाद इडुक्की, पथानामथिट्टा, अलपुझा, कोट्टायम और एर्नाकुलम जिलों में रहने वाले लोग जलप्रलय में डूब जाएंगे। राज्य के सात बार के विधायक पी सी जॉर्ज ने कहा, यह कभी भी हो सकता है, क्योंकि बांध अपनी उपयोगिता खो चुका है। पीसी जार्ज एक नया बांध बनाने के लिए अधिकारियों के साथ लड़ाई लड़ रहे हैं। जॉर्ज ने कानून निर्माता और विधान सभा की याचिका समिति के अध्यक्ष के रूप में अपनी 35 साल की लंबी सेवा में अधिकारियों को तीन व्यापक रिपोर्ट सौंपी थीं उन्होंने कहा कि मुल्लापेरियार बांध के ढहने का असर वायनाड में 1,000 भूस्खलनों के नतीजों जैसा होगा। उन्होंने कहा, बूढ़े और बच्चे एक दिन भी ठीक से सो नहीं पाते क्योंकि उन्हें डर रहता है कि बांध कभी भी गिर सकता है। यह पश्चिमी घाट के ऊपर है और आप बांध से निकलने वाले पानी की तीव्रता का अंदाजा नहीं लगा सकते क्योंकि निकासी और बचाव अभियान के लिए कोई समय नहीं होगा।

वायनाड जिले में रविवार को भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र में खोज और बचाव अभियान जारी है।

मुल्लापेरियार बांध 53.67 मीटर ऊंचा और 365.85 मीटर लंबा है। कोट्टायम जिले के पूर्व राजस्व अधिकारी पीएनएस नंबूदरी ने कहा, बांध की सक्रिय क्षमता 10.56 हजार मिलियन क्यूबिक फीट (टीएमसी फीट) है। भूवैज्ञानिकों ने हमें आगाह किया है कि बांध उच्च तीव्रता वाले भूकंपों के लिए असुरक्षित है क्योंकि फॉल्ट लाइन जलाशय से होकर गुजरती है। जबकि तमिलनाडु सरकार ने बांध के संभावित टूटने की खबरों का मजाक उड़ाया, लेकिन यह मदुरै में भारतीय न्यूट्रिनो वेधशाला का विरोध करने में कई कदम आगे निकल गई, इस बहाने कि फॉल्ट लाइन प्रस्तावित परियोजना के लिए निर्धारित क्षेत्र से होकर गुजरती है। लेकिन फॉल्ट लाइन मुल्लापेरियार बांध के खतरनाक रूप से करीब है। भूकंप विशेषज्ञों और भूवैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि सुरखी और मोर्टार से बना यह बांध अपनी उपयोगिता खो चुका है और इसे जल्द से जल्द बंद कर दिया जाना चाहिए। आईआईटी दिल्ली के डॉ. एके गोसाईं, जिन्होंने बांध के सुरक्षा पहलुओं का अध्ययन करने के लिए विशेषज्ञों की एक टीम का नेतृत्व किया था, उन्होंने 2011 में ही एक नए बांध के निर्माण का आह्वान किया था। उन्होंने इस अखबार से कहा था, मैं यह नहीं कहता कि मुल्लापेरियार कल ढह जाएगा। लेकिन जलविज्ञानी के दृष्टिकोण से बांध सुरक्षित नहीं है। मुल्लापेरियार के ढहने (शेष पृष्ठ 9)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को लागू करने वाला यूपी अग्रणी राज्य

● अब हम एक जनपद-एक विश्वविद्यालय की ओर बढ़ रहे हैं: मुख्यमंत्री

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को अपने सरकारी आवास पर आयोजित एक उच्चस्तरीय बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के दृष्टिगत अब तक हुए क्रियान्वयन तथा भावी योजनाओं/कार्यक्रमों की समीक्षा की। बैठक में मुख्यमंत्र को बेसिक, माध्यमिक, उच्च, प्राविधिक, व्यावसायिक, कृषि तथा चिकित्सा शिक्षा विभाग की प्रगति के बारे में अवगत कराया गया। मुख्यमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ज्ञान, कौशल विकास और रोजगारपरक शिक्षा पर विशेष ध्यान देती है। युवाओं को उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। करिकुलम तैयार करते समय इन विषयों को केन्द्र में रखा जाए। इस शिक्षा नीति का विजन उच्च शिक्षण संस्थानों में आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुये गुणवत्तापूर्ण, सार्वभौमिक एवं रोजगारपरक शिक्षा उपलब्ध कराना है। उत्तर प्रदेश इस नीति को लागू करने वाला अग्रणी राज्य रहा है। विगत 03 वर्षों में इसके माध्यम से सकल नामांकन दर में वृद्धि तथा विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए हुए प्रयासों के अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं।

प्रदेश ने एक मण्डल एक विश्वविद्यालय का लक्ष्य पूरा कर लिया है। अब हम एक जनपद-एक विश्वविद्यालय की ओर बढ़ रहे हैं। सकल नामांकन दर को बेहतर करने में इन नए विश्वविद्यालयों की स्थापना से सहायता मिल रही है। वर्तमान में उच्च शिक्षण संस्थानों में सकल नामांकन दर लगभग 25 प्रतिशत है। हमारा लक्ष्य आगामी 10 वर्षों में इस दर को 50 प्रतिशत से अधिक करना होना चाहिए। प्रदेश में मुख्यमंत्री शिक्षुता प्रोत्साहन योजना के माध्यम से स्नातक व डिप्लोमा उत्तीर्ण युवाओं को औद्योगिक संस्थानों में अप्रेंटिसशिप की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। अब तक पिछले वित्तीय वर्ष में 53 हजार से अधिक युवा इस योजना से जुड़े हैं। इस वर्ष अब तक 11 हजार अभ्यर्थियों ने पंजीकरण कराया है, जिसमें से लगभग 2800 युवा अप्रेंटिसशिप कर रहे हैं। औद्योगिक इकाइयों से संवाद समन्वय करते हुए अधिकाधिक युवाओं को इससे लाभान्वित कराएं। सभी शिशिक्षुओं को समय से स्टाइपेंड का भुगतान होना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आजमगढ़ स्थित महाराजा सुहेलदेव राज्य विश्वविद्यालय में महान साहित्यकार, विचारक राहुल सांकृत्यायन के नाम पर यथाशीघ्र शोधपीठ की स्थापना की जाए। यह पीठ राहुल सांकृत्यायन जी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर शोध-अध्ययन के लिए युवाओं के लिए उचित मंच प्रदान करेगी। एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) प्लेटफॉर्म पर सभी छात्रों का पंजीकरण अनिवार्य होना चाहिए। सभी छात्रों के क्रेडिट हस्तान्तरण इसी प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रबन्धित किए जाएं। इसके के बारे में छात्र-छात्राओं को जागरूक करें। मल्टीपल एण्ट्री और मल्टीपल एक्जिट प्रणाली को लागू किया जाए।

कृषि शिक्षा, शोध एवं अनुसंधान में अपार अवसर हैं। कैरियर की दृष्टि से भी यह सेक्टर बड़ी सम्भावनाएं समेटे हुए है। हाल के वर्षों में बड़ी संख्या में युवाओं का आकर्षण इस ओर देखने को मिला है। पाठ्यक्रम व विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है। आज सभी 04 कृषि विश्वविद्यालयों में इन्क्यूबेशन सेण्टर स्थापित हो रहे हैं। कृषि से सम्बन्धित सेण्टर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित किये जा रहे हैं। प्रदेश के कृषि शिक्षण संस्थानों के विनियमन के लिए एक व्यवस्थित संस्था की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) जैसी संस्था इस सम्बन्ध में उपयोगी हो सकती है। इस सम्बन्ध में आवश्यक कदम उठाए जाएं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में बेसिक शिक्षा को मजबूत बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। प्री-प्राइमरी शिक्षण तंत्र को व्यवस्थित करते हुए आज लगभग 88,000 आंगनबाड़ी केन्द्रों को 'बाल वाटिका' के रूप में नया स्वरूप दिया गया है। बाल वाटिकाओं को उपयोगी बनाएं। इसके लिए महिला एवं बाल विकास तथा बेसिक शिक्षा विभाग को मिलकर काम करना होगा। बाल वाटिका को एक ऐसे केन्द्र के रूप में विकसित करें, जहां बच्चों में सीखने के प्रति ललक पैदा हो। समय-समय पर पाठ्यक्रम को अपडेट किया जाना चाहिए। छोटे बच्चों की पुस्तकों, पढ़ाने के तौर-तरीकों को रुचिकर बनाया जाना चाहिए। कक्षा 01 व 02 में अब एनसीईआरटी पाठ्यक्रम लागू हो गया है। सभी विद्यालयों में इन पुस्तकों की उपलब्धता होनी चाहिए। यह संतोषप्रद है कि वर्तमान सत्र में 20.5 लाख नए बच्चों को जोड़ा गया है। स्कूल ड्रॉप आउट हर एक बच्चे को स्कूल से जोड़ने का प्रयास किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री अभ्युदय कम्पोजिट विद्यालय तथा मुख्यमंत्री मॉडल कम्पोजिट विद्यालयों के निर्माण की कार्यवाही तेजी से आगे बढ़ाई जाए। अटल आवासीय विद्यालयों के साथ यह विद्यालय आने वाले समय में प्रदेश की आधारभूत शिक्षा व्यवस्था में बड़े बदलाव का वाहक बनेंगे। इन विद्यालयों को वैश्विक मानकों के अनुरूप सुसज्जित किया जाना चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में वार्षिक कैलेण्डर तैयार करते समय यह सुनिश्चित करें कि अपरिहार्य स्थिति न हो तो वार्षिक परीक्षाएं 15 मई तक सम्पन्न हो जाएं।

पुलिस अफसरों पर मुख्यमंत्री सख्त, नहीं सुधरे तो होगी कार्रवाई

● सीएम ने लापरवाह एसपी, एसएसपी और पुलिस कमिश्नर को लगाई फटकार

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महिलाओं और बच्चियों से संबंधित अपराधों के निस्तारण में हीलाहवाली करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कड़ा रूख अख्तियार किया है। उन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए लापरवाही पर अधिकारियों को कड़ी फटकार लगायी है। साथ ही सुधार लाने के निर्देश दिये हैं। माना जा रहा है कि सीएम योगी के अल्टीमेटम के बाद भी सुधार न होने पर कई अधिकारियों पर गाज गिर सकती है। वैसे तो उत्तर प्रदेश महिलाओं और बच्चियों से संबंधित अपराधों के निस्तारण में देश में पहले स्थान पर है। बावजूद इसके प्रदेश के कई जिलों का महिला संबंधी अपराधों के निस्तारण का रेश्यो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अपेक्षा के अनुरुप नहीं है। सीएम योगी की मंशा है कि महिला संबंधी अपराधों का निस्तारण शत-प्रतिशत होना चाहिये, जबकि प्रदेश के कुछ जिलों का रेश्यो 80 से 90 प्रतिशत के बीच है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में कानून व्यवस्था को लेकर अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की थी। बैठक में अधिकारियों ने सीएम योगी के सामने आईटीएसएसओ पोर्टल के आधार पर 1 अपैल 2023 से 30 अप्रैल 2024 की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इसमें बताया गया कि उत्तर प्रदेश महिलाओं और बच्चियों से संबंधित अपराधों के निस्तारण में देश भर के राज्यों में पहले स्थान पर है। प्रदेश का निस्तारण रेश्यो 98.70 प्रतिशत है। वहीं केंद्र शासित राज्यों में लद् ?दाख पहले और दादरा और नगर हवेली एवं दमन दीव दूसरे स्थान पर है। इस पर उन्होंने प्रसन्नता जाहिर करते हुए गृह विभाग की पीठ थपथपाई। वहीं अधिकारियों ने रिपोर्ट के आधार पर सीएम को बताया कि प्रदेश के कुछ जिलों के अधिकारी निस्तारण को लेकर गंभीर नहीं हैं। रिपोर्ट में उनकी लापरवाही सामने आयी है। इस पर सीएम योगी ने नाराजगी जाहिर करते हुए ऐसे अधिकारियों (एसपी, एसएसपी और पुलिस कमिश्नर) को एक माह में सुधार लाने का अल्टीमेटम दिया है। साथ ही अधिकारियों को एक माह बाद लापरवाह अधिकारियों की रिपोर्ट शासन को उपब्लध कराने के निर्देश दिये हैं। यदि लापरवाह अधिकारियों की कार्यप्रणाली में सुधार नहीं होता है तो उन पर गाज गिर सकती है। इन जिलों में निस्तारण का रेश्यो 80 से 90 प्रतिशत के बीच है सीएम योगी महिला एवं बच्चियों संबंधी अपराधों के निस्तारण का रेश्या शत-प्रतिशत चाहते हैं। उन्हे महिला संबंधी मामलों में लापरवाही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं है।

कॉम्प्लाएंस रेट में प्रयागराज कमिश्नरेट संग प्रतापगढ़ फिसड्डी

गृह विभाग के इंवेस्टिगेशन ट्रैकिंग सिस्टम फॉर सेक्सुअल ऑफेंस (आईटीएसएसओ) पोर्टल की रिपोर्ट के अनुसार प्रयागराज कमिश्नरेट का कॉम्प्लाएंस रेट क्रमश- 80.48 प्रतिशत है। वहीं प्रतापगढ़ का कॉम्प्लाएंस रेट 84.31 प्रतिशत, कानपुर देहात का 85.37 प्रतिशत और चित्रकूट का 86.27 प्रतिशत है। इस पर सीएम योगी ने बेहद नाराजगी जाहिर की है। सीएम ने इन जिलों के अधिकारियों को जीरो टॉलरेंस नीति के तहत अपराधों पर लगाम लगाने के साथ दर्ज मामलों में कम से कम समय में आरोपियों को सजा दिलाने के निर्देश दिये हैं। इसी तरह बरेली में महिला अपराध संबंधी 2997 एफआईआर दर्ज की गई। इनमें से 8 मामलों की फाइनल रिपोर्ट पेंडिंग है, जिसका रेश्यो 0.27 प्रतिशत है। अलीगढ़ में 1910 एफआईआर दर्ज की गई। इनमें से 6 मामलों की फाइनल रिपोर्ट पेंडिंग है, जिसका रेश्यो 0.31 प्रतिशत है। सुल्तानपुर में 952 एफआईआर दर्ज की गई। इनमें से 3 मामलों की फाइनल रिपोर्ट पेंडिंग है, जिसका रेश्यो 0.32 प्रतिशत है। फतेहगढ़ में 767 एफआईआर दर्ज की गई। इनमें से 2 मामलों की फाइनल रिपोर्ट पेंडिंग है, जिसका रेश्यो 0.26 प्रतिशत है। सीएम योगी ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि प्राथमिकता के आधार पर पेंडिंग मामलों का निस्तारण किया जाए। उन्होंने इसको लेकर वह एक माह बाद भी समीक्षा करेंगे अगर स्थिति संतोषजनक नहीं मिली तो बेपरवाह अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लिया जाएगा। अमरोहा में महिला अपराध संबंधी 1142 एफआईआर दर्ज की गई। इनमें से 1117 मामलों में फाइनल रिपोर्ट समिट की गई। इसका डिस्पोजल रेट 97.81 प्रतिशत है। बाराबंकी में 1580 एफआईआर दर्ज की गई। इनमें से 1549 मामलों में फाइनल रिपोर्ट समिट की गई। इसका डिस्पोजल रेट 98.04 प्रतिशत है। लखनऊ कमिश्नरेट में 2686 एफआईआर दर्ज की गई।

विवि खोलकर मदरसों को उनसे संबद्ध करेंगे : राजभर

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने प्रदेश में मदरसों की मान्यता की नई व्यवस्था शुरू किए जाने की तैयारी के संकेत देते हुए कहा कि दो विश्वविद्यालय खोलकर मदरसों को उनसे संबद्ध किया जाएगा। हालांकि, देश में मुसलमानों के सबसे बड़े सामाजिक संगठन जमीयत उलमा-ए-हिंद का कहना है कि सरकार ऐसा कोई भी कदम उठाने से पहले सभी पक्षकारों से बातचीत करे और यह सुनिश्चित करे कि इससे अल्पसंख्यकों के संवैधानिक अधिकारों का हनन नहीं होगा।

राजभर ने कहा, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग से जो पत्र आया है, उसमें कहा गया है कि ऐसे मदरसे जो बच्चों को पढ़ा तो रहे हैं, लेकिन उनके पास बच्चों को शैक्षणिक प्रमाणपत्र देने की मान्यता नहीं है, उनमें पढ़ने वाले बच्चों को निकालकर सरकारी परिषदीय स्कूलों में दाखिल कराया जाए। (पत्र में) बस इतना ही है। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने इसी साल सात जून को राज्य सरकार को एक पत्र लिखा था। प्रदेश के तत्कालीन मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा ने पिछली 26 जून को आयोग के इस पत्र का हवाला देते हुए एक आदेश जारी किया था, जिसमें प्रदेश के सरकारी अनुदान प्राप्त मदरसों में पढ़ने वाले गैर-मुस्लिम बच्चों और गैर-मान्यता प्राप्त मदरसों के सभी बच्चों को निकालकर परिषदीय स्कूलों में दाखिल कराने के निर्देश दिए गए थे। हालांकि, यह मामला उच्चतम न्यायालय पहुंचा था, जिसने इन आदेशों पर फिलहाल रोक लगा दी थी।

अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री राजभर ने प्रदेश के मदरसों की मान्यता की नई व्यवस्था शुरू किए जाने की तैयारी की तरफ इशारा करते हुए कहा, हमारा प्रयास है कि हम दो विश्वविद्यालय खोलें। हम राज्य मदरसा शिक्षा बोर्ड को विवि से संबद्ध करना चाहते हैं और वहीं (विश्वविद्यालय से) सभी मदरसों को मान्यता दे दी जाएगी, ताकि भविष्य में कोई विवाद न हो। राजभर ने उदाहरण देते हुए कहा, लविवि, पूर्वांचल विवि, शकुंतला विवि आपके सामने हैं, जहां से तमाम विद्यालय संचालित होते हैं। इस तरह विश्वविद्यालय से अगर मदरसे संचालित होते, तो आज यह दुर्गति न होती। इस काम को न तो सपा कर पाई, न कांग्रेस कर पाई और न ही बसपा।

मालूम हो कि वर्तमान व्यवस्था में प्रदेश के मदरसों को उत्तर प्रदेश राज्य मदरसा शिक्षा बोर्ड ही मान्यता देता है। इस बीच, जमीयत उलमा-ए-हिंद के कानूनी सलाहकार मौलाना काब रशीदी ने कहा कि सरकार अगर मदरसों को मान्यता देने की व्यवस्था में बदलाव करने जा रही है, तो इस पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन उससे पहले उसे जमीयत उलमा-ए-हिंद, नदवतुल उलमा और दारूल उलूम देवबंद समेत सभी पक्षों से बात करनी चाहिए।

रशीदी ने यह भी कहा, संविधान में अल्पसंख्यकों को अपने शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना करने और उन्हें संचालित करने का अधिकार दिया गया है। राज्य सरकार मदरसों की मान्यता के सिलसिले में जो व्यवस्था करने जा रही है, उसमें इस बात का खास ख्याल रखा जाना चाहिए कि अल्पसंख्यकों के संवैधानिक अधिकारों की हर हाल में रक्षा हो। उधर, उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. इफ्तिखार अहमद जावेद ने कहा, राज्य सरकार मदरसों के बारे में इतना बड़ा कदम उठाने जा रही है मगर इस बारे में बोर्ड को कोई जानकारी ही नहीं है। किसी शिक्षा परिषद को विश्वविद्यालय से संबद्ध किया जाएगा, ऐसी बात पहले कभी देखी-सुनी नहीं गई है।

हाईटेक होंगे प्रदेश के धान क्रय केंद्र

● इलेक्ट्रॉनिक कांटा, नमी मापने की मशीन जनरेटर, बैटरी की होगी व्यवस्था ●पश्चिमी यूपी में 15 सितंबर से पहले और पूर्वी यूपी में 15 अक्टूबर से पहले सुदृढ़ होगी क्रय केंद्रों की व्यवस्था

लखनऊ। प्रदेश के किसानों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए संकल्पित योगी सरकार खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 के तहत धान खरीद की तैयारियों में जुट गई है। वहीं अब प्रदेश के धान खरीद केंद्रों को भी हाईटेक बनाने पर मुख्यमंत्री का पूरा जोर है। सीएम के निर्देश पर खाद्य एवं रसद विभाग धान क्रय केंद्रों को इंटरनेट, कंप्यूटर, लैपटॉप, आईपैड, ई-पॉप मशीनों से लैस करेगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 1 अक्टूबर से तथा पूर्वी यूपी में 1 नवंबर से क्रय केंद्रों पर एमएसपी पर धान की खरीद शुरू होगी।

खाद्य एवं रसद विभाग के प्रमुख सचिव आलोक कुमार ने बताया कि सभी अधिकारियों को निर्देश दिये गये हैं कि ई-उपार्जन के लिए क्रय केंद्रों पर कम्प्यूटर, लैपटॉप, आई पैड, इंटरनेट और ई-पॉप मशीन सहित अन्य अवश्यक उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। संचालन में आने वाली कठिनाइयों को पश्चिमी यूपी में 15 सितंबर और पूर्वी यूपी में 15 अक्टूबर से पहले ही दूर कर ली जाए। बोरे की उपलब्धता, स्टाफ की तैनाती, किसानों की सुविधा की व्यवस्था, इलेक्ट्रॉनिक कांटा, छनना, नमी मापने की मशीन, जनरेटर, बैनर की व्यवस्था और धान व चावल के गुणवत्ता परीक्षण के लिए उपकरण की व्यवस्था की समर पर कर ली जाए। मूल्य समर्थन योजना के तहत 1 अक्टूबर से पश्चिमी यूपी और 1 नवंबर से पूर्वी यूपी के जिलों में किसानों से सीधे धान की खरीद शुरू करने के निर्देश दिये हैं। खाद्य एवं रसद विभाग द्वारा आवश्यक समय सारिणी जारी की जा चुकी है। ई-टेंडर के माध्यम से हैंडलिंग ठेकेदारों की नियुक्ति, परिवहन के लिए ई टेंडरिंग के जरिए ठेकेदारों की नियुक्ति भी समय से करने के निर्देश दिये गये।

बांग्लादेश के हिंदू शरणार्थियों को बॉर्डर पर घुसने नहीं दे रही मोदी सरकार: अजय राय

लखनऊ। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि धर्म को अपनी सियासत का आधार बना कर सिर्फ वैमनस्यता फैलाने का काम योगी करते हैं। बांग्लादेश के मुद्दे पर जिस तरह की स्तरहीन बयानबाजी वो कर रहे हैं वो निहायत निंदनीय है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि भाजपा सरकार निहायत झूठी है, बॉर्डर पर आने वाले हिन्दू शरणार्थियों को घुसने नहीं दिया जा रहा और यहां योगी सीना पीट-पीट कर चिल्ला रहे हैं कि हम हिन्दुओं की रक्षा करेंगे। श्री राय ने कहा कि सरकार द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में संपूर्ण विपक्ष ने एक स्वर में सरकार को इस मुद्दे पर अपना समर्थन दिया था। नेता प्रतिपक्ष श्री राहुल गांधी जी ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों पर चिंता जताते हुए सरकार से पूछा था कि भारत सरकार इसे रोकने के लिए क्या कर रही है? प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि योगी जी केन्द्र में अपनी सरकार से सवाल करने के बजाय यहां उ0प्र0 में बंग्लादेश की आड़ में वोट लेने के लिए धार्मिक विद्वेष फैला रहे हैं। राय ने कहा कि पड़ोस में हुए इतने दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम पर बुलाई गई सर्वदलिय बैठक में खुद प्रधानमंत्री जी शामिल नही हुए। इससे इस गंभीर मसले पर और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर प्रधानमंत्री की संवेदनहीनता का पता चलता है। राय ने योगी जी को ताकीद किया की ऐसे संवेदनशील मामले पर अगंभीर और गैर जिम्मेदाराना बयानबाजी से बचना चाहिए।

'आरक्षण' के प्रावधानों को बदलने की आवश्यकता नही: अखिलेश

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी भी प्रकार के आरक्षण का मूल उद्देश्य उपेक्षित समाज का सशक्तीकरण होना चाहिए, न कि उस समाज का विभाजन या विघटन, इससे आरक्षण के मूल सिद्धांत की ही अवहेलना होती है। अखिलेश ने कहा कि अनगिनत पीढ़ियों से चले आ रहे भेदभाव और मौकों की गैर-बराबरी की खाई चंद पीढ़ियों में आए परिवर्तनों से पाटी नहीं जा सकती। 'आरक्षण' शोषित, वंचित समाज को सशक्त और सबल करने का सांविधानिक मार्ग है, इसी से बदलाव आएगा, इसके प्रावधानों को बदलने की आवश्यकता नहीं है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा सरकार हर बार अपने गोलमोल बयानों और मुक़दमों के माध्यम से आरक्षण की लड़ाई को कमज़ोर करने की कोशिश करती है, फिर जब पीडीए के विभिन्न घटकों का दबाव पड़ता है, तो दिखावटी सहानुभूति दिखाकर पीछे हटने का नाटक करती है। भाजपा की अंदरूनी सोच सदैव आरक्षण विरोधी रही है। इसीलिए भाजपा पर से 90प्रतिषत पीडीए समाज का भरोसा लगातार गिरता जा रहा है। आरक्षण के मुद्दे पर भाजपा की विश्वसनीयता शून्य हो चुकी है। पीडीए के लिए 'संविधान' संजीवनी है, तो 'आरक्षण' प्राणवायु।

सिल्क का अंगवस्त्र पहनाकर किया अभिनंदन

लखनऊ। केरल समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. साजी पोथन थमस ने आज समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव का सिल्क का अंगवस्त्र पहनाकर अभिनंदन किया। डॉ. थामस ने श्री अखिलेश यादव को दिसम्बर 2024 में केरल यात्रा के लिए आमंत्रित किया और बताया कि केरल राज्य में समाजवादी पार्टी के लिए बड़ी संभावना है। समाजवादी पार्टी पंचायत चुनावों में हिस्सा लेने के लिए तैयार है।

उपचुनाव में जीते संजय पासवान ने सपा मुखिया अखिलेश से की मुलाकात

● भाजपा के अन्याय व अत्याचार से जनता ऊब चुकी है: सपा प्रमुख

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से रविवार को गोरखपुर जिला पंचायत के वार्ड संख्या 43 में हुए उपचुनाव में जीतने पर संजय पासवान ने भेंट कर आशीर्वाद लिया। अखिलेश यादव ने संजय पासवान को जीत की बधाई देते हुए भरोसा दिलाया कि जीत का यह सिलसिला 2027 के विधानसभा चुनावों में राज्य में समाजवादी सरकार बनने तक जारी रहेगा। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष गोरखपुर ब्रजेश कुमार गौतम, अध्यक्ष चिल्लूपार विधानसभा श्री अमरजीत यादव, जर्नादन प्रधान, हरेन्द्र यादव भी मौजूद रहे।

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा के अन्याय, अत्याचार से जनता ऊब चुकी है। जनता भाजपा सरकार को एक पल भी नहीं देखना चाहती है। भाजपा कुछ भी कर ले, जनता ने इस सरकार को हटाने का मन बना लिया है। 2027 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी। अखिलेश यादव ने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था ध्वस्त है। सत्र्रा के अहंकार में भाजपा समर्थक अराजकता पर उतारू है। निर्दोष और निरीह जनता पर अत्याचार कर रहे है। भाजपाई कानून व्यवस्था के लिए संकट बन गये हैं। भ्रष्टाचार चरम पर है। बजट का बंदरबांट हो रहा है। जनता की कोई सुनवाई नहीं है। किसी को न्याय नहीं मिल रहा है। भाजपा सरकार से अब जनता को कोई उम्मीद नहीं है। प्रदेश की जनता समाजवादी पार्टी की ओर आशा भरी निगाहों से देख रही है। भाजपा लाख साजिश कर ले, लेकिन इस बार जनता भाजपा को सत्ता से बाहर करके ही दम लेगी।

अखिल भारतीय छात्र संगठन एनएसयूआई मध्य जोन के पदाधिकारियों की बैठक आयोजित

लखनऊ। अखिल भारतीय छात्र संगठन एनएसयूआई मध्यजोन के पदाधिकारियों की एक महत्वपूर्ण बैठक लखनऊ के रकाबगंज स्थित आरके पैलेस में एन.एस.यू.आई. मध्यजोन के अध्यक्ष अनस रहमान की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय तथा प्रदेश उपाध्यक्ष विश्वविजय सिंह जी भी मौजूद रहे। बैठक में उपस्थित एन.एस.यू.आई. कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय ने कहा कि आप आगे बढ़कर संघर्ष करो मेरा पूरा सहयोग और आर्शीवाद आपके साथ है। उन्होंने कहा कि आज देश और प्रदेश की भाजपा सरकारों में छात्रों का दमन हो रहा है। राय ने कहा कि यह लीक वाली सरकार है। हर जगह लीक-लीक-लीक। कहीं पर्चा लीक, कहीं सदन लीक, और तो और मंदिर गर्भगृह में भी लीक। इस लीक को रोकने के लिए मज़बूती से लड़ने की ज़रूरत है। राय ने कहा कि छात्र संगठनों के चुनाव पुन: बहाल किये जाने चाहिए इससे छात्रों में नेतृत्व करने की क्षमता विकसित होती है एवं गलत के विरोध के एक संगठित बल मिलता है।बैठक में एन.एस.यू.आई के पदाधिकारी आकाश अवस्थी, राशि साहू, आर्यन मिश्रा, लालू कनौजिया, दिव्यांश शुक्ला, सुधांशु शर्मा, अंशुल यादव, फरीद हुसैन, आफताब जाफरी आदि पदाधिकारी शामिल रहे।

चौथे सोमवार को शिवभक्तों को होगा बाबा विश्वनाथ का अलौकिक दर्शन

लखनऊ/वाराणसी। योगी सरकार कांवड़ियों और भोले के भक्तों के लिए न केवल रेड कारपेट बिछाकर पुष्प वर्षा कर रही है, बल्कि उनकी सुविधा और सुगम दर्शन का पूरा ध्यान भी रख रही है। सोमवार को सावन माह का चौथा सोमवार है, इसे लेकर सारी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। पिछले सोमवार को 3 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने श्रीकाशी विश्वनाथ के ज्योतिर्लिंग का दर्शन किया था। चौथे सोमवार पर भी लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। इसके साथ ही मंदिर ट्रस्ट की ओर से काशी पुराधिपति बाबा विश्वनाथ के रुद्राक्ष श्रृंगार की तैयारियां भी पूरी हो चुकी हैं। महादेव के भक्त बाबा के इस अलौकिक स्वरूप का दर्शन पाएंगे। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में श्रावण माह के हर सोमवार को देवाधिदेव महादेव के अलग-अलग स्वरूप का श्रृंगार किया जा रहा है। इस वर्ष सावन में पांच सोमवार पड़ रहे हैं। बाबा हर सोमवार को अपने अलग-अलग स्वरूपों में भक्तों को दर्शन दे रहे हैं। औघड़दानी का सबसे प्रिय महीना श्रावण माह माना जाता है। श्रावण माह के सोमवार को बाबा के दर्शन का विशेष फल व पुण्य मिलता है। अबतक देवाधिदेव महादेव बाबा विश्वनाथ के तीन स्वरूपों में दर्शन पाकर भक्तों निहाल हो चुके हैं। शिव भक्त सावन के चौथे सोमवार को बाबा के विशेष स्वरूप का दर्शन कर पाएंगे। चौथे सोमवार को देवाधिदेव महादेव का श्रृंगार रुद्राक्ष से किया जाएगा। इससे पहले श्रावण माह में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में पिछले तीन सोमवार को बाबा विश्वनाथ का अलग अलग ढंग से श्रृंगार हो चुका है। पहले सोमवार को चल प्रतिमा स्वरूप, दूसरे सोमवार को गौरी शंकर (शंकर-पार्वती) स्वरूप, तीसरे सोमवार को अर्धनारीश्वर स्वरूप में श्रृंगार हो चुका है। वहीं श्रावण के पांचवें व अंतिम सोमवार 19 अगस्त को बाबा का शंकर, पार्वती, गणेश श्रृंगार एवं श्रावण पूर्णिमा पर वार्षिक झूला श्रृंगार होगा। उल्लेखनीय है कि सावन माह में काशी आने वाले शिवभक्तों की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जा रहा है। वहीं गंगा के जलस्तर के बढ़ने से विश्वनाथ धाम पहुंचने के चार में से तीन द्वारों से प्रवेश संभव नहीं है। इसके बाद चौथे प्रवेश द्वार पर सोमवार को ज्यादा भीड़ होने की संभावना है। इसे लेकर मंदिर प्रशासन के साथ ही जिला और पुलिस प्रशासन ने तैयारियों को अंतिम रूप से परख लिया है।

यूपी में पर्यटन सेक्टर को पांच गुना बढ़ाएगी योगी सरकार

● 80 करोड़ से अधिक पर्यटकों को उत्तर प्रदेश में लाने का प्रयास

●गेस्ट हाउस और राही बंगलों का कायाकल्प करने की तैयारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

योगी सरकार का पूरा जोर प्रदेश में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने पर है। पर्यटन स्थलों का कायाकल्प करके कनेक्टिविटी के लिए ट्रांसपोर्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर को बीते साढ़े सात साल में सुदृढ़ किया गया है। यही वजह है कि बीते वर्ष 2023 में प्रदेश में 48 करोड़ से अधिक पर्यटक यूपी को एक्सप्लोर करने आए। योगी सरकार अब प्रदेश में पर्यटन सेक्टर को पांच गुना बढ़ाने के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रही है। पर्यटन सेक्टर का ग्रॉस वैल्यू ऐडेड (जीवीए) जहां वित्त वर्ष 2016-17 में 11 हजार करोड़ रुपए का था, वहीं इसे वित्त वर्ष 2028 तक 70 हजार करोड़ रुपए करने का लक्ष्य सरकार लेकर चल रही है। इसके अलावा सरकार का लक्ष्य वित्त वर्ष 2028 तक यूपी में 80 करोड़ से अधिक पर्यटकों को लाने पर भी है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा है कि प्रदेश के औद्योगिक विकास के साथ ही राज्य में पर्यटन गतिविधियों को और अधिक बढ़ाया जाए। धार्मिक दृष्टि से प्रदेश में कई महत्वपूर्ण स्थल हैं, जहां प्रतिदिन लाखों यात्रियों का आगमन हो रहा है। काशी, अयोध्या, मथुरा, चित्रकूट, प्रयागराज, नैमिषारण्य, गोरखपुर जैसे धार्मिक महत्व वाले शहरों में विगत साढ़े सात साल में पर्यटन गतिविधियां अप्रत्याशित रूप से बढ़ी हैं। इन शहरों में विश्वस्तरीय सुविधाओं के विकास के साथ ही सरकार का ध्यान यहां आने वाले पर्यटकों को एक से अधिक डेस्टिनेशन्स तक ले जाने की है। इसके अलावा पर्यटकों को स्थानीय उत्पादों को खरीदने के लिए प्रेरित करने के लिए ओडीओपी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो गई है। यही नहीं प्रदेश में पर्यटकों के ठहरने के लिए नये होटल, गेस्ट हाउस और होमस्टे की संख्या बढ़ाने पर भी सरकार का पूरा जोर है। इसके साथ ही सरकारी टूरिस्ट बंग्लो और राही बंग्लो के कायाकल्प का भी प्लान है।

योगी सरकार में पर्यटन सेक्टर में हुई बढ़ोतरी की बात की जाए तो वित्त वर्ष 2016-17 में इसकी ग्रॉस वैल्यू एडेड (जीवीए) 11 हजार करोड़ रुपए थी, वहीं वित्त वर्ष 2022-23 में यह बढ़कर 14 हजार करोड़ रुपए हो गई। सरकार का लक्ष्य वित्त वर्ष 2027-28 तक इसे 70 हजार करोड़ रुपए तक ले जाने का है। वहीं टूरिस्ट फुटफॉल में भी बड़ा इजाफा हुआ है। वित्त वर्ष 2016-17 तक प्रदेश में 23 करोड़ पर्यटक आए थे तो वहीं वर्ष 2023-24 में ये आंकड़ा 48 करोड़ से अधिक पहुंच गया। टूरिस्ट फुटफॉल में 51 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है, जबकि सरकार का ध्यान वित्त वर्ष 2028 तक 80 करोड़ से अधिक पर्यटकों को यूपी लाने का है। सरकार पर्यटन से जुड़े स्थानों को मोनेटाइज करने पर भी बल दे रही है। इसके अलावा विश्वस्तरीय सुविधाओं का विकास और पर्यटन सुविधाओं की ब्रांडिंग और प्रमोशन पर भी सरकार का पूरा ध्यान है।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो का दूसरा संस्करण 25 से 29 सितंबर तक

● मुख्यमंत्री ने की ट्रेड शो आयोजन के तैयारियों की समीक्षा ● पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ट्रेड शो में भाग लेने आ रहे 66 से अधिक देशों के खरीदार 2500 एक्ज़िबिटर्स करा चुके पंजीयन

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के क्राफ्ट, कुज़ीन और कल्चर से दुनिया भर के उद्यमियों, विनिर्माताओं और व्यापारियों को परिचित कराने वाले महत्वपूर्ण आयोजन उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय व्यापार प्रदर्शनी के दूसरे संस्करण का आयोजन आगामी 25 से 29 सितंबर तक होगा। इंडिया एक्सपोज़िशन मार्ट, ग्रेटर नोएडा के विशाल परिसर में आयोजित होने जा रहे इस महत्वपूर्ण आयोजन की तैयारियों की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो का पहला संस्करण 21 से 25 सितंबर 2023 तक आयोजित किया गया था। जिसमें 2,000 एक्ज़िबिटर और 60 देशों से आए 500 से अधिक तथा देश के विभिन्न प्रान्तों से आए 70 हजार से अधिक खरीददारों सहित 03 लाख से अधिक लोगों की सहभागिता हुई थी। इस दौरान 01 लाख से अधिक नए व्यापारिक सूत्रों का उद्भव देखने को मिला था। 2023 में पहला प्रयास आशातीत सफलता दिलाने वाला रहा, अब इस वर्ष शो की थीम %सोर्सिंग का अद्वितीय मंच% रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय ट्रेड शो के माध्यम से पूरी दुनिया उत्तर प्रदेश के अद्भुत %क्राफ्ट, कुज़ीन और कल्चर% से साक्षात्कार करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अंतरराष्ट्रीय ट्रेड शो, उत्तर प्रदेश के बड़े उद्योगों, आईटी/आईटीईएस, एमएसएमई, स्टार्टअप, शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, पर्यटन व संस्कृति, ऊर्जा, ओडीओपी जैसे सेक्टरों के उद्यमियों,

आंत्रप्रेन्योर, विनिर्माताओं और निर्यातकों के लिए वैश्विक मंच उपलब्ध कराने की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने जा रहा है। इसे भव्य स्वरूप देने में कोई कसर न रखी जाए। ट्रेड शो में अब तक 2500 से अधिक एक्ज़िबिटर्स का पंजीयन पर प्रसन्नता जताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि ट्रेड शो के सफल आयोजन में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय, वाणिज्य मंत्रालय, उद्योग प्रोत्साहन एवं आंतरिक व्यापार विभाग और एमएसएमई मंत्रालय की ओर से अपेक्षित सहयोग मिल रहा है। अधिकाधिक देशों में तैनात भारतीय राजदूतों/उच्चायुक्तों से लगातार संवाद बनाते हुए और अधिक विदेशी खरीदारों, उद्यमियों, कंपनियों को आमंत्रित किया जाए। यह मल्टीसेक्टोरल ट्रेड शो हमारे स्थानीय उद्यमियों, उत्पाद और शिल्प को वैश्विक बाजार उपलब्ध कराने में बड़ा सहायक बनने जा रहा है। मुख्यमंत्री को अवगत कराया गया कि इस वर्ष ट्रेड शो में %वियतनाम% पार्टनर कंट्री के रूप में सहयोग कर रहा है। ट्रेड शो में वियतनाम का प्रतिनिधिमंडल उपस्थित होगा। वियतनाम के उच्चकोटि के उत्पाद ट्रेड शो में प्रदर्शित किए जाएंगे। साथ ही, वियतनाम का सांस्कृतिक मंडली का प्रदर्शन भी किया जाएगा। आगंतुकों को वियतनाम और भारतीय व्यंजनों का लुत्फ भी मिल सकेगा। ट्रेड शो को भव्य बनाने पर बल देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 05 दिवसीय इस महत्वपूर्ण ट्रेड शो के दौरान हर दिन एक विशेष थीम पर नॉलेज सेशन भी आयोजित किए जाएं।

इरडा के सहयोग से बीमा सेक्टर पर सत्र आयोजित किया जाए, इसी प्रकार, नवाचार और स्टार्टअप को लेकर प्रदेश में हुए प्रयासों पर केंद्रित विशेष सत्र आयोजित हों। विशेष सत्रों में केंद्रीय मंत्रीगणों को आमंत्रित किया जाना चाहिए। ट्रेड शो में खादी केंद्रित फैशन शो भी आयोजित होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी 05 दिन उत्तर प्रदेश की कला संस्कृति को प्रदर्शित करती हुई सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी कराई जाएं, साथ ही सभी के लिए उत्तर प्रदेश के जायकेदार व्यंजनों से परिचय कराते विशेष स्टॉल लगाए जाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के विभिन्न राज्यों के साथ-साथ अनेक देशों से लोग इस आयोजन के प्रति उत्साहित हैं और प्रतिभाग करने आ रहे हैं। ऐसे में इसकी महत्ता के दृष्टिगत आयोजन में सभी विभागों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न राज्यों में रोड शो आयोजित किए जा सकते हैं। मुख्यमंत्री ने उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत युवाओं को ट्रेड शो भ्रमण कराने की व्यवस्था के भी निर्देश दिए। बैठक में मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी गौतमबुद्ध नगर, पुलिस कमिश्नर, ग्रेटर नोएडा औद्योगिक प्राधिकरण के सीईओ से गणमान्य जनों, अतिथियों, उद्यमियों, शिल्पकारों के आवागमन, सुरक्षा व अन्य सुविधाओं के दृष्टिगत सभी प्रबंध करने के निर्देश दिए।

उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चो ने हजरतगंज कोतवाली का किया भ्रमण

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल की प्रेरणा से रविवार को राजभवन स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चो ने कोतवाली हजरतगंज, महिला थाना, व पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ का विद्यालय की प्रधानाचार्य उषा आर्य के नेतृत्व में भ्रमण किया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने हजरतगंज कोतवाली तथा महिला थाना में बंदी गृह और कार्यालय को देखा तथा उसकी कार्य प्रणाली व अभिलेखों के रखरखाव की जानकारी प्राप्त की। बच्चो के इस भ्रमण कार्यक्रम में सब इंस्पेक्टर संतोष सिंह तथा पी एस ओ सुशील तिवारी भी मौजूद रहे। ज्ञातव्य है कि उक्त दोनों पुलिस अधिकारियों के नेतृत्व में बच्चे स्वतंत्रता दिवस समारोह परेड की तैयारी कर रहे हैं।

खुनखुन जी में शुरू होगा महिला स्वास्थ्य और कल्याण पर कोर्स

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शैक्षणिक सत्र 2024-25 में खुन खुन जी गर्ल्स पीजी कॉलेज के शिक्षाशास्त्र और मनोविज्ञान विभाग द्वारा महिला स्वास्थ्य और कल्याण शिक्षा विषय पर मूल्य-वर्धित पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है। इस नए मूल्य-वर्धित पाठ्यक्रम द्वारा छात्राओं को स्वस्थ शरीर एवं प्रसन्नता युक्त जीवन शैली बनाए रखने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करने का प्रयास किया गया है। कालेज की प्राचार्या डॉ. अंशु केडिया ने बताया कि गत 29 जुलाई को राज्यपाल भवन में सर्वाइकल और ब्रेस्ट कैंसर पर आयोजित कार्यक्रम में महामहिम ने अपेक्षा की थी उच्च शिक्षण संस्थानों को स्वास्थ्य विषयक जानकारी संबंधित कोर्स डिजाइन करके छात्राओं को पढ़ाना चाहिए। महाविद्यालयप का प्रयास है कि प्रवेश लेने वाली प्रत्येक छात्रा नियमित विषय ज्ञान के अतिरिक्त उस ज्ञान को भी अर्जित करे, जो उसके भावी जीवन मे करियर के साथ साथ बेहद जरूरी है। पिछले सत्र में महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग द्वारा महिला और कानून विषय पर वैल्यू ऐडेड कोर्स प्रारंभ किया था, जो सफ़लता पूर्वक संचालित भी हुआ। यह कोर्स इस सत्र भी जारी रहेगा। महाविद्यालय का मानना है कि विषय ज्ञान संबंधित कोर्स के साथ ही कानूनी ज्ञान एवं स्वास्थ्य से जुड़ा कोर्स निस्संदेह छात्राओं के सर्वांगीण विकास में सहयोग करेगा।

इन विषयों पर होगा केन्द्रित

- अवधारणा
- शारीरिक बनावट एवं प्रक्रियाएं
- स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक जरूरतें- भोजन और व्यायाम
- महिलाओं से जुड़ी बीमारियां
- जीवनशैली से जुड़ी व्याधियां
- मानसिक स्वास्थ्य एवं बीमारियां
- व्याधि निवारण के प्रयास

भाजपा ने स्वच्छता अभियान चलाकर आंबेडकर की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

लखनऊ। भाजपा लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने आज महापुरुषों की प्रतिमाओ और आसपास के स्थलो पर चलाए जाने वाले स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए मौनी बाबा मंदिर के पास महात्मा गांधी एवं आलमबाग बस स्टैंड के पास डॉक्टर भीमराव आंबेडकर की मूर्ति व स्थल की साफ-सफाई करके माल्यार्पण किया। महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी के नेतृत्व में लखनऊ महानगर में 14 अगस्त तक 60 से अधिक महापुरुषों की प्रतिमा एवं स्मारकों के आस-पास स्वच्छता का कार्यक्रम चलाया जाएगा एवं अमर बलिदानियों, व महापुरूषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण करके पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता व जनप्रतिनिधि स्मरण करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे।

लोहिया संस्थान में स्टोमा प्रबंधन पर कार्यशाला का आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डॉ राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के गैस्ट्रो सर्जरी विभाग द्वारा संस्थान के सर्जरी विभाग की नर्सों के लिए स्टॉमा प्रबंधन पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन रविवार को कोलो प्लास्टिअकादमी के सहयोग के साथ किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रो (डॉ) सीएम सिंह ने किया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए निदेशक ने कहा स्टामा प्रबंधन आज के समय की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की विशिष्ट कार्यशालाओं के आयोजन से संस्थान में आने वाले मरीजों को गुणवत्ता पूर्वक नर्सिंग केयर मिलता है वहीं दूसरी ओर संस्थान का नाम भी आम जनमानस में गुणवत्ता परक सेवा देने हेतु जाना जाता है। गैस्ट्रोसर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो अंशुमन पांडेय ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा स्टोमा उन मरीजों में बनाया जाता है। जिनमें आंतों के विकार के कारण माल या पेशाब करने में दिक्कत होती है। इस कार्यशाला का उद्देश्य संस्थान की

उपचारिकाओं को स्टोमा प्रबंधन में दक्ष करना है जिससे कि वह मरीजों की सही देखभाल कर सकें, साथ ही उनको अपने स्तर से सही परामर्श (काउंसलिंग) प्रदान कर सकें। डा. राशु कुरेले, क्लिनिकल मैनेजर,कोलोप्लास्ट अकादमी ने कार्यशाला में आए प्रतिभागियों को स्टोमा प्रबंधन पर प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में संस्थान के विभिन्न विभागो जैसे की जनरल सर्जरी, गैस्ट्रो सर्जरी, यूरोलॉजी, रेडिएशन ऑंकोलॉजी और सर्जिकल ऑंकोलॉजी से कुल 18 उपचारिकाओं ने प्रतिभाग किया।

सीएम आवास के समक्ष आत्महत्या करने वाली महिला की मौत

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

पिछले पूर्व सीएम आवास के समीप पारिवारिक कारणों से आग लगाकर आत्महत्या करने वाली महिला की रविवार को केजीएमयू में इलाज के दौरान मौत हो गयी है। संस्थान के प्रवक्ता डॉ. सुधीर सिंह के अनुसार महिला 85 फीसद जली थी और सेप्टिक शॉक व और मल्टीपल ऑर्गन डिस्फंक्शन सिंड्रोम के चलते मौत हो गयी।

उन्नाव के पुरवा थानाक्षेत्र के छत्ता खेड़ा गांव निवासी अंजलि जाटव ने बीते 6 अगस्त को पारिवारिक विवाद के चलते सीएम आवास के पास आग लगा ली थी। सीएम आवास के करीब हुई घटना के बाद महिला को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जिसके बाद बेहतर इलाज के लिए अगले दिन पुलिस ने महिला को केजीएमयू में भर्ती कराया था। जहां उपचार के दौरान आज अपरान्ह एक बजकर 10 मिनट बजे के करीब उसने दम तोड़ दिया। बता दें कि उन्नाव के पुरवा थानाक्षेत्र के छत्ता खेड़ा गांव में रहने वाली अंजली जाटव पत्नी देशराज को उसके ससुरालीजन मारने पीटने के साथ ही प्रताड़ित करते थे, जिसकी शिकायत अंजलि ने पुरवा पुलिस से की।

इधर अंजलि की तहरीर पर पुलिस ने ससुरालियों के खिलाफ मारपीट और प्रताड़ित करने की धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की। जिसके बाद सोमवार को महिला के पति और देवर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। इसके बावजूद ससुरालीजन उसे प्रताड़ित कर रहे थे। जिससे परेशान होकर मंगलवार को वह लखनऊ सीएम आवास के बाहर अपने मासूम बच्चे को गोद में लेकर पहुंची।

जहां उसने बैग में रखी पेट्रोल की बोतल निकाली और खुद पर छिड़कने के बाद आग लगा ली। यह देख वहां मौजूद पुलिस कर्मियों में हड़कंप मच गया। आसपास के पुलिसकर्मी जब तक कुछ समझ पाते तब तक महिला बुरी तरह से आग की चपेट में आ गई। बमुश्किल पुलिसकर्मियों ने महिला पर कंबल डालकर आग बुझाई जा सकती थी, तब तक महिला 70 से 80 पीसदी जल चुकी थी। महिला की आग बुझी तो वह रो-रोकर चिल्लाने लगी थी और खुद को बचाने की गुहार लगाते हुए वह बार-बार अपने बच्चे की तरफ देख रही थी। पुलिस तुरंत महिला को सिविल अस्पताल और वहां से केजीएमयू ले गई, जहां रविवार को इलाज के दौरान उस महिला की मौत हो गयी है

नगर निगम व स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त टीम ने बांटे क्लोरी व ओआरए के पैकेट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बरसात के बाद फैलने वाले रोगों पर रोक लगाने के लिए अपर मुख्य चिकित्साधिकारी, उप मुख्य चिकित्साधिकारी और नगर निगम टीम द्वारा डालीगंज के कुतुबपुर क्षेत्र का दौरा किया गया। एएनएम एवं आशाओं द्वारा ओआरएस के पैकेट एवं क्लोरीन की गोलियों का वितरण किया गया। नगर निगम द्वारा क्षेत्र में साफ सफ ई एवं ब्लीचिंग पाउण्डर का छिडकाव किया गया। मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा अधीक्षिका, नगरीय सीएचसी सिल्वर जुबली को क्षेत्र में 24 घंटे निगरानी रखने के निर्देश दिए गए। मुख्य चिकित्साधिकारी डाक्टर मनोज अग्रवाल के निर्देशानुसार रविवार को अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डा एमएच सिद्दीकी, डा निशान्त निर्वाण, उप मुख्य चिकित्साधिकारी, लखनऊ एवं डा0 प्रियंका यादव, अधीक्षिका, नगरीय सीएचसी सिल्वर जुबली और स्वास्थ्य विभाग एवं नगर निगम की संयुक्त टीम ने डालीगंज के कुतुबपुर क्षेत्र का दौरा किया। जानकारी करने पर पता चला कि एक मरीज सिविल चिकित्सालय में भर्ती होकर अपना उपचार करा रही है। इस दौरान एएनएम एवं आशाओं ने ओआरएस के पैकेट एवं क्लोरीन की गोलियों का वितरण किया तथा स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की। क्षेत्र में जलकल विभाग की टीम ने पानी का सैम्पल जॉच केलिए लिया। नगर निगम ने क्षेत्र में साफ सफ ई एवं ब्लीचिंग पाउण्डर का छिड़काव किया। निजी चिकित्सा प्रतिष्ठान डालीगंज हास्पिटल लखनऊ को अधोहस्ताक्षरी कार्यालय में बिना पंजीकरण के संचालित पाये जाने पर नोटिस दिया। अपर मुख्य चिकित्साधिकारी ने अधीक्षिका, नगरीय सीएचसी सिल्वर जुबली को क्षेत्र में 24 घंटे निगरानी रखने के निर्देश दिए।

उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने विश्वसरैया सभागार में आयोजित एमएसएनई आत्म निर्भर कार्यक्रम में प्रतिभाओं को किया सम्मानित।

बांग्लादेशी हिंदुओं पर हो रहे हमलों के विरोध में प्रदर्शन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बांग्लादेशी सरकार का तख्ता पलट होने के बाद बांग्लादेश में हिंदुओं पर लगातार हो रहे हमले के विरोध में रविवार को टड़ियन मंदिर राजाजीपुरम ई - ब्लॉक मार्केट में हिंदू समाज के ओर से एक आक्रोश मार्च निकाला गया। जिसमें हिन्दूओं पर हो रहे हमलों को रोकने की मांग की गयी।

शतरुद्र प्रताप (राष्ट्रीय अध्यक्ष यूथ इन एक्शन एवं पूर्व सदस्य बोर्ड ऑफ गवर्नर, युवा खेल मंत्रालय भारत सरकार) ने हिन्दू समाज को संबोधित करते हुए आने वाली विकट परिस्थिति से निपटने के लिए हिन्दू समाज को एक जुट रहने का संदेश दिया और बांग्लादेशी हिन्दू समाज के प्रति संवेदनाएं प्रकट करते हुए भारतीय हिन्दू समाज उनके साथ इस विकट परिस्थिति में कंधे से कंधा मिला कर खड़ा है इस बात का संदेश दिया तथा साथ ही बांग्लादेशी हिंदुओं

के सुरक्षार्थ अलग बांग्लादेश हिंदू देश चाहिए का आह्वान किया। उन्होनें कहा कि हिंदू माताओं बहनों बच्चियों की अस्मिता को छिन्न भिन्न किया जा रहा है। उनको घरों से उठाकर दुष्कर्म बलात्कार कर जघन्य कुकर्म करने उपरांत मार काट के जिंदा जलाया जा रहा है। हिंदू भाइयों को मार काट कर उनके शवों को सड़कों पर उल्टा लटका कर बांग्लादेशी हिंदुओं के मन में भय का माहौल उत्पन्न किया जा रहा है, जो भीतर से हृदय को दहला देने वाले हैं।

हिन्दू मन्दिर तोड़े जा रहे हैं, हिंदुओं के घरों को जलाकर लूटपाट किया जा रहा है, वहां पर हिन्दू समाज के लिए परिस्थितियां अत्यंत विकट हैं। इस मौके पर कुंती श्रीवास्तव, अल्पना पांडेय, मीनाक्षी खनेजा, ऊषा श्रीवास्तव, बबिता मिश्रा,साधना वर्मा पूर्व पार्षद, पिंकी, सरोज, आभा, सोमा, नीरू तथा वरिष्ठ व्यापारी सिद्धनाथ दूबे, कपिल सोनी पूर्व पार्षद, अतुल दीक्षित पूर्व पार्षद, राजीव कृष्ण त्रिपाठी पूर्व पार्षद, ऋषभ गुप्ता, योगेश शर्मा, पंकज तिवारी, संतोष , डॉ पंकज, शिवेंद्र आदि समस्त हिंदू समाज की माताओं बहनों ने आक्रोश मार्च में अपनी सहभागिता दर्ज किया।

बकाया धनराशि तय समय पर न जमा करने पर नगर निगम करेगा विधिक कार्यवाही

● मोक्ष इनोवेशन इन कार्पोरेशन प्रचार एजेंसी के साथ हुए 30 वर्षों के अनुबंध का हुआ निरस्तीकरण

● एक सप्ताह के अंदर बकाया 6075582 रुपए जमा करने का निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

शहर में बिना भुगतान के प्रचार करने पर प्रचार एजेंसी पर नगर निगम द्वारा कड़ा रुख अपनाया गया। प्रचार विभाग के प्रभारी प्रचार अधिकारी द्वारा नगर आयुक्त को रिपोर्ट दी गयी। रिपोर्ट पर बस शेल्टरों के लिए पूर्व में दी गयी 30 वर्षों की विज्ञापन अनुमति को निरस्त कर दिया गया। साथ ही यह आदेश दिया गया कि एक सप्ताह के अंदर बकाया 6075582 रुपए जमा करने का निर्देश दिया गया। धनराशि जमा न करने पर विधिक कार्रवाई करने की चेतावी दी गयी है।

रविवार को नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह के निर्देश पर अपर नगर आयुक्त पंकज श्रीवास्तव और प्रभारी अधिकारी प्रचार अंबी विष्ट ने प्राप्त रिपोर्ट सौंपी। रिपोर्ट के आधार पर बस शेल्टर पर नगर निगम के पूर्व में प्रदान की गयी विज्ञापन की अनुमति को इंद्रजीत सिंह नगर आयुक्त ने निरस्त कर दिया। साथ ही नगर निगम ने बकाया धनराशि 7 दिवस में अनिवार्य रूप से जमा करवाये जाने के लिए निर्देशित किया है, अन्यथा की दशा में विधिक कार्यवाही भी सुनिश्चित की जायेगी, जिसका समस्त उत्तरदायित्व लोक निर्माण विभाग का होगा। मोक्ष इनोवेशन एजेन्सी को 18 बस शेल्टरों का आवंटन अधिशासी अभियन्ता राष्ट्रीय मार्ग खण्ड लोक निर्माण विभाग ने 9 सितंबर 2003 को आगामी 30 वर्ष के लिए किया। वर्तमान समय में आपकी एजेन्सी पर बस शेल्टर मद में वित्तीय वर्ष 2024-25 (जुलाई माह) तक धनराशि रू0 6753476 बकाया है। न्यायालय के आदेश के अनुपालन में नगर निगम ने समय प्रदान करते हुए मोक्ष इनोवेशन को बकाया धनराशि वसूली किये जाने के लिए कई बार नोटिस एवं दूरभाष से सूचित किया जा चुका है। लेकिन वर्तमान समय तक आपकी एजेन्सी द्वारा बस शेल्टर मद में वित्तीय वर्ष 2024-25 जुलाई माह तक बकाया धनराशि रुपए 6753476 के सापेक्ष रुपए 286327 जमा किया है। एजेन्सी पर वित्तीय वर्ष 2024-25 जुलाई माह तक बस शेल्टर मद में रू0 6075582 अवशेष है। वर्तमान समय तक आपकी एजेन्सी द्वारा बकाया धनराशि का भुगतान नहीं किया गया है जो उपरोक्त शर्तों का उल्लंघन है। अधिशासी अभियन्ता राष्ट्रीय मार्ग खण्ड लोक निर्माण विभाग ने उक्त बस शेल्टरों का निर्माण व रख रखाव की अनुमति यात्रियों व जन.सामान्य की सुविधा के लिए मोक्ष एजेंसी को प्रस्तावित थी, उक्त स्ट्रक्चरों पर जनसामान्य के लिए उपयोगिता का उपर्युक्त व्यवस्था रख रखाव न करते हुए एजेन्सी द्वारा मात्र अपने निजी व्यवसाय के लिए विज्ञापन कर प्रयोग किया जा रहा है। एजेन्सी द्वारा बार.बार सूचना दिये जाने के बाद भी बकाया धनराशि जमा नहीं की जा रही है और न ही बस शेल्टरों का रख.रखाव सही से किया जा रहा है, शर्तों का नियमित रूप से उल्लंघन किया जा रहा है। नगर आयुक्त ने एजेंसी के अपने दायित्वों का निर्वहन सही ढंग से न करने पर एजेन्सी को आवंटित बस शेल्टर का आवंटन निरस्त कर दिया है और चूक को अनुबंध निरस्त करने के लिए भी निर्देशित किया। 07 दिवस में धनराशि न जमा किए जाने पर विधिक कार्यवाही भी की जाएगी इसी तरह जो बाकी जिनका बकाया है उन पर कार्यवाही की जा रही है।

सरकारी भूमि पर अवैध कब्जेदारों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सरोजनी नगर में अवैध कब्जे पर नगर निगम द्वारा कार्रवाई की गी। नगर आयुक्त के आदेश पर फर्रुखाबाद चिल्लावां के खसरा संख्या 599 जो राजस्व अभिलेखों में ऊसर दर्ज है। प्रचार अधिकारी द्वारा अवैध कब्जे पर बुल्डोजर चलाया गया। साथ ही ज्ञात लोगों के विरुद्ध धाराओं में थाना सरोजनी नगर में एफ आईआर दर्ज करा दी गयी है।

सरोजनी नगर में नगर निगम के संपत्ति विभाग द्वारा अवैध कब्जा पर कड़ी कार्रवाई की गयी। सरोजनी नगर के ग्राम फ रुखाबाद चिल्लावां तहत की खसरा सं. 599 क्षे00.284 हेक्टेयर जो राजस्व अभिलेखों में ऊसर दर्ज है, जो नगर निगम में निहित सम्पत्ति है। नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह व पंकज श्रीवास्तव अपर नगर आयुक्त के निर्देश पर प्रभारी अधिकारी सम्पत्ति संजय यादव एवं तहसीलदार अरविंद पाण्डे के आदेश पर नीरज कटियार

नायब तहसीलदार के नेतृत्व में 10 अगस्त 2024 को उक्त खसरा सं. पर किए गए। अवैध कब्जे को लेखपाल सुधांशु, विनोद, सुभाष, अनूप, राजेन्द्र व पुलिस बल की उपस्थिति में हटवा दिया गया। उस अवैध कब्जा सड़क किनारे की बेशकीमती भूमि पर था। उक्त प्रकरण में अवैध अतिक्र मणकर्ता अजीम खान एवं उनकी पत्नी, राजेन्द्र गुप्ता, सन्तोष व अन्य अज्ञात लोगों के विरुद्ध सुसंगत धाराओं में थाना सरोजनी नगर में एफ आईआर दर्ज करा दी गई है।

मां भारती के जयघोष के साथ भाजपा ने तिरंगा यात्रा का किया शुभारम्भ

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी ने हर घर तिरंगा अभियान के तहत रविवार को मां भारती के जयघोष के साथ प्रदेश में तिरंगा यात्रा का शुभारम्भ किया। आज 11 अगस्त से प्रारम्भ होकर आगामी 13 अगस्त तक चलने वाली तिरंगा यात्रा प्रदेश की 403 विधानसभाओं में राष्ट्र प्रेम का संदेश लेकर नगर, गांव, गली, मोहल्ले, मजरे व चौपालों तक पहुंच रही है। भारत माता का जयगान और अमर बलिदानियों तथा महापुरूषों का जयघोष करते हुए भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि तथा कार्यकर्ता स्थानीय नागरिकों के साथ तिरंगा यात्रा से जन-जन को जोड़ते हुए राष्ट्र प्रेम का संचार कर रहे है। रविवार को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी सहारनपुर तथा प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक मैनपुरी में तिरंगा यात्रा में सम्मिलित हुए। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान पर प्रारम्भ हुए हर घर तिरंगा अभियान के माध्यम से हर घर पर तिरंगा, तिरंगा यात्रा, अमर बलिदानियों तथा महापुरूषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण, विभाजन की विभिषिका पर गोष्ठी सहित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। राष्ट्र प्रेम का संदेश लेकर भाजपा जन-जन तक पहुंच रही है। श्री चौधरी ने कहा कि तिरंगा देश की एकता और अखण्डता का प्रतीक है और राष्ट्र की चेतना को प्रतिबिंबित करता है। हर घर तिरंगा अभियान राष्ट्र की शक्ति और समर्पण का प्रतीक बनकर जन-जन से जुड़ रहा है। प्रदेश प्रवक्ता एवं हर घर तिरंगा अभियान के प्रदेश सहसंयोजक डा. समीर सिंह ने बताया कि रविवार 11 अगस्त को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी सहारनपुर तथा उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक मैनपुरी में पार्टी पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों, कार्यकर्ताओं तथा स्थानीय नागरिकों के साथ तिरंगा यात्रा में सम्मिलित हुए। तिरंगा यात्रा में प्रदेश सरकार के मंत्री श्री सुरेश खन्ना शाहजहांपुर, श्री स्वतंत्र देव सिंह कानपुर, धर्मपाल सिंह आंवला, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री पंकज सिंह लखनऊ, श्री संतोष सिंह व श्री बृज बहादुर मैनपुरी तथा प्रदेश महामंत्री व अभियान के प्रदेश संयोजक अनूप गुप्ता झांसी में सम्मिलित रहे। सिंह ने बताया कि रविवार को प्रदेश सरकार के मंत्री जयवीर सिंह मैनपुरी, नरेन्द्र कश्यप गाजियाबाद, सोमेन्द्र तोमर मेरठ, श्रीमती बेबी रानी मौर्य आगरा, श्री सुरेश राही सीतापुर, गिरीश यादव जौनपुर, अरूण सक्सेना बरेली, क्षेत्रीय अध्यक्ष सहजानंद राय आजमगढ़, सत्येन्द्र सिसौदिया गाजियाबाद, श्रीप्रकाश पाल कानपुर तथा श्री कमलेश मिश्रा बाराबंकी में तिरंगा यात्रा में सम्मिलित हुए।

डा. समीर सिंह ने बताया कि सोमवार 12 अगस्त को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी मुजफ्फरनगर में तिरंगा यात्रा में सम्मिलित होगें। राष्ट्रीय महामंत्री श्री तरूण चुग हापुड़, राष्ट्रीय मंत्री श्री सुरेन्द्र नागर बुलन्दशहर, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री सत्यपाल सैनी हापुड़, श्री बृज बहादुर मैनपुरी, प्रदेश महामंत्री श्री गोविन्द नारायण शुक्ला बस्ती, श्री संजय राय अयोध्या, श्री राम प्रताप चौहान आगरा, प्रदेश मंत्री डा. चन्द्रमोहन बागपत में तिरंगा यात्रा में सहभागिता करेंगे। सिंह ने बताया कि सोमवार को पूर्व उपमुख्यमंत्री डा. दिनेश शर्मा लखनऊ, पूर्व केन्द्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति फतेहपुर, प्रदेश सरकार के मंत्री श्री सुनील शर्मा गाजियाबाद, श्री सोमेन्द्र तोमर मुजफ्फरनगर, संजीव कुमार गौड़ सोनभद्र, श्री दारा सिंह चौहान मऊ, श्री सतीश शर्मा बाराबंकी तथा श्री मनोहर लाल मन्नू ललितपुर में तिरंगा यात्रा में सम्मिलित होगें।

उपचुनाव में सभी 10 सीटों पर विजय प्राप्त करेंगे: पंकज सिंह

लखनऊ। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं विधायक नोएडा पंकज सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी यूपी की दस सीटों पर होने वाले उपचुनाव में जीत का परचम लहराएगी और सभी दस सीटें जीत कर लाएगी। पंकज सिंह ने यह बात रविवार को भारतीय जनता पार्टी लखनऊ महानगर युवा मोर्चा द्वारा पश्चिम विधानसभा में बालागंज चौराहे पर आयोजित तिरंगा यात्रा के शुभारंभ अवसर पर कही। इस मौके पर लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी के साथ रमेश तूफानी, सत्येंद्र सिंह, मीडिया प्रभारी प्रवीण गर्ग, अभियान संयोजक अभिषेक खरे मुख्य रूप से उपस्थित रहे। युवा मोर्चा महानगर अध्यक्ष मानवेंद्र सिंह, महामंत्री अभिषेक गुप्ता के नेतृत्व में बड़ी संख्या में युवा कार्यकर्ता और क्षेत्रवासी हाथ में झंडा लहराते हुए और भारत माता की जय कारे लगाते हुए तिरंगा पद यात्रा में सम्मिलित हुए। बालागंज चौराहे से कैंपल रोड होते हुए भगत सिंह चौराहा राजाजीपुरम पर यात्रा का समापन हुआ। यात्रा शुभारंभ अवसर पर मीडिया को संबोधित करते हुए पंकज सिंह ने कहा कि विगत कई वर्षों से पार्टी के कार्यकर्ता सभी देशवासियों के साथ मिलकर देश भर में हर्षोल्लास के साथ राष्ट्र की एकता और अखंडता के संकल्प को प्रतिबद्धता के साथ दोहराते हुए हर घर तिरंगा अभियान को तिरंगा यात्रा जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के साथ बड़े उत्साह से मनाते हैं।

पार्टी ने तय किया है कि देश का एक-एक व्यक्ति अपने घरों पर झंडा लगाएं। जिसके लिए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी सभी लोगों के मन में अति उत्साह है प्रत्येक देशवासी अपने घरों पर झंडा लहरा कर गर्व का अनुभव करता है। जैसा उत्साह अभी आप यहां पर आम जनमानस में देख रहे हैं कि सभी अपने हाथों में तिरंगा झंडा लिए भारत माता की जय बोलते हुए आगे बढ़ रहे हैं, पूरे देश में इसी प्रकार उत्साह का वातावरण है इस अवसर पर मैं भी सभी से आवाहन करता हूं कि सभी अपने घरों और प्रतिष्ठानों पर झंडा लगाए। उनके मन में देश के प्रति राष्ट्रभक्ति और प्रेम की भावना है उसको इस रूप में व्यक्त करने के लिए आगे बढ़कर हर घर तिरंगा अभियान में सहभागिता करें। भारत पूरे विश्व का नेतृत्व करे हमारे प्रधानमंत्री जी का ऐसा संकल्प है इस नजरिए से भी प्रत्येक देशवासी का स्वतंत्रता दिवस में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना खास हो जाता है। महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान अब एक आम जनमानस में देश के उत्सव के रूप में स्थान बना चुका है। पार्टी की योजना अनुसार हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाने के लिए महानगर व मंडल स्तर पर कार्यशालाओं का आयोजन किया गया और 11 12 13 अगस्त को प्रत्येक विधानसभा में युवा मोर्चा के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा का आयोजन किया जा रहा है और इसके साथ ही 13 से 15 अगस्त तक कार्यकर्ता सभी घरों और व्यावसायिक केंद्र पर झंडा खरीद कर लगाने के लिए जनसंपर्क कर आवाहन करेंगे और जो खरीदने में सक्षम नहीं है उनको झंडा उपलब्ध कराएंगे।

निलंबित वाहनों का विवरण प्रकाशित किया जाए: परिवहन मंत्री

लखनऊ। परिवहन मंत्री के निर्देश पर परिवहन आयुक्त उत्तर प्रदेश चंद्रभूषण सिंह ने प्रदेश के समस्त सहायक संभागीय परिवहन (प्रशासन) अधिकारी को निर्देशित किया है कि निलंबित किए गए स्कूली वाहन तथा यात्री वाहन का विवरण स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित कराए। परिवहन मंत्री ने निर्देश दिए है कि प्रेस विज्ञप्ति में इसका उल्लेख किया जाये कि वाहन स्वामियों को नोटिस निर्गत किए जाने के उपरांत भी कार्यालय में उपस्थित नहीं हो रहे है। निलंबित किए गए वाहन का संचालन कदापि न किया जाए। परिवहन आयुक्त ने निर्देश दिए हैं कि यदि प्रवर्तन कार्यवाही के दौरान वाहन को संचालित होना पाया जाये तो प्रवर्तन अधिकारियों द्वारा वाहन स्वामी के विरुद्ध एफआईआर दर्ज करायी जाये। उन्होंने कहा कि बच्चों की सुरक्षा से खिलवाड़ किसी भी शर्त पर नही होने दिया जाएगा।

उत्तर प्रदेश में हर घर में सौर पैनल लगाने के लिए 30,000 सूर्य मित्र रखने की योजना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने हर घर की छत पर सौर पैनल लगाने के अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए 30,000 युवाओं को सूर्य मित्र के रूप में प्रशिक्षित करने की योजना बनाई है। राज्य में पिछले साल फरवरी में प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की शुरुआत की गई। इस योजना का लक्ष्य देशभर में एक करोड़ सौर छतें स्थापित करना है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य में 25 लाख से अधिक सौर छतें स्थापित की हैं। उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी (यूपीएनईडीए) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया कि उत्तर प्रदेश के हर घर में सौर पैनल लगाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सौर ऊर्जा क्षेत्र में कुशल श्रमिकों की जरूरत होगी।

अधिकारी ने कहा कि इसके लिए राज्य एजेंसी ने जिला केंद्रों और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) में 30,000 सूर्य मित्रों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा, इस कुशल जनशक्ति को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन ने एक योजना की रूपरेखा तैयार की है। उत्तर प्रदेश में 3,000 से अधिक युवाओं ने सौर परियोजनाओं के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है। यह प्रशिक्षण राज्य के हर घर में सौर पैनल लगाने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण को तेजी से हासिल करने के लिए एक ठोस प्रयास है। तीन महीने के सूर्य मित्र कार्यक्रम में 600 घंटे का व्यापक प्रशिक्षण शामिल है, जिसमें कक्षा निर्देश, व्यावहारिक प्रयोगशाला कार्य, सौर फोटोवोल्टिक प्रौद्योगिकी संयंत्रों का अनुभव, नौकरी पर प्रशिक्षण और सॉफ्ट कौशल एवं उद्यमिता विकास शामिल है।

कार्यक्रम के लिए अर्हता प्राप्त करने के वास्ते उम्मीदवारों को 10वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए और उनके पास इलेक्ट्रीशियन, वायरमैन, इलेक्ट्रॉनिक मैकेनिक, फिटर या शीट मेटल वर्कर के रूप में आईटीआई प्रमाणन होना चाहिए। प्रशिक्षण पूरा करने पर उन्हें रोजगार हासिल करने में सहायता प्रदान की जाती है। यूपीनेडा के आंकड़ों के अनुसार, राज्य में 18 लाख से अधिक घरों की छत पर सौर पैनल लगाने के लिए पंजीकरण पूरा हो चुका है और लगभग दो लाख अतिरिक्त घरों के लिए आवेदन जमा किए गए हैं। सौर ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए सरकार नें नेट बिलिंगानेट मीटरिंगै प्रणाली शुरू की है। इसके अलावा, यूपीएनईडीए ने पूरे उत्तर प्रदेश में 10 लाख घरों की छत पर सौर पैनल स्थापित करने के लिए टाटा समूह के साथ साझेदारी की है।

लाल किले पर 15 अगस्त को आमंत्रित की गईं ड्रोन व लखपति दीदियाँ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 2024 को) के मौके पर दिल्ली मे लाल किले पर आयोजित कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत कार्यरत 3 लखपति दीदी एवं 5 ड्रोन दीदियों को ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आमंत्रित किया गया है। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने इसके लिए प्रधानमन्त्री के प्रति व ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया है और कहा है कि स्वतंत्रता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में पहुंचने लखपति दीदियों में और लखपति दीदी बनने की ओर अग्रसर दीदियों व ड्रोन दीदियों में न केवल नये उत्साह न नयी ऊर्जा का संचार होगा, बल्कि उनमें आत्मविश्वास का भाव और अधिक दृढ़ होगा। यही नहीं इससे पूरे देश व प्रदेश की महिलाओं में आत्मसम्मान का भाव जागृत होगा। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के निर्देशों के और इनके सम्बन्ध में आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने हेतु राज्य स्तर से तीन नोडल अधिकारियों को लगाया गया है। इनके रहने-खाने व ट्रैवल की समुचित व्यवस्था करायी गयी है। इन दीदियों को दिल्ली जाने का रिजर्वेशन करा दिया गया है।

ग्राम्य विकास आयुक्त जी एस प्रियदर्शी व राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन की मिशन निदेशक दीपा रंजन ने बताया कि दिल्ली में लाल किले पर आयोजित होने वाले स्वतंत्रता दिवस के समारोह में इन दीदियों को सम्मिलित होना है। जिनमें लखपति दीदियाँ राधा लक्ष्मी अयोध्या से, सीमा देवी वाराणसी से तथा राजश्री शुक्ला बाराबंकी से प्रतिभाग करेंगी। इस कार्यक्रम में ड्रोन दीदियाँ सुनीता देवी जनपद सीतापुर से, अंजना यादव अमेठी से, अल्पना रानी बिजनौर से, सुनीता बाबा खीरी से एवं आशा देवी वाराणसी से मुख्य रूप से सम्मिलित है। ये सभी दीदियाँ उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत गठित समूहों की सदस्या हैं तथा इनके द्वारा आजीविका संवर्धन हेतु उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे हैं। अन्य दीदियों को भी इनसे प्रेरणा मिल रही है। इन सभी दीदियों को नयी दिल्ली में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री से भी मिलने का मौका प्राप्त होगा, साथ ही साथ सभी दीदियों को इस अवसर पर नयी दिल्ली के प्रमुख स्थलों का भ्रमण भी कराया जायेगा, जिससे इनका और अधिक ज्ञानवर्धन होगा। इन सभी दीदियों को 13 अगस्त को दिल्ली पहुंचना है और 16 अगस्त को वापसी है।

तुलसी जयंती पर संगोष्ठी आयोजित

लखनऊ। वसंत महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग के द्वारा प्रो. मीनू अवस्थी अध्यक्ष हिंदी विभाग के संयोजन में तुलसी जयंती का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का आरंभ दीप प्रज्ज्वलन, व गोस्वामी तुलसीदास के चित्र को पुष्पांजलि समर्पित करके किया गया। अपने उद्घाटन में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो.अलका सिंह ने कहा कि तुलसी का साहित्य हमारी युवा पीढ़ी का मार्गदर्शक है। हिन्दी विभाग के डॉ राजेश चौधरी ने संत हृदय नवनीत समान को लेकर अपने विचार को व्यक्त किया। डॉ. किरण तिवारी ने लोकसंस्कृति के संदर्भ में तुलसी के विचार को अपने बातों में रखा, डॉ सीमा पांडेय ने तुलसी साहित्य के महत्व पर प्रकाश डाला, इस कार्यक्रम को डॉ पुनीता पाठक और डॉ श्वेता ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. मीनू अवस्थी ने संतों की विशेषता बताते हुए गोस्वामी की पंक्तियों 'संत स्वभाव गहोंगो' के संदर्भ में संत की महिमा बताई। कार्यक्रम में अंजली मिश्रा, रीमा कन्नौजिया, छवि, काजल सेठ, जागृति सेठ, पायल प्रिया, मेधा सिंह, अर्चना कुमारी, रितिका केशरी, राधा मिश्रा, अंजली कुमारी, प्राची कुमारी, रीति सिंह, पूजा राय, रिया श्रीवास्तव, मुस्कान बेबी संचिता शर्मा और श्रेयांशी रस्तोगी छात्राओं की प्रतियोगिता में भागीदारी रही। इस कार्यक्रम का संचालन नवोदिता त्रिपाठी तथा धन्यवाद ज्ञापन तृषा सिन्हा ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक भी उपस्थित रहे।

योगी सरकार ने ओलंपियन ललित उपाध्याय का किया रेड कारपेट वेलकम

● एयरपोर्ट से लेकर काशी विश्वनाथ मंदिर तक हुआ हॉकी प्लेयर ललित का भव्य स्वागत

लखनऊ/वाराणसी। योगी राज में न सिर्फ खिलाड़ियों की सुविधाओं का ध्यान रखा जा रहा है बल्कि उन्हे हर स्तर पर भरपूर सम्मान भी दिया जा रहा है। पेरिस ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम के प्लेयर ललित उपाध्याय के वाराणसी पहुंचने पर एयरपोर्ट पर भव्य स्वागत किया गया। यही नहीं योगी सरकार ने ललित के काशी विश्वनाथ मंदिर पहुंचने पर उनका रेड कारपेट वेलकम किया। इस दौरान मंदिर प्रशासन के अधिकारियों ने पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने पर ललित का माल्यार्पण कर उत्साह बढ़ाया। वहीं शंखनाद से उनका मंदिर परिसर में विशेष अभिनंदन किया गया। हॉकी टीम के प्लेयर ललित ने श्रीकाशी विश्वनाथ धाम पहुंचकर बाबा का विधि-विधान से दर्शन पूजन किया और आशीर्वाद लिया। उन्होंने अपना मेडल बाबा श्री काशी विश्वनाथ को अर्पित भी किया। उनके साथ बड़ी संख्या में उनके फैंस मौजूद रहे। इससे पहले ललित उपाध्याय का वाराणसी पहुंचने पर बाबतपुर एयरपोर्ट पर जबरदस्त तरीके से स्वागत किया गया। वह ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के बाद पहली बार काशी आए थे। यहां ढोल नगाड़ों के साथ लोगों ने ललित उपाध्याय का स्वागत किया।

सीएम योगी ने अपने हाथों से सौंपा था डीएसपी का नियुक्ति पत्र

ललित के वाराणसी पहुंचने पर एयरपोर्ट हर हर महादेव का उद्घोष किया गया। भारतीय हॉकी टीम ने ओलंपिक में 2-1 से स्पेन को हराकर कांस्य पदक जीता था। रविवार को वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन पूजन कर बाबा काशी विश्वनाथ को अपना मेडल अर्पित किया। इसके बाद वह अपने पैतृक आवास शिवपुर पहुंचे। मालूम हो कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हॉकी प्लेयर ललित उपाध्याय को टोकियो ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने पर वर्ष 2022 में यूपी पुलिस में डिप्टी एसपी के पद पर सीधी नियुक्त दी थी।

बसपा नेता अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस में शामिल

लखनऊ। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा से प्रेरित होकर चित्रकूट के बसपा से चित्रकूट विधानसभा के प्रत्याशी रहे पुष्पेन्द्र सिंह ने रविवार को अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस मुख्यालय पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पूर्व मंत्री श्री अजय राय जी के समक्ष कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण कर अपने पुराने घर कांग्रेस में वापसी की। राय ने पुष्पेन्द्र सिंह सहित उनके समर्थकों के गले में तिरंगा पट्टिका पहनाकर तथा पार्टी का सदस्यता कार्ड देकर विधिवत रूप से कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई तथा उन्हें उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष विश्वविजय सिंह, पूर्व एमएलसी दीपक सिंह, जिला कांग्रेस कमेटी चित्रकूट के अध्यक्ष कुशल पटेल, शहर कांग्रेस कमेटी लखनऊ के अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव त्यागी, मीडिया विभाग के वाइस चेयरमैन मनीष श्रीवास्तव हिंदवी, आरपी सिंह, हरनाम सिंह, राकेश पाण्डेय, संजय सिंह, सोमेश सिंह चौहान, डॉ अमित राय, डॉ. श्रवण गुप्ता, आलोक सिंह रैकवार, सोम विकल सिंह, राजेश सिंह आदि मौजूद रहे। सदस्यता ग्रहण कार्यक्रम के उपरांत प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारे नेता राहुल गांधी ने जिस प्रकार से भारत जोड़ो यात्रा तथा भारत जोड़ो न्याय कर देश की जनता के दुख दर्द को समझा एवं उसे महसूस किया है, उसका परिणाम इस देश एवं प्रदेश की जनता ने विगत हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को करारी शिकस्त देकर दिखाया है। उन्होंने कहा कि लोगों की कांग्रेस पार्टी तथा नेता प्रतिपक्ष श्री राहुल गांधी के प्रति आस्था बढ़ी है और प्रतिदिन कई राजीतिक दलों को छोड़कर कांग्रेस परिवार में शामिल हो रहे है। कांग्रेस का कारवां लगातार बढ़ता जा रहा है, निश्चित ही प्रदेश में होने वाले उपचुनाव तथा 2027 के विधानसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन की विजय होगी और भाजपा की तानाशाह सरकार से मुक्ति मिलेगी। सिंह के साथ सदस्यता ग्रहण करने वालों में प्रमुख रूप से वरूण कुमार सिंह, विनय सिंह चौहान, अमरेंद्र मिश्रा (मुन्ना मिश्रा), अविनाश श्रीवास्तव, अजय उपाध्याय, देवेन्द्र सिंह, कुलभूषण तिवारी, रामचरण सिंह, संजीव सिंह, शिव विशाल सिंह, आदि शामिल रहे।

प्रदेश स्तरीय सिविल सर्विसेज खेल ट्रायल्स कार्यक्रम घोषित

लखनऊ। प्रदेश स्तरीय सिविल सर्विसेज खेल चयन/ट्रायल्स के लिए वर्ष 2024-25 का कार्यक्रम जारी कर दिया गया है। 22-23 अगस्त, 2024 को विभिन्न खेलों के लिए आयोजित होने वाले इन चयन/ट्रायल्स के लिए विभिन्न जिलों में पर्यवेक्षकों और चयन समिति के सदस्यों को नामित किया गया है। रायबरेली में हॉकी के लिए मुकेश गुप्ता, समीक्षा अधिकारी, कार्मिक अनुभाग, टेनिस के लिए प्रयागराज में भूपेन्द्र एस. चौधरी, विशेष सचिव, दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग, बस्ती में वालीबाल के लिए सुरेन्द्र प्रताप सिंह, लिपिक, लखनऊ विकास प्राधिकरण, लखनऊ में तैराकी के लिए कुलदीप कुमार रस्तोगी, विशेष सचिव, कार्मिक विभाग, वाराणसी में बास्केटबाल के लिए मानस मुकुल त्रिपाठी, समीक्षा अधिकारी, समाज कल्याण, मुरादाबाद में बैडमिन्टन के लिए देवेन्द्र सिंह चौहान, निजी सचिव, मुख्यमंत्री, अयोध्या में टेबुल टेनिस, बिजनौर में कबड्डी के लिए सुनील कुमार, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी, पंचायत एवं नगर निकाय, आगरा में भारोत्तोलन के लिए अरविन्द कुमार भारती, सहायक समीक्षा अधिकारी, मानवाधिकार और बेस्टफिजिक के लिए धमेन्द्र यादव, प्रशासनिक अधिकारी, संस्कृति निदेशालय, मेरठ में एथलेटिक्स के लिए ज्योति प्रकाश ओझा, समीक्षा अधिकारी, कृषि, मऊ में फुटबाल के लिए राजेश गुप्ता, सहायक समीक्षा अधिकारी, कानपुर, लखनऊ में ब्रिज के लिए, गोरखपुर में कुश्ती के लिए इन्द्रजीत सिंह, समीक्षा अधिकारी, समन्वय विभाग, आगरा में पावरलिफ्टिंग के लिए मुकेश कुमार पाण्डेय, सहायक समीक्षा अधिकारी, आईटी एवं इलेक्ट्रानिक्स, और कानपुर में क्रिकेट के लिए जे0पी0 वर्मा, निजी सचिव को पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्त किया गया है। इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभी संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत की बैठक संपन्न

लखनऊ। अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत अवध प्रांत की बैठक में क्षेत्रीय संगठन मंत्री डॉ. प्रमोद पांडेय के मार्गदर्शन में हुई। अध्यक्षता प्रांत के अध्यक्ष अनिल खरे द्वारा की गई तथा कार्यक्रम का संचालन प्रांतीय सचिव आशुतोष मिश्र द्वारा किया गया। प्रारंभ संगठन मंत्र द्वारा हुआ जो कि प्रांतीय कोषाध्यक्ष रामशंकर अवस्थी द्वारा कराया गया। डॉ. पांडेय ने बताया गया कि इस बार राष्ट्रीय स्तर पर हमारे संगठन की सदस्यता 25000 होनी है जिसमें अपने प्रांत का योगदान कम से कम 1000 सदस्यता का होना चाहिए। हमें अपनी सदस्यता का लक्ष्य बढ़ाना है, अगर हमें आगे जाना है तो मिलकर प्रगति करनी होगी, टोली बनाकर आगे बढ़ना होगा। इसी सक्रियता से हमें आगे कार्य करना है। प्रांत स्तर के कार्यकर्ता इस माह न्यूनतम 25 की सदस्यता करेंगे तथा नगर एवं जिला स्तर के कार्यकर्ता न्यूनतम 15 की सदस्यता करेंगे। प्रांतीय अध्यक्ष ने कहा कि हमारा पूरा अवध प्रांत इसी सक्रियता के साथ अपने लक्ष्य को जल्द से जल्द प्राप्त करेगा।

नेचर इंडेक्स में यूपी में पहला स्थान प्राप्त करने पर राज्यपाल ने डीडीयू को दी बधाई

लखनऊ। राज्यपाल एवं राज्य विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल व प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री योगेन्द्र उपाध्याय ने दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा नेचर इंडेक्स रैंकिंग में सफलता प्राप्त करने पर बधाई दी है। विश्वविद्यालय ने उत्तर प्रदेश के सभी राज्य विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान हासिल किया है। नेचर इंडेक्स रैंकिंग, जो प्राकृतिक विज्ञान की उच्च गुणवत्ता वाली पत्रिकाओं में योगदान के आधार पर संस्थानों का आकलन करती है, ने दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय को देश के प्रमुख संस्थानों में स्थान दिया है। विश्वविद्यालय ने भारत के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में 103वें और विश्वविद्यालयों में 47वें स्थान पर अपनी उपस्थिति दर्ज की है। बता दें कि दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर को इससे पहले नैक में 'ए प्लस प्लस' ग्रेड हासिल हो चुका है। इसके अलावा, यूनिवर्सिटी ने क्यू.एस. एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग सहित कई अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में भी अपनी पहचान बनाई है। यूनिवर्सिटी को यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन (यू.जी.सी.) से क्लास 1 का दर्जा भी प्राप्त है। यूनिवर्सिटी को हाल ही में पी.एम.ऊषा योजना के तहत एम.ई.आर.यू. (बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान विश्वविद्यालय) के लिए 100 करोड़ रुपये की फंडिंग प्राप्त हुई है। यह फंड यूनिवर्सिटी के रिसर्च और ऐकडेमिक बुनियादी ढांचे को और मजबूत करने में सहायक होगी। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि हेतु उत्तर प्रदेश की राज्यपाल एवं राज्य विश्वविद्यालय की कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल के दूरदर्शी नेतृत्व और मार्गदर्शन को श्रेय दिया। वहीं उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने विश्वविद्यालय को हार्दिक बधाई दी है। विश्वविद्यालय ने उत्तर प्रदेश के सभी राज्य विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, जो इसकी उत्कृष्टता का प्रमाण है। उच्च शिक्षा मंत्री ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति, सभी शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों को इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए बधाई दी और उनके निरंतर प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह सफलता प्रदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक नया मानदंड स्थापित करेगी।

भाजपा के नेता अपने साथियों के साथ सपा में शामिल

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के नेतृत्व एवं सपा की नीतियों पर आस्था जताते हुए बांदा के भाजपा नगर उपाध्यक्ष करन सिंह पंकज अपने तमाम साथियों के साथ आज समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए। पंकज जेएन डिग्री कॉलेज बांदा छात्रसंघ के भी उपाध्यक्ष रहे है। समाजवादी पार्टी में शामिल करन सिंह पकंज के साथ किसान यूनियन के नेता दिनेश सिंह पूर्व छात्र संघ पदाधिकारी अभय सिंह, किसान यूनियन नेता राधेश्याम सिंह जादौन तथा अंकित निगम ने भी समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली है। बांदा सपा के नेता ईशान सिंह पुत्र स्वर्गीय विवेक सिंह, अखिलेश यादव ने उम्मीद जताई कि पंकज और उनके साथियों के सपा में शामिल होने से सपा को मजबूती मिलेगी। पंकज और उनके साथियों ने 2027 में समाजवादी पार्टी की बहुमत की सरकार बनाने का संकल्प लिया है। वहीं दूसरी सपा मुखिया अखिलेश यादव के नेतृत्व एवं सपा की नीतियों पर आस्था जताते हुए बिजनौर के दर्जनों भाजपा नेता सपा में शामिल हो गए। सभी ने 2027 के चुनावों में समाजवादी पार्टी की जीत के लिए एकजुट प्रयास करने का संकल्प दुहराया। अखिलेश यादव ने सभी से बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत बनाने का कहा। पाल नर्सिंग होम, नहटौर के डायरेक्टर निहाल सिंह के साथ बिजनौर में भाजपा छोड़कर सपा में शामिल होने वाले पाल समाज के प्रमुख नेता विजय सिंह बाकरपुर मंडावली, शीशम सिंह भगौता शाहनगर कुराली, मान सिंह पाल पालकी एवं शेरकोट, वीरेन्द्र सिंह सरकथल सानी, ओम प्रकाश मिर्जारीपुर चौहड़ आदि अन्य तमाम हैं।

सरोजनीनगर में आज 200 रुद्राक्ष के पौधों का होगा रोपण

● रुद्राक्ष युक्ति एवं मुक्ति देने वाला चमत्कारिक वृक्षः डॉ. राजेश्वर सिंह

लखनऊ। सरोजनीनगर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर सोमवार को रुद्राक्ष के 200 पौधे रोपे जाएंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा संचालित 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत रुद्राक्ष के इन पौधों को विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा शुरू की गयी सावन माह के सोमवार के अवसर पर रुद्राक्ष पौधरोपण महा अभियान के अंतर्गत लगाया जायेगा। विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह स्वयं दोपहर 12 बजे जग्दम्बेश्वर महादेव मंदिर सेक्टर - के आशियाना, दोपहर 12.40 बजे संकट मोचन हनुमान मंदिर, वृन्दावन योजना सेक्टर -11, दोपहर 01.20 बजे बिजनौर स्थित शीतला माता मंदिर के सामने श्री शिव मंदिर, ग्राम कुरौनी स्थित राजकीय हाई स्कूल में दोपहर 02 बजे, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सरोजनी नगर में दोपहर 02.40 बजे और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, बेहटा में दोपहर 03 बजे रुद्राक्ष के पौधे रोपित कर इस महा अभियान की शुरुआत करेंगे। पौधों की सुरक्षा के लिए उन्हें ट्री गार्ड से घेरा भी जाएगा। इस दौरान विधायक द्वारा सभी 6 स्थानों पर स्थानीय भाजपा पदाधिकारियों को ताराशक्ति केंद्रों पर निर्मित इको फ्रेंडली बैग्स में रखकर 20 -20 आम के पौधे भी प्रदान किये जाएंगे। डॉ. राजेश्वर सिंह ने अपने आधिकारिक एक्स (ट्विटर) पर लिखा रुद्राक्ष = रूद्र (शिव) + अक्ष (आँख) रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रु से हुई मानी जाती है! शिव पुराण के अनुसार मानव कल्याण के निमित्त चिर ध्यान योग मुद्रा के उपरान्त जब भगवान शिव ने आंखें खोलीं तो आंसुओं की बूंदे गिरीं जिससे धरती पर रुद्राक्ष के वृक्ष अस्तित्व में आए। रुद्राक्ष के दर्शन, स्पर्श, रुद्राक्ष पर जप करने मात्र से प्राणियों को धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष चारों पुरुषार्थों का लाभ प्राप्त होता है। डॉ. सिंह ने क्षेत्रवासियों का आह्वान करते हुए आगे लिखा कि सरोजनीनगर के 60 प्राचीन मंदिरों, पार्कों व अन्य महत्वपूर्ण सार्वजिक स्थलों पर अबतक 200 हैण्डपंप लगवाए गये हैं, दिनांक 12 अगस्त को पवित्र श्रावण माह के सोमवार के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत तथा मुख्यमंत्री योगी की प्रेरणा से इस सभी 200 जल संतृप्त स्थलों पर 200 रुद्राक्ष के पौधे रोपे जायेंगे। रुद्राक्ष युक्ति एवं मुक्ति देने वाला चमत्कारिक वृक्ष है, रुद्राक्ष धारण करने से नकारात्मक विचार दूर होते हैं, भागवत पुराण के अनुसार जिस घर में एकमुखी रुद्राक्ष रहता है, उस घर से लक्ष्मी जी कभी दूर नहीं जाती। रुद्राक्ष धारण करने से हाई और लो बीपी और हृदय रोगों के नियंत्रण में लाभ मिलता है। रुद्राक्ष दिव्यशक्ति वाला एक सदाबहार, घना छायादार वृक्ष है, इसकी ऊँचाई 50 से 200 फीट तक होती है, 3 से 4 वर्ष में रुद्राक्ष के वृक्ष पर फल आने लगते हैं। रुद्राक्ष के पत्तों में औषधीय गुण होते हैं, जिनसे सिरदर्द, माइग्रेन और मानसिक रोगों का उपचार किया जाता है। रुद्राक्ष के फल और छिलकों का उपयोग सर्दी, फ़्लू और बुखार के उपचार में किया जाता है।

बाबा के दर्शन व जलाभिषेक के लिए आज उमड़ेगी भक्तों की टोली, तैयारी पूरी

कांवड़ियों के भीड़ नियंत्रित करने के लिए बढ़ाई गई सुरक्षा व्यवस्था

सोनभद्र।सावन के चौथे सोमवार को शिवालियों में जल चढ़ाने के लिए कांवरियों का जत्था रविवार को विजयगढ़ दुर्ग व मीरजापुर से गंगाजल लेने के लिए रवाना हुआ। आज सुबह जल लेकर शिवद्वार मंदिर में जल चढ़ाएंगे। रविवार को भी श्रद्धालुओं ने उमा महेश्वर का दर्शन पूजन कर जलाभिषेक किया। मंगला आरती के बाद श्रद्धालुओं को दर्शन पूजन के लिए गर्भगृह का कपाट खोल दिया गया। भक्तों ने शिवलिंग पर जलाभिषेक किया। उमामहेश्वर का दर्शन पूजन कर आशीर्वाद लिया। महिलाएं पुरुष बच्चे तथा कुछ कांवरियो ने भगवान भोलेनाथ तथा माता पार्वती के अनोखे विग्रह का दर्शन कर मनोकामना की। संपूर्ण श्रावण मास तक लाखों की संख्या में श्रद्धालु भक्तों का आगमन मंदिर में होता है। क्षेत्रीय लोगों के अलावा पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़, मीरजापुर, भदोही के श्रद्धालु भक्त तन मन श्रद्धा सहित उमा महेश्वर के दर्शन के लिए पहुंचते हैं। रविवार को घोरावल कस्बा व आसपास के गांव विद्यालय मे कांवरियों की टोली आराम करते देखी गई। रिमझिम फुहारों के बीच भक्ति गीतो पर थिरकते कांवरिया मंदिर में जल चढ़ाने के लिए आगे बढ़ते रहे। बोल बम बोल बम से क्षेत्र गूंजता रहा। जिसमें 8 साल से लेकर 60 साल तक के श्रद्धालुओं को देखा गया।

तीस हजार से ज्यादा कांवड़ियों के पहुंचने की उम्मीद

श्रावण मास के चौथे सोमवार को कांवरियों की भीड़ शिवद्वार मे होगी। कांवर यात्रा मे घोरावल नगर व ग्रामीण इलाकों तथा मीरजापुर क्षेत्र तथा विजयगढ़ क्षेत्र आदि गांवो से मिलाकर 30 हजार से अधिक भक्त दर्शन के लिए आएंगे। कांवरिया परिधानों से पटा रहा। कांवर ढ़ोने के लिए श्रद्धालु भक्तों में युवक युवतियां के अलावा महिलाएं व बच्चे भी शामिल है। मीरजापुर शहर के बरिया घाट से गंगा जल भरकर घोरावल होते हुए शिवद्वार मंदिर तक लगभग 70 किलोमीटर की यात्रा होती है। इसके अलावा कांवरियों की सेवा के लिए कई स्थानो पर सामाजिक संगठनों ने सेवा शिविर का आयोजन किया है। श्रावण के चौथे रविवार व सोमवार के लिए सुरक्षा व्यवस्था मजबूत की गयी। सोमवार को शिवद्वार सावन मेला सकुशल संपन्न कराने के लिए भारी मात्रा में पुलिस फोर्स है। इस बार भी कांवरियों की भीड़ ज्यादा रहेगी। इसलिए दो पुलिस क्षेत्राधिकारी ओबरा व घोरावल, छह इंस्पेक्टर, 24 की संख्या मे उपनिरीक्षक, लगभग 24 कांस्टेबल व हेड कांस्टेबल तथा लगभग तीन दर्जन महिला कांस्टेबल ड्यूटी दे रहीं हैं। इसके अलावा एडिशनल एसपी व उपजिलाधिकारी मौजूद रहेंगे।

गुप्तकाशी यात्रा 13 से

पंच संकल्प के साथ पंच तत्व संरक्षण को समर्पित पंच दिवसीय गुप्तकाशी दर्शन पुजन यात्रा 13 अगस्त से सोन त्रिवेण संगम गोठानी स्थित बाबा सोभनाथ मंदिर से प्रारंभ होगी। यात्रा 18 अगस्त को गंगा स्नान कर गुप्त काशी के प्रमुख जल श्रोतो नदियो के जल से बाबा विश्वनाथ का जलाभिषेक दर्शन पुजन कर पूरा किया जाएगा।

बेपटरी हुई कोयला लदी मालगाड़ी

●एमजीआर रेलवे लाइन पर रविवार को कोयला लोड़ मालगाड़ी की दो बोगी पटरी से डिरेल हो गयी, इससे तापीय परियोजना के लिये कोयला ढुलाई कार्य के साथ रेल यातायात भी घंटों प्रभावित रहा

सोनभद्र।ग्राम बांसी स्थित 132 केबी सब स्टेशन के सामने एमजीआर रेलवे लाइन पर रविवार को कोयला लोड़ मालगाड़ी की दो बोगी पटरी से डिरेल हो गयी। इससे तापीय परियोजना के लिये कोयला ढुलाई का कार्य प्रभावित हो गया। एनसीएल की खड़िया कोल परियोजना से रविवार को लगभग 11 बजे एक मालगाड़ी कोयला लेकर अनपरा तापीय परियोजना को आ रही थी। ग्राम बांसी के समीप मालगाड़ी की दो बोगी पटरी से उतर गयी। तीसरी बोगी पर भी आंशिक असर पड़ा। मालगाड़ी में 34 बोगी कोयला लोड़ लेकर जुड़ी थी। बोगी डिरेल होते ही वहां अफरा-तफरी मच गयी। मौके पर तापीय परियोजना के अधिकारी पहुंच डिरेल बोगी को पटरी पर लाने की कवायद में जुट गये। उत्पादन निगम की ओर से अनपरा अ, ब, द तथा मेघा पावर डिविजन में रेल मार्ग से कोयला ढुलाई के लिये दो लाइन बिछाई गयी है। एक लाइन से लोड़ ट्रेन तथा दूसरी लाइन से खाली मालगाड़ी आवागमन करती है। निगम की ओर से अपनी निजी बोगी, इंजन एवं रेल पटरी की व्यवस्था की गयी है। लोड़ लाइन पर बोगी डिरेल होने से उस लाइन से आवागमन ठप हो गया है। दूसरी लाइन से आवागमन चालू है। आशंका जतायी जा रही है कि बारिश की वजह से रेल पटरी के नीचे की मिट्टी दबने से घटना घटित हुई है। परियोजना के अभियंता एसपी यादव ने बताया कि डिरेल बोगी को पटरी पर लाने के लिये तेजी से कार्य जारी है। सोमवार की अपराह्न तक बोगी को पटरी पर लाकर पूर्णतया आवागमन बहाल कर लिया जायेगा। कोयला ढुलाई पर ज्यादा प्रतिकूल असर नहीं पड़ेगा। दूसरी रेल लाइन से कोयला ढुलाई जारी रहेगा। मौके पर अभियंता अमरनाथ यादव समेत अनपरा व मेघा पावर डिविजन के तमाम अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण कर आवश्यक सुझाव दिए। घटना के कारणों की जांच की जा रही है।

कानून मंत्री मेघवाल से मिले हाईकोर्ट बार के पदाधिकारी

अधिवक्ताओं की समस्याओं को लेकर हुई गहन मंत्रणा

प्रयागराज। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने शुक्रवार को नई दिल्ली में कानून मंत्री भारत सरकार अर्जुन राम मेघवाल से उनके आवास पर मुलाकात की। यह मुलाकात 16 जुलाई को कानून मंत्री के बार एसोसिएशन के ऐतिहासिक लाइब्रेरी हाल में उनके द्वारा दिए गए आमंत्रण के आधार पर की गई। इस मौके पर कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने खुद के द्वारा लिखी गई किताब एक सफर हम सफर के साथ एवं दिव्य पथ दाम्पत्य का संस्करण बार के पदाधिकारियों को भेंट की। इस मौके पर पदाधिकारियों का स्वागत कानून मंत्री और उनकी पत्नी ने किया। इस दौरान अधिवक्ताओं की समस्याओं पर भी विचार विमर्श किया गया। इस संबंध में पदाधिकारियों ने एक ज्ञापन भी कानून मंत्री को दिया। जिसमें प्रमुख मुद्दा न्यायमूर्ति के रिक्त पदों का रहा। साथ ही यह कहा गया कि न्यायमूर्ति की नियुक्ति में सामाजिक समरता का ध्यान रखा जाए। न्यायमूर्ति की नियुक्ति उन्हीं अधिवक्ताओं में से की जाए जो इलाहाबाद हाईकोर्ट और उसकी खंडपीठ लखनऊ के ही हों। अन्य प्रदेशों के अधिवक्ताओं की नियुक्ति यहां पर न की जाए। साथ ही एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट अधिवक्ताओं के स्वास्थ संबंधी मेडिकल इंश्योरेंस हाईकोर्ट बार में अत्याधुनिक लाईब्रेरी बनाने पर भी चर्चा की गई। अधिवक्ताओं के आवास के लिए अधिवक्ता कालोनी के निर्माण नो प्रॉफिट नो लॉस पर प्रदान किए जाने के सम्बन्ध में भी कानून मंत्री से चर्चा की गई। तमाम विषयों को लेकर कानून मंत्री ने प्रमुख सचिव न्याय राज कुमार गोयल को उचित कदम उठाने के लिए निर्देशित किया। इस दौरान बार के पदाधिकारियों ने फूलपुर के सांसद प्रवीण पटेल से भी मुलाकात की। इस अवसर पर अपर महान्यायवादी भारत सरकार शशि प्रकाश सिंह उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य स्थाई अधिवक्ता तृतीय मनोज कुमार सिंह बार के उपाध्यक्ष नीरज त्रिपाठी नीलम शुक्ला संयुक्त सचिव प्रशासन सुमित कुमार श्रीवास्तव संयुक्त सचिव प्रेस पुनीत कुमार शुक्ला संयुक्त सचिव महिला आंचल ओझा कोषाध्यक्ष रणविजय सिंह उदीशा त्रिपाठी किरण सिंह मनीषा सिंह अभिषेक मिश्रा अभिषेक तिवारी सच्चिदानंद यादव दिनेश यादव राजेश शुक्ला सर्वेश्वर लाल श्रीवास्तव वेद प्रकाश ओझा बलदेव शुक्ल बृजेश कुमार सिंह सेंगर उपस्थित रहे।

मण्डलायुक्त ने सम्भावित बाढ़ के दृष्टिगत भ्रमण कर किया निरीक्षण

मीरजापुर मण्डलायुक्त डॉ0 मुथुकुमार स्वामी बी0 एवं जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने आज विकास खण्ड कोन के ग्रात हरसिंघपुर व तिलठी में भ्रमण कर सम्भावित बाढ़ के दृष्टिगत बचाव एवं राहत कार्य की तैयारियों का निरीक्षण किया। मण्डलायुक्त ने उप जिलाधिकारी सदर को निर्देशित करते हुये कहा कि गंगा नदी के किनारे के गांव को विशेष निगरानी रखी जाए तथा आकस्मिक स्थिति से बचाव हेतु सुरक्षात्मक उपायों का प्रबन्ध पहले से ही सुनिश्चित किया जाए ताकि यदि बाढ़ की स्थिति बनती है तो उससे लोगो का बचाव किया जा सकें। उन्होने बाढ़ से बचाव के लिए प्रत्येक बिन्दुओं पर की गयी तैयारियों के बारे में जानकारी लेते हुये आवश्यक दिशा निर्देश दिया। तत्पचात मण्डलायुक्त व जिलाधिकारी ने तिलठी के जूनियर हाईस्कूल में बनाए गए बाढ़ राहत चैकी का भी निरीक्षण किया गया। इस दौरान एन0डी0आर0एफ0 के द्वारा की गयी तैयारियों व रक्षा हेतु रखे गए सामानों/उपकरणो का निरीक्षण कर जानकारी ली गयी। उप जिलाधिकारी सदर ने बताया कि वर्तमान में कोई भी गांव व कृषि फसल बाढ़ से प्रभावित नही है तत्पश्चात जिलाधिकारी ने जूनियर हाईस्कूल तिलठी के निरीक्षण के दौरान क्षतिग्रस्त बाउंड्रीवाल को बवनाने एवं पुराने क्षतिग्रस्त भवन को ध्वस्त कराकर एक बड़ा हाल बनाए जाने हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वि0श्रा0 शिव प्रताप शुक्लए उप जिलाधिकारी सदर आसाराम वर्माए क्षेत्राधिकारी सदर मंजरी राव के अलावा सम्बन्धित ब्लाक व राजस्व विभाग के कर्मी उपस्थित रहें।

चुनौतियों पर डाला प्रकाश

प्रयागराज। आईटीसी सनफीस्ट हमेशा से ही लोगों को कुछ नया और खास अनुभव प्रदान करने के लिए मशहूर रहा है। इसी कड़ी में आईटीसी सनफीस्ट ने आज मुर्गी और गायों के बीच अपनी अनोखी कॉन्फ्रेंस की अयोजन की है। कॉन्फ्रेंस में प्रतिनिधियों के बीच एक चर्चा हुई। जहां उन्होंने अच्छा पोषण प्रदान करने में उनके योगदान पर जोर देते हुए बच्चों के लिए दूध और अंडे को अधिक आकर्षक बनाने की चुनौतियों पर विनोद पूर्वक प्रकाश डाला। सम्मेलन में साधारण बातचीत के बाद एक बड़ी पैनल चर्चा आयोजित की गई। इस चर्चा में विभिन्न क्षेत्रों की जानी मानी हस्तियां शामिल हुईं। जिसमें मदन मोहन मैती डॉ दुलाल चंद्र सेन डॉ अनन कोनिका बनर्जी अर्चना सिन्हा उपस्थित रहीं। पैनल ने इस बात पर जोर दिया कि बच्चों के विकास के सालों में अंडा और दूध दोनों ही बेहद महत्वपूर्ण होते हैं।

डीआरएम ने किया पौधरोपण

प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए अभियान एक पेड़ मां के नाम को आगे बढ़ाते हुए रविवार को उत्तर मध्य रेलवे में वृहद पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर अनिमेष कुमार सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक हिमांशु बडोनी मण्डल संत निरंकारी मिशन के जोनल इंचार्ज अशोक सचदेव के नेतृत्व में टैक मशीन ट्रेनिंग सेंटर सूबेदारगंज प्रयागराज में परिसर की साफसफाई एवं वृहद वृक्षारोपण का आयोजन किया गया। रेलवे में क्लस्टर वृक्षारोपण का यह पहला प्रयोग था। जिसके तहत जामुन आम आंवला कटहल नीम शहतूत आदि के 125 से ज्यादा पौधे लगाए गए।कार्यक्रम का आयोजन मुख्य पर्यावरण प्रबंधक शिवाजी कदम की तरफसे किया गया। कार्यक्रम में रेलवे के विभिन्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के उपरांत मण्डल रेल प्रबन्धक हिमांशु बडोनी ने पर्यावरण से संबन्धित कई महत्वपूर्ण बातें भी बताई। इस मौके पर अतुल सिंह रोलिंग स्टॉक इंजीनियर संजय अस्थाना प्रधानाचार्य के साथ ही संत निरंकारी मिशन की तरफसे सौ से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया।

दो दिवसीय 35वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता का आयोजन

मुगलसरायश्चन्दौली । केन्द्रीय विद्यालय पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर के ऑडिटोरियम में दो दिवसीय 35वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता ;संभाग स्तरीयद्ध का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती दर्शना सिंह राज्यसभा सांसद एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में चेतनारायण सिंह पूर्व विधान परिषद सदस्यए डॉ अजय कुमार मिश्रए उपायुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन वाराणसी संभागए दिनेश चंद मीणा सहायक आयुक्तए प्राचार्य केके भारतीए प्राचार्य केवि मिर्जापुर डॉ अजय सिंह एवं प्राचार्य केवि गाजीपुर डॉ विनीता सिंह ने दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन किया । इस अवसर पर सांसद दर्शना सिंह ने कहा कि आज इस कार्यक्रम को देखकर लगा कि वास्तविक लोकसभा की प्रक्रिया हमारे सामने हो रही है । ये हमारे देश के भावी भविष्य देश के लोकतांत्रिक गतिविधि को और मजबूत करेंगे । चेतनारायण सिंह ने कहा कि इस उम्र में लोकतांत्रिक एवं संसदीय गतिविधि से अवगत होकर बच्चे नए भारत के निर्माण में अपना योगदान देंगे । इस प्रतियोगिता में वाराणसी संभाग के विद्यालयों केवि बीएचयूए केवि डीएलडब्ल्यूए केवि अमहट सुल्तानपुरए केवि मनौरी प्रयागराजए केवि एफसीआई गोरखपुर एवं केवी गाजीपुर तथा केवि सिद्धार्थनगर के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया । निर्णायक मंडल के रूप में चेतनारायण सिंहए दिनेश चंद मीणा एवं डॉ अजय सिंह प्राचार्य ने अपना निर्णय देकर उचित टीम को विजेता बनाया । कार्यक्रम में संयोजक के रूप में सीबी प्रसाद तथा व्यवस्था समन्वयक के रूप में मीडिया प्रभारी एवं शिक्षिका चारू भारद्वाज में अमूल्य योगदान दिया ।

अधिकारी आइजीआरएस पर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें

अंबेडकर नगर। जिलाधिकारी अविनाश सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में मुख्यमंत्री की सर्वोच्च प्राथमिकता आईजीआरएस पोर्टल की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी द्वारा विभागवार ऑनलाइनए मुख्यमंत्री संदर्भ समेत अन्य बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा किया गया। उन्होंने संबंधित विभाग के अधिकारियों को कड़े निर्देश देते हुए कहा कि किसी भी विभाग में डिफाल्टर नहीं होना चाहिए।आईजीआरएस का निस्तारण ससमय गुणवत्ता पूर्ण होना चाहिए और भविष्य में ध्यान रखा जाए कि डिफाल्टर संदर्भ न होने पाए। बैठक के दौरान जिलाधिकारी द्वारा सभी कार्यालयाध्यक्ष को निर्देश दिया गया कि आख्या अपलोड करने से पहले आप सभी स्वयं से देखें बिना देखें कोई आख्या अपलोड न किया जाए। अन्यथा की स्थिति में कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जायेगी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि शिकायतकर्ता से संबंधित अधिकारी निस्तारण से पूर्व वार्ता करें। बैठक के दौरान जिलाधिकारी द्वारा अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि आइजीआरएस को गंभीरता से लेते हुए ससमय गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें बैठक के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ राजकुमारएअपर जिलाधिकारी डॉण्सदानंद गुप्ताए उप जिलाधिकारीए जिला विकास अधिकारी उपस्थित रहे।

13 ने पंजीकरण किया सरेंडर, आठ स्कूली वाहन निलंबित

सोनभद्र।स्कूली वाहनों के फिटनेस को लेकर प्रशासनिक कवायद का असर दिखने लगा है। लगातार जांच व नोटिस के बाद 13 स्कूली वाहनों के संचालन में असमर्थता व्यक्त करते हुए उसे सरेंडर कर दिया गया। इसके अलावा तय समय के अंदर फिटनेस न कराने पर आठ स्कूली वाहनों का पंजीकरण निलंबित कर दिया गया है। चेतावनी भी जारी किया गया है कि अगर सड़क पर सरेंडर व निलंबित कुल 21 वाहनों का संचालन मिलता है तो सीज के साथ-साथ स्कूल प्रबंधन पर मुकदमा पंजीकृत कराया जाएगा। जनपद में 345 छोटे-बड़े वाहन स्कूल वाहन के रूप में पंजीकृत हैं। इसमें से 48 वाहनों का समय सीमा के अंदर फिटनेस का कार्य नहीं हुआ। इसके बाद लगातार स्कूल प्रबंधन को नोटिस जारी करके फिटनेस के लिए कहा गया। दस अगस्त से पहले इसे पूरा कराने का निर्देश सहायक संभागीय परिवहन कार्यालय ने समय निर्धारित किया था। शनिवार तक 13 स्कूली वाहनों के संचालन में असमर्थता व्यक्त करते हुए स्कूल प्रबंधन ने सरेंडर फार्म भरा, इसके अलावा आठ स्कूली वाहनों का पंजीकरण विभाग ने निलंबित कर दिया। चेतावनी दिया कि अगर किसी भी सूरत में उक्त वाहन सड़क पर संचालित होते हैं तो कार्रवाई तय है। एआरटीओ प्रशासन धनवीर यादव ने बताया कि 48 स्कूल वाहन स्वामियों को नोटिस भेजकर फिटनेस कराने का निर्देश दिया गया था।

घर-घर शान के साथ फहरेगा तिरंगा

भाजपा का दो लाख तिरंगा झंडा फहराने का होगा लक्ष्य

प्रयागराज। हर घर तिरंगा अभियान को लेकर भाजपा कार्यालय सिविल लाइन में भारतीय जनता पार्टी प्रयागराज महानगर के पार्षद गणों की बैठक रविवार को आयोजित की गई। इस अवसर पर महापौर गणेश केसरवानी एवं महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्रा ने पार्षदों से कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में स्वतंत्रता के अमृत काल महोत्सव से शुभारंभ किया गया हर घर तिरंगा अभियान सिर्फ अभियान नहीं बल्कि अब राष्ट्रीय महोत्सव का पर्व बन चुका है। जो इस वर्ष भी 13 अगस्त से 15 अगस्त तक भारतीय जनता पार्टी मनाने जा रही है। कहा कि हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत सभी पार्षद अपने वार्डों में पार्टी के द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मंडल एवं वार्ड स्तर के कार्यकर्ताओं के साथ समन्वय बनाकर अपने वार्डों के प्रत्येक घरों में संपर्क करते हुए तिरंगा लगवाएं और वार्ड में स्थित सभी क्रांतिकारियों एवं महापुरुषों की प्रतिमाओं पर स्वच्छता अभियान चलाकर उन्हें माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित करें। 14 अगस्त को पार्टी के द्वारा निर्धारित कार्यक्रम भारत विभाजन विभीषिका स्मृति व्याख्यान माला एवं पदयात्रा में शामिल होकर कार्यक्रम को सफल बनाएं और 15 अगस्त के दिन अपने प्रत्येक वार्डों में ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित करना है। हर घर शान के साथ फहरेगा तिरंगा झंडा इस लक्ष्य को हमें सफल बनाना है। जिला प्रवक्ता राजेश केसरवानी ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी के द्वारा प्रयागराज महानगर में दो लाख झंडा लगवाने का लक्ष्य रखा गया है। बैठक में क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अवधेश चंद्र गुप्ता भाजपा पार्षद दल की मुख्य सचेतक किरन जायसवाल वरुण केसरवानी रमेश पासी राजेश केसरवानी विवेक मिश्रा गिरिजेश मिश्रा राजन शुक्ला मंडल अध्यक्ष विजय श्रीवास्तव और भाजपा के सभी माननीय पार्षद उपस्थित रहे।फोटोत्र बैठक करते महापौर उमेश चंद्र गणेश केशरवानी।

तिरंगा यात्रा निकाल भरा देशभक्ति का जोश

सोनभद्र।भारतीय जनता युवा मोर्चा ने रविवार को घोरावल व राबर्ट्सगंज विधानसभा में तिरंगा यात्रा निकाली। राबर्ट्सगंज विधानसभा में यात्रा का नेतृत्व जिलाध्यक्ष नन्दलाल व घोरावल विधानसभा में विधायक अनिल मौर्या रहे। जिलाध्यक्ष ने कहा कि हर घर तिरंगा यात्रा निकालने का मूल उद्देश्य लोगों के अंदर देशभक्ति का जज्बा पैदा करना है। कहा कि हम लोगों का प्रयास है कि 15 अगस्त को जनपद के हर घर पर तिरंगा झंडा लहराते मिले। तिरंगे के साथ सेल्फी लेकर अपने इंटरनेट मीडिया एकाउंट पर पोस्ट करे। इस मौके पर कृष्णमुरारी गुप्ता, विशाल पांडेय, बृजेश श्रीवास्तव, सुरेंद्र अग्रहरि, रजनीश रघुवंशी, विनय श्रीवास्तव, उत्कर्ष पाण्डेय, आशीष केशरी आदि रहे। घोरावल कस्बे में रविवार को भाजयुमो कार्यकर्ताओं ने तिरंगा यात्रा निकालकर स्वतंत्रता दिवस के प्रति जन जागरण किया गया। घोरावल बाईपास खुटहा से यात्रा की शुरुआत की गई। यात्रा घोरावल-राबर्ट्सगंज मार्ग, मुख्य तिराहा, मुक्खा तिराहा बाजार होते हुए दुर्गा मंदिर तिराहा पर संपन्न हुई। कार्यकर्ताओं ने भारत माता की जय, वंदे मातरम् के नारे लगाते हुए बाइक से तिरंगा यात्रा निकाली। लोगों में बड़ा उत्साह दिखाई पड़ा।

प्रमुख स्थलों की हुई साफ-सफाई

गाजीपुर। हर घर तिरंगा अभियान में आज महापुरुषोंए स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों तथा शहिदों के प्रतिमा एवं प्रतिमा स्थलों के साफसफाई के पहले दिन भाजपा जिला महामंत्री अवधेश राजभरए वरिष्ठ नेता संकठा प्रसाद मिश्र तथा मंडल अध्यक्ष मन्नू राजभर के नेतृत्व मे बिरनो मंडल के ग्राम कहोतरीए ग्राम बिहरा तथा पलिया ग्राम स्थित डा भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा एवं पार्क बिरनो थाने के गेट पर अमर शहीद कमलेश सिंह तथा ब्लाक परिसर स्थित शहीद निरंजन राजभर के प्रतिमाओं की साफसफाई की गई। इस अवसर पर पंकज रायए राजेश रामए सुनील कुशवाहा उपस्थित थे।

यूनुस को जिम्मेदारी
मोदी की मुबारकवाद

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बांग्लादेश के नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस को उनके बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का प्रमुख बनने पर मुबारकवाद दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक्स' पर मुबारकवाद देते हुए बांग्लादेश में वर्तमान राजनीतिक उथलपुथल के बीच हिंदुओं व अन्य अल्पसंख्यकों की दयनीय दशा पर चिन्ता प्रकट की है। मोहम्मद यूनुस ने अपनी ओर से कानून-व्यवस्था बहाल करने की अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया। इस बीच भारत सरकार ने विभिन्न चैनलों के माध्यम से क्षेत्रीय स्थायित्व के लिए अल्पसंख्यकों की स्थिति के बारे में अपनी चिन्ताओं पर जोर दिया है। सीमा पार कर भारत में आने का प्रयास करने वाले सैकड़ों लोगों को सीमा सुरक्षा बल ने वापस भेजा है। बांग्लादेश में स्थिति अस्थिर बनी हुई है क्योंकि विरोध प्रदर्शन की शुरुआत करने वाले छात्रों पर 'दुष्ट तत्व' हावी हो गए हैं जो स्थिति का लाभ उठा कर लूट और आगजनी में लिप्त हैं तथा वे जनता का व्यापक समर्थन जुटाने के लिए अल्पसंख्यकों पर हमले कर रहे हैं। धीरे-धीरे पर निश्चित रूप से बांग्लादेश में राजनीतिक तनाव ने सांप्रदायिक तनावों को भी भड़का दिया है। जनसंख्या का 8-10 प्रतिशत हिस्सा हिंदू अल्पसंख्यक अत्याचारों का बुरी तरह शिकार बने हैं। हालिया खबरों से संकेत मिलता है कि हिंदू मंदिरों, बिजनेसों और घरों पर हमले बढ़ रहे हैं जिससे इस समुदाय में भय और असुरक्षा का माहौल गंभीर रूप ले रहा है।

मोहम्मद यूनुस से प्रधानमंत्री मोदी का संपर्क बांग्लादेश के एक सम्मानित व्यक्ति से संबंध स्थापित करने का सुनियोजित तरीका है

जिनकी अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता और प्रभाव है। मोहम्मद यूनुस से संपर्क कर मोदी बांग्लादेश में मानवाधिकारों तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति भारत के समर्थन का संकेत दे रहे हैं। इसके साथ ही वे हिंदू समुदाय की सुरक्षा और बेहतरी के प्रति अपनी चिन्ता भी प्रकट कर रहे हैं। भारत इस समय दुविधा की स्थिति में है। उसने लगातार शेख हसीना का समर्थन किया है और स्थितियों में आमूल परिवर्तन के बावजूद ऐसा कर रहा है। शेख हसीना अब अपने देश में अलोकप्रिय हो गई हैं, जबकि उनके विरोधी बहुत शक्तिशाली हैं। हसीना को अपने खिलाफ जांच में शामिल होने को कहा जा सकता है जिससे भारत द्वंद्व का शिकार हो सकता है। अच्छी बात है कि मोहम्मद यूनुस को अंतरिम सरकार का प्रमुख बनाया गया है। वे सत्ता के गलियारों में 'बाहरी' व्यक्ति होने के बावजूद एक सम्मानित व्यक्ति हैं और उनका ट्रैक रिकार्ड बेदाग है। कहा जाता है कि चीन और पाकिस्तान ने हसीना के तख्तापलट में सहयोग किया है और वे भारत-बांग्लादेश संबंध खराब करना चाहते हैं, ऐसे में मोहम्मद यूनुस भारत के लिए सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उनको तटस्थ रहने के लिए मनाया जा सकता है। राजनीतिक अस्थिरता तथा सांप्रदायिक हिंसा की संभावना शरणार्थी संकट को जन्म दे सकती है। इससे अनेक हिंदू व अन्य अल्पसंख्यक भारत में शरण मांग सकते हैं। इससे भारत का घरेलू राजनीतिक परिदृश्य खासकर पश्चिम बंगाल और असम के सीमान्त प्रदेशों में जटिल हो जाएगा। बांग्लादेश से व्यापार में गिरावट आई है और शरणार्थी संकट बढ़ रहा है। बांग्लादेश बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में सुरक्षा बनाने में प्रमुख साझीदार है। यह समय गंभीर राजनय का है। प्रधानमंत्री मोदी को शीघ्रातिशीघ्र मोहम्मद यूनुस से मुलाकात करनी चाहिए। हालांकि, ट्विटर राजनय अच्छी शुरुआत है, पर इसके बाद सीधा संपर्क जरूरी हो जाता है। बांग्लादेश में विकास की भावी दिशा भारत के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

बांग्लादेश : अनिश्चितता व अराजकता

बांग्लादेश अतिवादी इस्लामवाद की लहर व बढ़ती हिंसा का शिकार है। ऐसे में वहां लोकतंत्र के भविष्य तथा क्षेत्रीय स्थायित्व पर सवाल उठ रहे हैं।

हिरण्यमय कार्लेकर
(लेखक, द पायनियर के सलाहकार संपादक हैं)

बांग्लादेश में उथलपुथल के कारण शेख हसीना को प्रधानमंत्री के पद से इस्तीफा दे कर भारत में पलायन करना पड़ा। इससे दो सवाल पैदा होते हैं। वे इस स्थिति पर नियंत्रण क्यों नहीं कर सकीं? तथा बांग्लादेश और भारत के लिए भविष्य कैसा होगा?

शेख हसीना छात्रों से संपर्क कर उनको अपने पक्ष में ला सकती थीं क्योंकि उनमें से अधिकांश 'मध्यमार्गी' हैं। इस प्रकार छात्रों के भेदभाव-विरोधी आंदोलन-एडीएसएम के जोर पकड़ने के पहले वे इस्लामवादी कट्टरपंथी अतिवादियों को अलग-थलग कर सकती थीं। वे तर्क दे सकती थीं कि उनकी सरकार ने 2018 में ही 1971 के मुक्ति संग्राम के स्वतंत्रता सेनानियों के वारिसों को 30 प्रतिशत आरक्षण से वंचित कर चुकी थीं। शुरुआत में छात्रों की यही मांग थी। लेकिन बांग्लादेश के उच्च न्यायालय ने अनेक वारिसों की याचिका पर इसे बहाल कर दिया था। वास्तव में, उनकी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ अपील की थी। सर्वोच्च न्यायालय के अपील विभाग ने 21 जुलाई, 2024 को सरकारी नौकरियों में 93 प्रतिशत भर्ती 'मेरिट' के आधार पर करने का निर्देश दिया था और उसने स्वतंत्रता सेनानियों व उनके वारिसों के लिए पांच प्रतिशत आरक्षण का प्राविधान किया था। इसके साथ ही एक-एक प्रतिशत आरक्षण आदिवासियों तथा दिव्यांगों व यौन अल्पसंख्यकों के लिए किया था। लेकिन इसके बावजूद आंदोलन जारी रखने के दो कारण हो सकते हैं।

पहला, सरकार द्वारा आंदोलनकारियों के प्रति कठोर व्यवहार जिसके कारण बड़ी संख्या में छात्रों व अन्य की मौत हुई थी। यह स्थिति इतनी खतरनाक थी कि छात्र आंदोलन वापस नहीं ले सकते थे और अब वे शेख हसीना के इस्तीफे की मांग करने लगे। दूसरा, इस्लामवादी आतंकी संगठन उनके आंदोलन के साथ नजदीकी से जुड़ गए थे और वे हसीना और अवामी लीग सरकार को सत्ता से हटाने के अपने एजेंडे को पूरा करना चाहते थे। इनमें भारतीय उप-महाद्वीप में अलकायदा-एक्यूआईएस से जुड़ा अंसार-अल-इस्लाम, जमातुल मुजाहिदीन बांग्लादेश-जेएमबी, बांग्लोदश जमातुल इस्लामी-बीजेल व उसकी छात्र शाखा बांग्लादेश इस्लामी छात्र शिबिर-बीआईसीएस शामिल हैं। उनका इरादा एक कट्टरपंथी इस्लामवादी सरकार बनाना तथा भारत-विरोधी अवस्थापना स्थापित करना था।

शेख हसीना यह सब जानती थीं और उनको कम से कम चार अवसरों पर बांग्लादेश में आक्रामक छात्र आंदोलन के असर का भी पता था। इनमें पहला 'भाषा आंदोलन' था जिसकी मांग केवल उर्दू के बजाय उसके साथ बांग्ला भाषा को लागू कराना था। उर्दू पाकिस्तान की आधिकारिक भाषा बन गई थी और पश्चिम पाकिस्तान की सत्तारूढ़ अवस्थापना इस पर जोर दे रही थी। पुलिस दमन का सामना करते हुए आंदोलन 21 फरवरी, 1952 को अपने शिखर पर पहुंचा जब देशव्यापी आम हड़ताल का आह्वान किया गया। पुलिस फायरिंग में चार छात्र-रफीक, बरकत, जब्बार और सलाम मारे गए जिनको बांग्लादेश के शहीदों में महत्वपूर्ण स्थान मिला। यह आंदोलन लगातार बढ़ता गया और उसने पाकिस्तान को देश की आधिकारिक भाषा के रूप में उर्दू के साथ बांग्ला को स्वीकार करने पर मजबूर किया। 1958 में जनरल अयूब खान के सैनिक विद्रोह और सैनिक तानाशाही के खिलाफ फिर छात्र आंदोलन भड़का। अयूब सरकार का चरित्र 23 मार्च, 1962 को बनी फर्जी प्रतिनिधिक सरकार के पीछे छिप नहीं सका था। पाकिस्तानी औपनिवेशिक शासन के खिलाफ मुक्ति संग्राम में भी छात्रों ने प्रमुख भूमिका निभाई थी।

पाकिस्तानी सेना ने ढाका व अन्य विश्वविद्यालयों के परिसरों और हास्टलों पर बर्बर हमले किए थे। रात में किए इस कुख्यात हमले का नाम 'आपरेशन सर्चलाइट' था जिसमें सैकड़ों छात्र 25 मार्च, 1971 की रात मारे गए थे। अंतत: फरवरी-मई, 2013 में ढाका में व्यापक 'शाहबाग स्क्वायर आंदोलन' हुआ था जिसने 1971 के युद्ध अपराधियों के लिए मौत की सजा की मांग की थी। सरकार ने इस पर इंटरनेशनल क्राइम्स ट्राइब्यूनल्स एक्ट, 1973 में किए 2009 के संशोधन के अनुसार इंटरनेशनल क्राइम्स ट्राइब्यूनल गठित करने का फैसला किया। इसका उद्देश्य पाकिस्तानी सेना और रज़ाकारों, अल बद्र व अल शम्स के लोगों के खिलाफ जांच कर उनके खिलाफ अभियोजन चलाना था जिन्होंने 1971 के मुक्ति संग्राम के दौरान नरसंहार में भाग लिया था।

इन सबको देखते हुए हसीना को नवीनतम छात्र आंदोलन शुरुआत में ही समाप्त कराने का प्रयास करना चाहिए था। लेकिन अब सवाल है कि बांग्लादेश में अब क्या होगा? और भारत को अब क्या करना चाहिए? वर्तमान स्थिति बहुत खराब है। हिंदू मंदिरों पर हमले हो रहे हैं और उनको लूटा जा रहा है। इनमें प्रख्यात ढाकेश्वरी मंदिर भी शामिल है जिसके नाम पर ढाका बसा था। हिंदू दूकानों, बिजनेस अवस्थापनाओं और घरों पर हमले हो रहे हैं। अवामी लीग से जुड़े एक हिंदू पार्षद की हत्या हुई है, अनेक लोग घायल हुए हैं तथा महिलायें यौन हिंसा का शिकार बनी हैं।

शेख मुजीबुर रहमान की मूर्तियां गिराई गई हैं या उनको नुकसान पहुंचाया गया है। अवामी लीग के मंत्रियों, नेताओं और एक्टिविस्टों पर हमले हुए हैं और उनके घरों व बिजनेसों को नष्ट किया गया है। खुलना में अवामी लीग पदाधिकारी मोहसिन रजा समेत तीन की हत्या हुई। शेख मुजीबुर रहमान के जीवन पर फिल्म बनाने वाले मोहसिन रजा और उके बेटे शांतो खान को मार डाला गया। जैसोर में अवामी लीग नेता के एक होटल में आग लगाई गई जिसमें 24 लोग मर गए। अवामी लीग सांसद व पूर्व बांग्लादेश टेस्ट क्रिकेटर माशराफ मुर्तजा का घर नष्ट कर दिया गया। ये इस्लामवादी कट्टरपंथियों का विरोध करने वाले अल्पसंख्यकों, अवामी लीग समर्थकों तथा सिविल सोसाइटी तत्वों पर हुए हमलों के केवल कुछ उदाहरण हैं। सवाल है कि अब चीजें सुधरेंगी या और खराब होंगी। बहुत कुछ अंतरिम सरकार पर निर्भर करेगा जिसका नेतृत्व नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस कर रहे हैं। क्या वे व्यवस्था स्थापित करने में सफल होंगे और वर्तमान हिंसा का कारण बने बीजेल, बीआईसीएस और अंसारुल इस्लाम के समर्थकों पर लगाम लगेगी या स्थिति और खराब होने दी जाएगी। इनमें बेगम खालिदा जिया के नेतृत्व वाली बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी-बीएनपी के नेता भी शामिल हैं। मोहम्मद यूनुस न कट्टरपंथी हैं और न घोषित भारत-विरोधी। लेकिन उनके अनेक साथियों की पृष्ठभूमि सवाल खड़े करती है। सेना की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। खबर है कि वहां शेख हसीना-समर्थक तत्वों या ऐसे लोगों का सफाया किया जा रहा है जो शांतिपूर्ण, लोकतांत्रिक व सहिष्णु बांग्लादेश की इच्छा रखते हैं। यह स्थिति अत्यधिक चिन्ताजनक है। अंतरिम सरकार गठन के बावजूद सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह देखना होगा कि भावी संसदीय चुनाव कितने स्वच्छ व स्वतंत्र होंगे। बांग्लादेश की राष्ट्रीय संसद को भंग कर दिया गया है, इसलिए अंतरिम सरकार को जल्द ही देश में संसदीय चुनाव कराने होंगे।

नई दिल्ली ने उचित ही बांग्लादेश की स्थितियों पर गहरी नजर बनाए रखी है। बांग्लादेश में 2001 से 2006 तक शासन करने वाली बीएनपी-जमात नीत गठबंधन सरकार पूरी तरह भारत-विरोधी थी। उसने सक्रिय रूप से भारत के पूर्वोत्तर में सक्रिय अलगाववादी समूहों को न केवल अपने देश में शरण दी थी, बल्कि हथियारों से लैस भी किया था। नई दिल्ली यह बिल्कुल नहीं चाहती है कि बांग्लादेश में ऐसी सरकार बने जो पुरानी सरकार की तरह भारत-विरोधी हो।

इस बीच विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा है कि वे बांग्लादेश की घटनाओं में 'विदेशी हाथ' की संभावनाओं को खारिज नहीं करते हैं। हालांकि, अपने पद को देखते हुए उनको अपने शब्दों के प्रति सतर्क रहना होता है। लेकिन इसके बावजूद यह पूर्णत: स्पष्ट है कि पाकिस्तान की आईएसआई तथा संभवत: चीन का भी इन घटनाओं में हाथ है। पाकिस्तान को अपने ही पाले-पोसे तालिबान से गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और चीन को भी इस्लामवादियों से परेशानी हो रही है। ऐसे में उनको विलियन एस. बैरिंग-गोल्ड की लिमरिक याद करनी चाहिए-'रीगा की एक युवा महिला ने शेर पर सवारी की। यात्रा समाप्त होने पर महिला शेर के पेट में थी और शेर मुस्करा रहा था।' कट्टरपंथी इस्लामवाद रूपी शेर पर सवारी करने वालों को यह सबक याद रखना चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए समग्र दृष्टिकोण

ईशान शिवानंद
(लेखक मानसिक स्वास्थ्य शोधकर्ता हैं)

इस बात को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त वैज्ञानिक प्रमाण हैं कि मन, शरीर और आत्मा सूक्ष्म स्तर पर आपस में जुड़े हुए हैं। यह संबंध हमारे विचारों और भावनाओं को प्रभावित करता है, इसलिए, हमारी भौतिक वास्तविकता और हमारी शारीरिक स्थिति हमारे मानसिक स्वास्थ्य और प्रक्रियाओं को प्रभावित करती है।

सच्चे स्वास्थ्य का संकेत मन और शरीर के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन से मिलता है। यहां तक कि एक मामूली असंतुलन भी शारीरिक बीमारियों और मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों से लेकर खुद और जीवन के साथ अधूरेपन की भावना तक कई तरह की समस्याओं को जन्म दे सकता है। मानसिक स्वास्थ्य के लगभग 80 प्रतिशत मामले निम्न और मध्यम आय वाले देशों में होते हैं। अवसाद और चिंता जैसी स्थितियां दुनिया की लगभग 9 प्रतिशत आबादी को प्रभावित करती हैं और विकलांगता के साथ जीने वाले 10 प्रतिशत से अधिक वर्षों के लिए जिम्मेदार हैं। फार्मास्युटिकल उपचार लंबे समय से मानसिक स्वास्थ्य सेवा की आधारशिला रहे हैं, जो गंभीर मामलों के प्रबंधन और स्थिरीकरण में सहायता करते हैं। ये लक्षित उपचार बायोमार्कर के आधार पर विशिष्ट रोग तंत्र को संबोधित करते हैं, जिससे अधिक व्यक्तिगत उपचार होता है। चिकित्सा प्रौद्योगिकी की प्रगति इन उपचारों की प्रभावकारिता को बढ़ाती है और रोगी के परिणामों में सुधार करती है। हालांकि, अकेले दवा पर निर्भरता अक्सर मानसिक स्वास्थ्य की समग्र प्रकृति को नजरअंदाज कर देती है।

एकीकृत स्वास्थ्य दृष्टिकोण, विशेष रूप से योगिक तौर-तरीकों जैसे भारतीय ज्ञान प्रणालियों में निहित, पारंपरिक दवा उपचारों के लिए एक आशाजनक पूरक प्रदान करते हैं। श्वास क्रिया और ध्यान संबंधी प्रोटोकॉल का संयोजन व्यक्तियों को गैर-निर्णयात्मक जागरूकता की एक उच्च अवस्था में प्रवेश करने में मदद करता है। वे आराम और पाचन या विश्राम की एक शारीरिक स्थिति को सक्षम करते हैं, जो उड़ान-या-लड़ाई तनाव प्रतिक्रिया के विपरीत है। तनाव प्रतिक्रिया में यह रुकावट मन और शरीर के बीच संतुलन और

एकता की भावना को बढ़ावा देने में मदद करती है। योग अभ्यास भी कुछ सिद्धांतों पर आधारित हैं। मानव शरीर एक समग्र इकाई है जिसमें एक दूसरे से अविभाज्य विभिन्न परस्पर संबंधित आयाम शामिल हैं। किसी एक आयाम का स्वास्थ्य या बीमारी अन्य को प्रभावित करती है। दूसरे, प्रत्येक व्यक्ति की ज़रूरतें अद्वितीय होती हैं और उन्हें इस व्यक्तित्व को स्वीकार करने वाले अनुरूप अभ्यासों के साथ संपर्क किया जाना चाहिए। योगिक तौर-तरीके व्यक्तियों को सशक्त बनाते हैं: उनके उपचारक बनने के लिए, स्वास्थ्य की ओर उनकी यात्रा में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए, और स्वायत्तता को बढ़ावा देने के लिए। साथ ही, किसी व्यक्ति के मन की गुणवत्ता और स्थिति उपचार के लिए महत्वपूर्ण है। सकारात्मक मन-स्थिति उपचार को गति प्रदान करती है, जबकि नकारात्मक मन-स्थिति इसे लम्बा खींच सकती है। लगातार योगाभ्यास अवसाद को कम करने में कारगर साबित हुआ है, जिससे सेरोटोनिन के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि होती है और मोनोमाइन ऑक्सीडेज में कमी आती है, जो एक एंजाइम है जो न्यूरोट्रांसमीटर और कोर्टिसोल को तोड़ता है। योग-आधारित हस्तक्षेप हाइपोथैलेमस के सहानुभूति क्षेत्र को बाधित करके अवसादग्रस्तता विकारों, तनाव और चिंता को प्रबंधित करने में भी मदद करते हैं। यह अवरोध तनावपूर्ण उत्तेजनाओं के लिए शरीर की प्रतिक्रियाओं को अनुकूलित करता है और तनाव से जुड़े स्वायत्त विनियामक प्रतिवर्त तंत्र को पुनर्स्थापित करता है। इसके अलावा, योगाभ्यास भय, आक्रामकता और क्रोध के लिए जिम्मेदार क्षेत्रों को बाधित करते हैं, जबकि मस्तिष्क में आनंद केंद्रों को उत्तेजित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आनंद की स्थिति और कम चिंता होती है। योग और ध्यान के नियमित अभ्यास करने वालों को हृदय गति, श्वसन दर, रक्तचाप और हृदय उत्पादन में कमी का अनुभव होता है।

मानसिक स्वास्थ्य से परे, योगिक प्रोटोकॉल कार्डियोरेस्पिरेटरी प्रदर्शन, मनोवैज्ञानिक प्रोफाइल और प्लाज्मा मेलाटोनिन के स्तर में सुधार करते हैं। यह सिस्टोलिक और डायस्टोलिक रक्तचाप, औसत धमनी दबाव और ऑर्थोस्टेटिक सहनशीलता को काफी कम करता है। योग कार्डियोवैस्कुलर दक्षता और होमोस्टैटिक नियंत्रण को भी बढ़ाता है, जिससे बेहतर स्वायत्त संतुलन, श्वसन प्रदर्शन और समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है। अध्ययनों से पता चला है कि योग-आधारित जीवनशैली में बदलाव कोरोनरी घावों के प्रतिगमन में भी सहायता कर सकते हैं और कोरोनरी धमनी रोग (सीएडी) के रोगियों में मायोकार्डियल परफ्यूज़न में सुधार कर सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों से अंतर्दृष्टि का लाभ उठाता है, जिसमें फार्मास्युटिकल उपचारों को गैर-फार्मास्युटिकल ध्यान प्रथाओं के साथ जोड़ा जाता है। यह तालमेल न केवल तत्काल लक्षणों को संबोधित करता है बल्कि दीर्घकालिक रिकवरी और स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देता है। जैसे-जैसे हम आधुनिक जीवन की जटिलताओं से निपटते हैं, प्राचीन प्रथाओं के ज्ञान को अपनाना महत्वपूर्ण है।

योग और अन्य गैर-आक्रामक तरीकों को अपने मानसिक स्वास्थ्य टूलकिट में एकीकृत करके, हम एक संतुलित स्थिति प्राप्त कर सकते हैं जहाँ मन और शरीर सामंजस्य में काम करते हैं। मानसिक स्वास्थ्य के लिए केवल गोलियों से ही रास्ता नहीं बनाया जा सकता; कभी-कभी, यह हमारी सांस को खोजने और खुद को उन अभ्यासों में स्थापित करने जितना ही सरल होता है जो हमें हमारे मूल से जोड़ते हैं।

आप की बात

हॉकी में सफलता

पेरिस ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम ने स्पेन को 2-1 से हराकर भारत के लिए कांस्य पदक जीत कर भारतीयों को अपार खुशी प्रदान की है। सभी भारतीयों के लिए यह ऐतिहासिक अवसर है क्योंकि भारतीय हॉकी ने टोक्यो ओलंपिक में भी कांस्य पदक अर्जित किया था। पेरिस ओलंपिक में भारत की हॉकी यात्रा शानदार रही। भारत ने अपने पहले मैच में न्यूजीलैंड को हराया था। उसके बाद अर्जेंटीना को 1-1 की बराबरी पर रोक दिया था और आयरलैंड को भी हराया था। हालांकि, भारत को एक महत्वपूर्ण मैच में बेल्जियम से हार का सामना करना पड़ा था। लेकिन इसके बाद भारत ने ऑस्ट्रेलिया पर ऐतिहासिक जीत दर्ज की थी। भारतीय हॉकी टीम ने यह करिश्मा 52 वर्ष बाद करके दिखाया था। भारत ने क्वार्टर फाइनल में इंग्लैंड को हराया था, लेकिन सेमीफाइनल में उसे जर्मनी से हार का सामना करना पड़ा था। हालांकि, इसी के साथ ही भारत का गोल्ड मेडल जीतने का सपना भी टूट गया था, पर इस हार के बाद भी भारत ने मनोबल बनाए रखते हुए स्पेन पर जीत दर्ज की। ओलंपिक के बाद संन्यास की घोषणा कर चुके भारत के गोलकीपर श्रीजेश के लिए भी एक यह शानदार और ऐतिहासिक विदाई थी। भारत को अब गांवों तक खेलों को लोकप्रिय बनाने का काम करना चाहिए।

– **वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

सरोज देवी का बयान

खेल का मतलब है प्रेम, सौहार्द और भाईचारा। ओलंपिक प्रतीक का मतलब ही है पांच महाद्वीपों का मिलन। इस बार ओलंपिक में सबसे भावनात्मक क्षण वो था जब नीरज चोपड़ा की मां सरोज देवी ने अरशद नदीम को लेकर कहा-हम बहुत खुश हैं। हमारे लिए तो सिल्वर भी गोल्ड के ही बराबर है। गोल्ड जीतने वाला भी हमारा ही लड़का है। मेहनत करता है। उनके इस बयान की चर्चा न सिर्फ सरहद के इस पार और उस पार हो रही है, बल्कि पूरी दुनिया में इसे मानवता, सद्भाव एवं जुड़ाव के रूप में देखा जा रहा है। सोशल मीडिया पर भी बहुत से लोग यह अपनत्व की भावना व्यक्त करने के लिए नीरज चोपड़ा की माता जी की खूब तारीफ़कर रहे हैं । पूर्व क्रिकेटर शोएब अख़्तर ने लिखा-गोल्ड जिसका है, वो भी हमारा ही लड़का है। ये बात सिर्फ़ एक मां ही कह सकती है। कमाल है। दोनों देशों के मध्य भले ही बंटवारे के बाद आपसी रंजिश, तनाव, युद्ध एवं बैमनस्य वाला माहौल रहा हो, पर इसके बावजूद भारत-पाकिस्तान के बीच अटूट पैतृक संबंध बने हुए हैं। हमारी तहजीब, बोली, पहनावा, रहन-सहनए, संस्कृति व रीत रिवाजों में सबंध बने हुए हैं। तमाम दूरियों के बावजूद सरोज देवी का बयान प्रकाश की किरण की तरह है।

– **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

बांग्लादेश के कट्टरपंथी

बांग्लादेश का जन्म 1971 में भारतीय सेना के शौर्य के गर्भ से हुआ था आज उसी देश के बहुत से लोग मन्दिरों और हिन्दुओं पर हमले कर भारत-विरोधी माहौल बना रहे हैं। खुशी की बात है कि आखिरकार शेख हसीना ने 57 मुस्लिम देशों को छोड़कर भारत को ही अपने लिए सुरक्षित माना। इसका कारण भारत की हजारों वर्ष पुरानी सांस्कृतिक धरोहर पर विश्वास है जिसके चलते भारत ने कभी अपने प्रति विश्वास को आघात नहीं लगने दिया। यह तथ्य भी भुलाया नहीं जाना चाहिए कि 1975 में अपने पिता मुजीबुर रहमान और परिवार के अधिकांश सदस्यों की सैनिक तख्तापलट में हत्या के बाद शेख हसीना को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत में शरण देकर उनकी पूरी सुरक्षा की थी। शेख हसीना 6 साल भारत में रहने के बाद परिस्थितियां अनुकूल होने पर 1981 में बांग्लादेश वापस गई थीं। लेकिन उस देश के मज़हबी कट्टरपंथियों को शेख़ हसीना के रूप में एक उदारवादी नेता पसन्द नहीं है। यह इस तथ्य के बावजूद है कि पिछले 15 साल में बांग्लादेश का उल्लेखनीय आर्थिक विकास हुआ और वह सबसे तेज प्रगति करने वाले देशों में शामिल था। लेकिन दुनिया भर में भीख मांगने वाले पाकिस्तान-समर्थकों को यह बात पसंद नहीं आई।

– **नरेन्द्र टोंक,** मेरठ

बेटियों की भूमिका

प्रधानमंत्री ने दिल्ली में नेशनल कैडेट कोर-एनसीसी की रैली को संबोधित करते हुए कहा था कि कभी बेटियों की भागीदारी केवल सांस्कृतिक आयोजनों तक सीमित रहती थी, लेकिन आज भारत की बेटियां जल,थल, नभ और अंतरिक्ष में भी अपनी क्षमता का लोहा मनवा रही है। वर्तमान में बदलते भारत की तस्वीर का यह यथार्थ है। जीवन के सभी क्षेत्रों में बेटियों की भूमिका लगातार बढ़ रही है। लेकिन इसके साथ ही इन तथ्यों को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए कि उनको आज भी पुरुष वर्चस्व वाले समाज में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। जहां कार्पोरेट जगत में उनको सर्वोच्च पदों पर समुचित स्थान नहीं मिल रहा है, वहीं अनेक ग्रामीण व कस्बाई क्षेत्रों के साथ ही नगरों महानगरों में उनको उत्पीड़न, यौन उत्पीड़न, धोखाधड़ी व लव जिहाद, आदि का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या का एक समाधान पुलिस, अर्धसैनिक बलों व अभियोजन के साथ न्यायपालिका में नीचे से लेकर ऊपर तक महिलाओं को समुचित स्थान देना है। यदि इनमें महिलाओं को 50 प्रतिशत स्थान मिल जाए तो बेटियों की प्रतिभा और निखरेगी।

–**संजय वर्मा,** मनावर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास का जन्मोत्सव समारोह आयोजित किया गया

संवाददाता। अमेठी

अवधी साहित्य संस्थान अमेठी की ओर से श्री शिवप्रताप इंटर कालेज अमेठी के सभागार में गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर श्रीरामचरितमानस की प्रासंगिकता विषयक संगोष्ठी गोष्ठी एवं कवि गोष्ठी का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती जी तथा गोस्वामी तुलसीदास जी के चित्र पर पूजा अर्चना एवं माल्यार्पण से हुआ। विषय का प्रवर्तन करते हुए संस्थान के अध्यक्ष डॉ अर्जुन पाण्डेय ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास जी का नाम इतिहास में सदैव अमिट रहेगा। गोस्वामी जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस दुनिया का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है।यह ग्रन्थ अवध, अवधी एवं अवधी संस्कृति की पहचान है।

गोस्वामी जी द्वारा रचित मानस ग्रन्थ आज न केवल अवध प्रान्त अपितु देश-दुनिया के लगभग पन्द्रह करोड़ से अधिक लोगों की पसन्द बन चुका है। गोस्वामी तुलसीदास जी का भारतीय जनमानस सदैव ऋणी रहेगा। मुख्य अतिथि कैप्टन पी एन मिश्र ने अपने उद्बोधन में कहा कि रत्नावली न होती तो तुलसी तुलसी न बनते। गोस्वामी जी के लिए जरूर अमंगल बने दुनिया के लिए मंगल बने। ज्ञानेन्द्र पाण्डेय अवधी मधुरस ने पढ़ा अवधी हमरौ आन हौ , अवधी हमरौ बान । जाको मीठौ बोलि सुनि, मिसिरी घुलितौ कान ।। रामेश्वर सिंह निराशा ने पढ़ा लहू शत्रु का कश्मीर की घाटी मांग रहा है, राजेंद्र शुक्ल अमरेश ने पढ़ा रत्ना विकल हुई के रोई बार-बार, नाथ नाथ नाथ नाथ नाथ कहां पाई हो , डा केसरी शुक्ल ने पढ़ा - ये ज़मीं बदल गई , आसामां बदल गया , आदमी को देखिए आदमी निगल गया , जगदम्बा तिवारी मधुर ने पढ़ा- तुहैं रखिबै घुंघुटवा की छांव पिया अउब्या जौ गांव पिया ना , राम बदन शुक्ल पथिक ने पढ़ा - कविता कै खान तुलसी , भारत कै शान तुलसी ,अभिजीत त्रिपाठी ने पढ़ा जाति का न पांति का, भेद जिनसे हो सका , राम जैसा विश्व में फिर कोई न हो सका।

श्रीरंगवाटिका मंदिर झूलनोत्सव चरमोत्कर्ष पर, भाव विभोर भक्त

अयोध्या। सखी झूलन पधारो झुकी आए बदरा,झुक आये बदरा झुकी आये बदरा,घिर आये बदरा, साजो सकल श्रृंगार नैना सारो कजरा जैसे मधुर पदों से गुंजायमान हो रही है अयोध्या और बुधवार से अयोध्या के सभी मंदिरों में झूलनोत्सव प्रारंभ हो जाएगा जो रक्षाबंधन पूर्णिमा तक चलेगा। श्रीराम कोर्ट में स्थित श्रीरंगवाटिका मंदिर में कलाकारों के पद से मंदिर परिसर के साथ पूरा रामकोट गुंजायमान हो रहा है और देश विदेश से आए भक्तगण इस अनुपम अलौकिक संगीतमय झूलनोत्सव के आनंद में भाव विभोर होकर गोते लगा रहे हैं।श्रीरंगवाटिका पीठाधीश्वर महंत हरिसिद्ध शरण महराज के सानिध्य में झूलनोत्सव चरम पर है। उन्होंने बताया कि आश्रम से जुड़े शिष्य श्रद्धालु भक्तगण देश के कोने-कोने से पधार रहे हैं और इस अनुपम उत्सव का आनंद ले रहे हैं उन्होंने बताया कि प्रतिदिन मंदिर में झूलनोत्सव पर अयोध्या के संत महंत भी पधार कर ठाकुर जी को झूला झूला रहे है।

उन्होंने बताया कि प्रतिदिन देश के अलग-अलग होने से कलाकार आकर के अपनी कलाओं से लोगों को आकर्षित कर रहे हैं और पूरा मंदिर परिसर भक्तों में वातावरण से गूंज रहा है।

किशोरावस्था की सावधानियों के दृष्टिगत बालिकाओं की हुई कार्यशाला

संवाददाता। रायबरेली

न्यू स्टैंडर्ड पब्लिक स्कूल सीनियर सेकेंडरी स्कूल त्रिपुला में बालिकाओं के लिए किशोरावस्था में विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, इस अवस्था में आने वाली समस्याओं,शारीरिक बदलावों और अनिश्चित मन:स्थिति के सम्बन्ध में कार्यशाला प्रशिक्षिका ने बालिकाओं से वार्ता कर समस्या और समाधान पर गहन चर्चा की।

कार्यशाला की शुरुआत करते हुए प्रशिक्षिका इंदु पुंज जी ने छात्राओं से परिचय प्राप्त कर अपने मित्रवत व्यवहार से सहज करते हुए किशोरावस्था में आने वाली समस्याओं और समाधान पर बात की। उन्होंने बताया कि किशोरावस्था बचपन से वयस्कता की ओर एक संक्रमण कालीन अवस्था है,इसमें होने वाले शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन अक्सर हमारी समझ से परे होते हैं और हम इन परिवर्तनों के बीच अपने आपको असहज महसूस करते है। इस अवस्था में हमें किसी वयस्क द्वारा अपने प्रति की जाने वाली गलत हरकतें समझ में नहीं आती हैं,इस ओर हमें विशेष ध्यान देने की जरूरत है,ऐसे में किसी के भी द्वारा हमारे साथ किये जा रहे गुड टच और बैड टच को हमें समझना पडेगा और ऐसी स्थिति में हमें सबसे पहले अपनी मां और पिता को करीबी मित्र बनाना चाहिए। हमारे जीवन में सबसे पहली मित्र और गुरु हमारी माँ ही होती है। किशोरावस्था में हमारा शारीरिक और मानसिक रूप से तेजी से विकास होता है। ऐसे में यौन आकर्षण, संज्ञात्मक विकास, नए शौक और आत्म-खोज में रूचि आने लगती है। इस अवस्था में अपने साथियों द्वारा स्वीकृति का विशेष महत्व होता है। अंत में प्रशिक्षिका ने छात्राओं से उनकी समस्याओं पर खुलकर चर्चा की और उनके समाधान भी दिए। प्रधानाचार्य ने बताया कि विद्यालय में विद्या ज्ञान के अतिरिक्त सामाजिक और व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा भी दी जाती है जिसके लिए अक्सर ऐसे प्रशिक्षण आयोजित किये जाते है।

उदया इंटरनेशनल स्कूल में बच्चों में कृमिनाशक औषधि का हुआ वितरण

संतकबीरनगर। उदया इंटरनेशनल स्कूल में कृमिनाशक दवा बच्चों में वितरण किया गया। विद्यालय के शिक्षकों, शिक्षिकाओं, परिचारकों के सहयोग से कार्य पूरा किया गया। विद्यालय के निदेशक उदय राज तिवारी जी ने बच्चों के मंगल कामना हेतु इस प्रकार के कार्यक्रम को करने के लिए शिक्षकों को उत्साहित करते रहते हैं।

अपने क्षेत्र में शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ाने के लिए निमित्त विद्यालय का निर्माण किया गया है। बच्चों में मनोशारीरिक विकास हो सके, इस क्रम में मैं सतत् प्रयासरत् रहूंगा। उदया इंटरनेशनल स्कूल में चल रही सर्वांगीण विकास के क्रम में इस कार्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसे कल्याणार्थ भावों से प्रेरित होकर किया गया। उदया इंटरनेशनल स्कूल के प्रधानाचार्य शैलेंद्र कुमार त्रिपाठी ने कहा, 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।' यूनानी समाज सुधारक, दार्शनिक अरस्तु के कथन को दोहराते हुए कहा कि, हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है वह अपने शरीर की उचित देखभाल अवश्य करें। बच्चों में मनोशारीरिक विकास हो इस क्रम में पाचन तंत्र की अहम भूमिका है। पाचन शक्ति को प्रभावित कर रहे सूक्ष्म-कृमि से बच्चों को बचाया जा सके यह प्रयास है।

रास्ती नदी में समाहित हो रहे आशियानों को स्वयं तोड़ रहे ग्रामीण

- डीएम और विधायक ने ग्रामीणों से की मुलाकात

संवाददाता। श्रावस्ती, इकौना

इकौना तहसील क्षेत्र के ग्राम टंडवा जंगरावल को इन दिनों रास्ती नदी अपने आगोश में लेने को बेताब हैं 50 परिवारों के लगभग 150 बीघा खेत और 2 दिनो मे 8 मकान रास्ती नदी की जलधारा में समाहित हो चुके हैं लगभग 50 घर व एक उच्च प्राथमिक विद्यालय नदी द्वारा की जा रही कटान के जद में है यदि कटान का शिलशिला यू ही जारी रहा तो जल्द ही गांव के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो जाएगा। बाढ़ की कटान से भयभीत ग्रामीण स्वयं अपने हाथों से ही अपना आशियाना तोडने को मजबूर है।

स्थानीय मीडिया ने इस समाचार को प्रमुखता से दिखाया जिसके बाद जिला प्रशासन ने मामले को संज्ञान में लेते हुए तत्परता दिखाई रविवार को विधायक इकौना रामफेरन पाण्डेय एवं जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने तहसील इकौना के अंतर्गत ग्राम टंडवा जंगरावल पहुंच कर ग्रामीणों से मिलकर उनका कुशल क्षेम जाना इस दौरान उन्होंने मौके पर स्थिति का जायजा लिया बाढ़ की कटान के जद में आए हुए घरों के परिजनों को बाढ़ शरणालय में पहुंचाया जा रहा है।

इस मौके पर विधायक रामफेरन पाण्डेय ने पीड़ित ग्रामीणों से कहा कि प्रदेश सरकार एवं जिला प्रशासन सदैव उनके साथ है बाढ़ के दौरान क्षतिग्रस्त मकानों का आकलन कर उन्हें क्षति पूर्ति की जा रही है। इस दौरान जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया बाढ़ की कटान से गांव को बचाने के लिए जो भी उपाय हो उन्हें युद्ध स्तर पर तत्काल शुरू किया जाय और जिन लोगों के पास राशन आदि की समस्या उन्हें राशन भी मुहैया कराया जाये।

उन्होंने बताया कि कटान से प्रभावित लोगो को लगातार सहायता राशि मुहैया कराई जा रही है शेष लोगो को अगले चौबीस घंटों में सहायता राशि मुहैया करा दी जाएगी।

तीन घरों में एक साथ चोरियों से फैली दहशत

ऊंचाहार। एक साथ चोरियों पर अंकुश लगाना ऊंचाहार पुलिस के लिए एक बड़ी चुनौती साबित हो रहा है। क्षेत्र में विगत कई दिनों से लगातार चोरियों की वारदात हो रही हैं। जिससे पूरे क्षेत्र में दहशत फैली हुई है और लोग रात भर जागने को मजबूर हैं। कोतवाली क्षेत्र के पूरे बनियन पचखरा में एक रात में तीन घरों में चोरियां हुई। जिसकी शिकायत जीत लाल ने प्रार्थना पत्र देकर कोतवाली में की है जीत लाल द्वारा दिए गए प्रार्थना पत्र में बताया गया कि रात में अज्ञात चोर खेत की ओर से जाकर पीछे दीवार से सेंड काट कर घर में रखा सामान पार कर दिया। जिसमें नगदी के रूप में बीस हजार एवं कई सोने चांदी के आभूषण भी पार कर दिए। दूसरा प्रार्थना पत्र जीत लाल की ओर से दिया गया जो पचखरा गांव के ही निवासी हैं जिन्होंने आरोप लगाया कि रात सेंड काट कर अलमारी में रखें जेवरात और 45 हजार रुपए नगद पार कर दिए।

क्विक न्यूज

आईटीआई के प्रथम चरण प्रवेश 16 अगस्त तक

अमेठी। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान गौरीगंज के प्रधानाचार्य ने बताया कि राज्य व्यावसायिक परिषद उ0प्र0 लखनऊ के द्वारा जनपद के राजकीय/निजी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में सत्र 2024-25 एक वर्षीय एवं सत्र 2024-26 दो वर्षीय के प्रथम चरण का प्रवेश परिणाम घोषित कर दिया गया है। अभ्यर्थी अपने प्रवेश परिणाम की जानकारी वेबसाइट पर प्राप्त कर सकते हैं, प्रथम चरण के प्रवेश की अंतिम तिथि 16 अगस्त दिन शुक्रवार निर्धारित है चयनित अभ्यर्थी अपने मूल की प्रमाण पत्रों की व संबंधित अभिलेखों के साथ संबंधित प्रवेशित संस्थान में अंतिम निर्धारित तिथि से पूर्व प्रवेश लिस्ट से जांच के उपरांत अपना प्रवेश लेना निश्चित करें।

नाले में तैरता मिला अज्ञात महिला का शव

जगदीशपुर, अमेठी। नाले मे तैरता शव देख ग्रामीणो द्वारा मिली सूचना के उपरांत मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नाले से बाहर निकलवाने के बाद पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम हेतु भेजा। थानाक्षेत्र के अंतर्गत स्थित मीरापुर गांव के निकट नाले मे अज्ञात महिला उम्र लगभग तीस वर्ष का तैरता शव देख स्थानीय लोग भारी संख्या मे इकट्ठा हो गए ।सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नाले से बाहर निकलवाकर शिनाख्त करने की कोशिश किया लेकिन खबर लिखे जाने तक शव की शिनाख्त नही हो पाई अंतोगत्वा पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया ।इस संबंध मे पुलिस ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम भेज कर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है ।

बुजुर्ग की सांप काटने से तबियत बिगड़ी

ऊंचाहार। बाग में गये बुजुर्ग की सांप काटने से तबियत बिगड़ गई। जिसे इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया है। मामला पूरे देवी बख्श मजरे खरौली गाँव का है,गाँव निवासी देशराज 65 वर्ष रविवार की दोपहर घर के पास ही बाग गया हुआ था,तभी उसे सांप ने काट लिया, जिससे उसकी हालत बिगड़ गई, जानकारी होने पर परिजनों द्वारा उसे इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया है। सीएचसी अधीक्षक डॉ मनोज शुक्ल ने बताया कि बुजुर्ग को सांप ने काटा है, जिसका उपचार किया जा रहा है।

फौजी अंशु विश्वकर्मा के पार्थिव शरीर पर रीत चढ़ाकर झांसी यूनिट ने दी अंतिम विदाई

संवाददाता। उरई, जालौन

कल शनिवार को सेना के जवान अंशु विश्वकर्मा का सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। जब यह खबर फौजी अंशु विश्वकर्मा की यूनिट कोर आफ ऑर्डिनेंस पुणे को मिली। सेना के उच्चाधिकारियों के निर्देशानुसार झांसी की ई एम ई बटालियन ने फौजी अंशु विश्वकर्मा के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र चढाकर अंतिम विदाई दी। ज्ञात हो कि कल कालपी विधानसभा क्षेत्र के महेवा ब्लाक के गांव जीतामऊ निवासी अशोक विश्वकर्मा पूर्व सैनिक हाल निवासी बघौरा उरई का पुत्र अंशु विश्वकर्मा उम्र लगभग 27 वर्ष पुणे की कोर आफ ऑर्डिनेंस में हवलदार के पद पर तैनात था। उसकी तैनाती लगभग 10 वर्ष पूर्व हुई थी।

एक सप्ताह पूर्व हवलदार अंशु विश्वकर्मा रक्षाबंधन की छुट्टी में अपने घर आया हुआ था और अपनी बड़ी बहिन वंदना विश्वकर्मा उम्र लगभग 32 वर्ष के साथ बाइक से गांव जीतामऊ परिवार वालों से मिलने के लिए जा रहा था ।तभी रास्ते में जालौन कुठौंद हाई-वे पर मड़ोरी के समीप एक कार ने उसकी बाईक में टक्कर मार दी। जिससे अंशु विश्वकर्मा हवलदार की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं बहिन वंदना बुरी तरह से घायल हो गई थी जिसे उपचार के लिए कानपुर रेफर किया गया ।लेकिन चिकित्सकों ने उसे भी मृत्यु घोषित कर दिया।

एक साथ भाई बहन की मौत से पूरे जनपद में कोहराम मच गया। आज झांसी ई एम ई बटालियन मृतक अंशु विश्वकर्मा के उरई आवास पर पहुंची और अंशु विश्वकर्मा के पार्थिव शरीर को तिरंगे में लपेटकर पैतृक गांव जीतामऊ ले गई। जहां पर सैकड़ो नाते रिश्तेदारों तथा पूर्व सैनिकों की मौजूदगी में झांसी यूनिट के जवानों ने पार्थिव शरीर पर जीत चढ़ा कर जवान अंशु विश्वकर्मा को अंतिम विदाई दी।

पूर्व प्रधानमंत्री की जयंती पर होगी निबंध प्रतियोगिता

गौरीगंज, अमेठी। भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व राजीव गांधी जी के 80वें जन्मदिन पर होने वाली निबंध प्रतियोगिता की तैयारी बैठक जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय में जिलाध्यक्ष प्रदीप सिंघल ने विधान सभा प्रभारी व ब्लॉक अध्यक्ष गणों /निबंध प्रतियोगिता प्रभारी के साथ विस्तृत रूपरेखा तैयारी में अमेठी संसदीय क्षेत्र के सभी 17 ब्लॉकों में आयोजित होने वाली निबंध प्रतियोगिता में लगभग 1500 से अधिक बच्चे प्रतिभाग करेंगे निबन्ध प्रतियोगिता प्रत्येक ब्लॉको के 04 विद्यालयों सहित 68 विद्यालयों में पारदर्शी तरीके से राजीव गांधी निबंध प्रतियोगिता होगी । जिलाध्यक्ष श्री सिंघल ने बताया कि निबंध प्रतियोगिता का समय दोपहर 11:00 बजे से 12 बजे तक सभी 68 विद्यालयों में एक समय परीक्षा कराने का निर्देश दिए। तैयारी बैठक में आए ब्लॉक अध्यक्षों में अपनी राय रखी और प्रतियोगिता से संबंधित नियम को एक दूसरे से साझा किया।

रात में एसडीएम ने अवैध बालू भरे छह ओवरलोड ट्रकों को पकड़ कर सीज किया

कालपी, जालौन। एसडीएम सुशील कुमार सिंह की टीम के द्वारा खनन क्षेत्र कालपी तहसील क्षेत्र की सड़कों में रात्रि में चौकिंग के दौरान अवैध खनन केओवरलोड भरे 6 ट्रकों को पकड़ कर सीज करने की कार्यवाही की गई है। प्रशासन की इस कार्यवाही से बाल का अवैध परिवहन करने वाले लोगों में खलबली मच गयी है।

जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय के निर्देशन में बीती शाम को एसडीएम ग्रामीण क्षेत्रों में भ्रमण कर रहे थे। तभी कदौरा - जोल्हूपुर मोड़ की सड़क में रेलवे क्रासिंग में चैकिंग अभियान चलाया गया। उपजिलाधिकारी सुशील कुमार सिंह ने अवैध बालू परिवहन तथा ओवरलोड के खिलाफ चौकिंग की गई। इस दौरान बिना खनिज प्रपत्रों के ओवरलोड मौरम लादे 6 ट्रको को पकड़ कर सीज करने की कार्यवाही की गई। उपजिलाधिकारी ने पकड़े गये वाहनों को सम्बंधित थाना पुलिस की अभिरक्षा में सीज कर खड़ा करा दिया गया।चैकिंग अभियान की खबर मिलते ही वाहन चालकों में खलबली मच गयी। उपजिलाधिकारी ने इस बारे में कहा कि आगामी दिनों में भी लगातार चैकिंग अभियान चलाया जाएगा।

हर घर तिरंगा कार्यक्रम के आयोजन में भाजपाइयों ने झंडे फहराये

कालपी, जालौन। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आव्हान पर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रत्येक घर में तिरंगा लगवाने के लिए भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के द्वारा गतिशीलता से कार्यक्रम शुरू कर दिए गए हैं। नगर पालिका अध्यक्ष अरविंद यादव की मौजूदगी में आयोजित मंडल कार्यकर्ताओं की बैठक में तिरंगा यात्रा की तैयारी की गई। सरस्वती विद्या मंदिर सदर बाजार कालपी में आयोजित कार्यक्रम में शक्ति केंद्रों के संयोजक,प्रभारी, प्रवासी, सभी बूथो के अध्यक्ष, वर्तमान व निवर्तमान जनप्रतिनिधि,व सभी पदाधिकारी व पूर्व पदाधिकारी सभी मोर्चा पदाधिकारी, एवम कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुये नगर भाजपा अध्यक्ष भारत सिंह यादव ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दिशा निर्देशों के प्रत्येक घर में तिरंगा झंडा फहराया जाना है। इसके लिए 9 अगस्त से कार्यक्रम शुरू कर दिया गया है। उन्होंने बताया राष्ट्र हित मे सभी कार्यकर्ताओं को घर घर तिरंगा फहराने के लिए अपनी अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। नगर पालिका परिषद कालपी के अध्यक्ष अरविंद यादव ने कहा कि हर घर में झंडा लगाने के लिए पालिका प्रशासन भी पूरा सहयोग करेगी।

देशभक्ति के साथ-साथ रोजगार सृजन की दिशा में की जा रही अनूठी पहल

- झंडा बनाकर रोजगार सृजन का हिस्सा बनेगी समूह की महिलाएं
- जनपद के आठ ब्लाकों के 30 महिला समूह बनाएंगे 310000 झंडे

संवाददाता। उरई, जालौन

इस बार स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर घर-घर तिरंगा फहराने की परंपरा में प्रशासन ने एक अनूठी पहल भी शामिल कर दी है 13 अगस्त से 15 अगस्त तक चलने वाली इस मुहिम में तिरंगे का निर्माण करने का जुम्मा जनपद के विभिन्न समूह की महिलाओं को सोपा गया है जो कि इस पुनीत कार्य मैं अपनी देशभक्ति के साथ-साथ रोजगार सृजन की दिशा में अग्रसर होगी।

जानकारी के मुताबिक जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय के निर्देशानुसार मुख्य विकास अधिकारी राजेन्द्र कुमार श्रीवास के नेतृत्व में जनपद के 9 ब्लॉकों में सहायता समूह की महिलाओं को रोजगार सृजन हेतु कार्य दिया गया है ये महिलाएं झंडा बनाकर रोजगार सृजन करेंगीं। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 13 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा अभियान चलाया जाएगा। इसमें कोने कोने में तिरंगा झंडे लगाए जाएंगे शासन की ओर से विभागवार इस संबंध में दिशा निर्देश जारी भी किए गए है

जनपद के आठ ब्लाकों मे लगभग 30 समूहों को 9 सीएलएफ के द्वारा लगभग 3 लाख 10 हजार झंडे बनाने का कार्य दिया गया है। इसी क्रम में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ी समूह की महिलाएं राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण में जुट गई हैं। उनके हाथों से निर्मित यह तिरंगा आमजन को देश भक्ति का अहसास कराएगा। पंद्रह अगस्त में जिले के हर क्षेत्र के हर गांव के हर घर में तिरंगे को फहराया जाएगा। इस कार्य मे सभी बीएमएम जोर शोर से जुट गए हैं।

मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेले में किया 32 रोगियों का उपचार

कालपी, जालौन। रविवार को नगरीय स्वास्थ्य केंद्र उदनपुरा कालपी में मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेले का आयोजन किया गया।इस मौके पर चिकित्सकीय टीम के द्वारा 32 मरीजों का सफ्लतापूर्वक उपचार किया गया।

चिकित्सालय परिसर में आयोजित साप्ताहिक मेले में आए मरीजों को जागरुक करते हुए डॉक्टर रंजना सिंह ने कहा कि बरसात के मौसम में सभी लोगों को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि के मौसम में भींगे नहीं उचित कपड़े पहने तथा किसी प्रकार की बीमारी होने पर चिकित्सकों की सलाह पर इलाज करायें। फार्मेसिस्ट राकेश कुमार ने बताया कि उच्च अधिकारियों के निर्देश पर प्रत्येक रविवार को मेले का आयोजन किया जाता है ।

मेले में सभी प्रकार की चिकित्सकीय सुविधा जनता को उपलब्ध कराई जाती है। मेले में मरीजों के हीमोग्लोबिन, बीपी आदि का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। मेले में लैब टेक्नीशियन हिमांशु, ममता वर्मा आदि कर्मचारियों की सहभागिता रही। इसी प्रकार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र महेवा में भी आयोजित मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेले में मरीजों का इलाज किया गया।

मकान की छत गिरने से मलबे में दबकर मां-बेटे की मौत, मौके पर पहुंचे डीएम-एसपी

संवाददाता। कोंच, जालौन

कोतवाली क्षेत्र के ग्राम महलुआ में हादसे से छत गिर जाने के कारण माँ बेटे की दबकर मृत्यु हो गयी व पिता पुत्री गम्भीर रूप से घायल हो गए सूचना मिलते ही पुलिस व फायर सर्विस मौके पर पहुंच गए और बचाव कार्य मे जुट गए तब तक स्थानीय प्रशासन के साथ साथ जिले के अधिकारी भी घटना स्थल पर पहुंच गए और घटना की जांच करते हुए उन्हें दैवीय आपदा सहायता धनराशि उपलब्ध कराने की कार्यवाही शुरू कर दी गयी

प्राप्त जानकारी के अनुसार तहसील क्षेत्र के ग्राम महलुआ में दिन रबिवार को अलख सुवह हादसे से एक मकान की छत गिर जाने से उसमें सो रहे अखलेश पुत्र अवधेश उम्र करीब 35 बर्ष व अदिति पुत्री अखलेश उम्र करीब 10 वर्ष गम्भीर रूप से घायल हो गए और मोहिनी पत्नी अखलेश उम्र 30 वर्ष और देवू पुत्र अखलेश उम्र करीब 6 वर्ष की दबकर मृत्यु हो गयी। सूचना मिलते ही घटना स्थल पर उपजिलाधिकारी ज्योति सिंह पुलिस क्षेत्राधिकारी अर्चना सिंह तहसीलदार बीरेन्द्र प्रसाद गुप्ता प्रभारी निरीक्षक अरुण कुमार राय फायर सर्विस के साथ पहुंच गए और राहत कार्य मे जुट गए।

जिसमें ग्रामीणों की मदद से चार घायलों को बाहर निकलवाकर उपचार हेतु अस्पताल भिजवाया गया। जहां पर मोहिनी व देवू को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया और घायल अखलेश व अदिति को प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर कर दिया। उक्त घटना की सूचना जब उच्च अधिकारियों को हुई तो घटना स्थल पर जिलाधिकारी राजेश कुमार पांडेय पुलिस अधीक्षक डॉ दुर्गेश कुमार अपर जिलाधिकारी संजय कुमार व अपर पुलिस अधीक्षक प्रदीप वर्मा पहुंच गए और घटना की जानकारी लेते हुए।

जिलाधिकारी के निर्देशानुसार दैवीय आपदा सहायता धनराशि 4 लाख प्रति मृतक व पक्के मकान की क्षति हेतु 1 लाख 20 हजार की सहायता दिए जाने हेतु कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गयी।

गांवों में लगे स्वास्थ्य शिविर, दी गईं औषधियां

●पसगवां, बेहजम पहुंच सीएमओ ने किया भ्रमण

●बुखार काबू करने को हुई फॉगिंग, एंटी लार्वा छिड़काव

●चार गांवो में हुई स्क्रीनिंग और परीक्षण

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल के निर्देश पर ब्लॉक बेहजम के गांव अल्लीपुर, गुलचौरा और पसगवां के गांव हैरमखेड़ा, अलियापुर में बढ़ते बुखार के मरीजों के प्रसार को रोकने के लिए रविवार को स्वास्थ्य महकमे ने स्वास्थ्य शिविर लगाया। वही बीडीओ के नेतृत्व में साफ-सफाई, फॉगिंग, एंटीलार्वा छिड़काव करवाकर बुखार, मच्छरों के प्रकोप को कम करने की कवायद हुई।

बुखार के प्रसार के दृष्टिगत पसगवां ब्लॉक के गांव हैरमखेड़ा, अलियापुर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगाए गए स्वास्थ्य शिविर में पहुंचे सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता ने क्षेत्र का स्थलीय भ्रमण किया। साथ ही उन्होंने ग्राम प्रधान व पंचायत सचिव से वार्ता की। उन्होंने स्वास्थ्य टीमों द्वारा किए जा रहे उपचार, जांच का अनुश्रवण भी किया। बताया कि गांव में बुखार तेजी से फैल रहा है। जिसे लेकर उन्होंने यह भ्रमण किया है।

निरीक्षण के समय पर सीएमओ ने पाया कि अलियापुर में एमओआईसी डॉ अश्विनी के नेतृत्व में स्वास्थ्य दल ने 147 मरीजों की स्क्रीनिंग की गई। जिसमें 27 मलेरिया, 06 डेंगू के टेस्ट किए गए। कोई भी पॉजिटिव केस प्राप्त नहीं हुआ। सभी मरीजों में ज्यादातर वायरल फीवर पाया गया। जिन्हें औषधीय प्रदान की गई। वही ग्राम हैरमखेड़ा में डॉ पुरुषोत्तम के नेतृत्व में लगाए गए हेल्थ कैंप में 153 मरीजों की स्क्रीनिंग की गई। जिसमें मलेरिया के लक्षण वाले 11 मरीजों का टेस्ट किया गया। वही 05 डेंगू के टेस्ट किए गए। कोई भी पॉजिटिव नहीं मिला। इसके अलावा गांव में ज्यादातर मरीज स्किन डिजीज के मिले, जिन्हें निशुल्क जरूरी दवाएं प्रदान की गईं।

इसके बाद सीएमओ स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगाए स्वास्थ्य शिविर में बेहजम के क्रमश अल्लीपुर, गुलचौरा गांव पहुंचे, जहां उन्होंने गांव का स्थलीय भ्रमण किया। उन्होंने ग्राम प्रधान से क्षेत्र की साफ-सफाई व्यवस्था को और प्रभावी बनाने के लिए कहा। साथ ही नालियों व पानी निकासी की व्यवस्था को भी बेहतर बनाया जाए। साथ ही उन्होंने स्वास्थ्य सेवाएं देने के लिए लगाए गए स्वास्थ्य शिविर का भी निरीक्षण किया। यह स्वास्थ्य शिविर में लोगों को दवाओं के वितरण के साथ ही जांच की भी व्यवस्था की गई है।

सीएमओ ने पाया कि बेहजम के गांव अल्लीपुर में हेल्थ कैंप जारी 135 मरीजों की स्क्रीनिंग हुई। जिसमें 54 व्यक्तियों का मलेरिया एवं डेंगू टेस्ट कराया गया, जिसमें एक व्यक्ति मायाराम पुत्र हंसराम मलेरिया पॉजिटिव मिला। सभी को जरूरी औषधीय प्रदान की गई। वही गुलचौरा में 72 मरीजों की स्क्रीनिंग हुई, जिसमें 24 व्यक्तियों का मलेरिया एवं डेंगू टेस्ट कराया गया। जिसमें कोई भी व्यक्ति पॉजिटिव नहीं मिला। चिकित्सको द्वारा सभी मरीजों को जरूरी औषधियां प्रदान की गईं।

सदर विधायक ने किया फाइलेरिया व कृमि मुक्ति अभियान का आगाज़

लखीमपुर। फाइलेरिया उन्मूलन व कृमि मुक्ति अभियान का शुभारंभ शनिवार को सीएमओ कार्यालय में सदर विधायक योगेश वर्मा द्वारा फीता काटकर किया गया। वहीं सदर विधायक योगेश वर्मा और सीएमओ डॉ संतोष गुप्ता द्वारा फाइलेरिया से बचाव की दवा भी मौके पर खाई गई। इस दौरान उन्होंने एक जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में प्रशिक्षु एएनएम सहित मेहता मिलेनियम प्रशिक्षु एएनएम व एनएसएस की छात्राओं ने प्रतिभाग किया। सदर विधायक योगेश वर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि सरकार द्वारा लोगों को फाइलेरिया रोग से बचने और एक वर्ष से 19 वर्ष तक के बच्चों को व किशोर-किशोरियों को पेट में होने वाले कीड़ों के नुकसान से बचने के लिए इन दोनों अभियानों को स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाया जा रहा है।

नगर में निकली तिरंगा यात्रा में युवाओं ने लगाए भारत माता की जय के नारे

संवाददाता। फतेहपुर

भारतीय जनता युवा मोर्चा द्वारा राष्ट्रीय आह्वान पर हर घर तिरंगा अभियान को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से शहर में भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा यात्रा का जिलाध्यक्ष भाजपा मुखलाल पाल ने तिरंगा फहराकर शुभारंभ किया। यात्रा की अगुवाई जिलाध्यक्ष मधुराज विश्वकर्मा ने की। यात्रा पार्टी कार्यालय से निकाली गई। जिलाध्यक्ष ने बताया कि तिरंगा यात्रा तांबेश्वर चौराहा डाक बंगले से सदर अस्पताल होते हुए पत्थरकटा चौराहा पटेल नगर चौराहा से विद्यार्थी चौराहा होते हुए बुलेट चौराहा से पुन: पार्टी कार्यालय में समापन किया गया। कहा कि इस यात्रा का उद्देश्य आम जनमानस में राष्ट्रीयता के भाव को ओतप्रोत करना है जिससे आगामी 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के दिन समूचे जनपद एवं प्रदेश सहित देश के प्रत्येक घर में तिरंगा झंडा फहराया जा सके। फतेहपुर विधानसभा के पदाधिकारियो की अगुवाई में कार्यक्रम को मूर्त रूप देने हेतु समस्त घरों में तिरंगा झंडा लगाने की हुंकार भरी। गगनभेदी नारों के साथ समस्त चौराहा एवं मार्ग गुंजायमान रहा। युवाओं ने ठाना है कि भाजपा के उक्त अभियान को सफल बनाने के लिए पुरजोर कोशिश की जाएगी। आगामी 12 एवं 13 को जिले की सभी 6 विधानसभाओं में तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी।

ताइक्वांडो एसोसिएशन की नवीन कमेटी हुई घोषित

फतेहपुर। ताइक्वांडो एसोसिशियन ऑफ फतेहपुर की बैठक आहूत की गई। बैठक में विगत वर्ष का कार्यकाल पूर्ण हो जाने की दिशा में नवीनतम कमेटी का गठन व मनोनयन किया गया। एसोसिशियन के चेयरमैन किशन मेहरोत्रा, महासचिव राजकुमार, उपाध्याक्ष प्रखर शुक्ला, कोषाध्यक्ष रिया, संयुक्त सचिव भारत वर्मा, संयुक्त सचिव शिव कुमार, कार्यकारणी सदस्य रिचा राजपूत, दिव्यांशु पटेल, अनिकेत मेहरोत्रा को पुष्पहार पहनाकर स्वागत कर मनोनित किया गया। चेयरमैन किशन मेहरोत्रा ने कहा कि शीघ्र ही ताइक्वांडो एसोशिसियन ऑफ़ फतेहपुर का रजिस्ट्रेशन कोष हेतु बैंक खाता आवंटित किया जायेगा। महासचिव राजकुमार ने कहा कि शीघ्र ही संगठन विस्तारित करेंगे।

नवयुवक कांवरिया संघ की कांवड़ यात्रा डीजे की धुन पर हुई रवाना

फतेहपुर। सावन के चौथे सोमवार पर नवयुवक कांवरिया संघ की देवाधिदेव महादेव भगवान भोले शंकर की झांकी व कांवड़ यात्रा धूमधाम से रविवार को डीजे की धुन पर भिटौरा घाट के लिए रवाना हो गई। रास्ते पर यात्रा में शामिल श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ के जयकारे लगाते रहे। कल भिटौरा घाट से गंगाजल लाकर तांबेश्वर मंदिर स्थित शिवलिंग पर जलाभिषेक करेंगे। नवयुवक कांवरिया संघ के जिलाध्यक्ष चंद्र प्रकाश त्रिपाठी की अगुवाई में देवाधिदेव महादेव भगवान भोले शंकर की झांकी व कांवड़ यात्रा निकाली गई। शहर के वर्मा चौराहा स्थित उनके आवास से झांकी व यात्रा का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में महिला, पुरूष व बच्चों ने हिस्सा लिया। भव्य तरीके से सजाई गई भगवान भोलेनाथ की झांकी आकर्षण का केंद्र बिंदु रही। डीजे की धुन पर श्रद्धालु व झांकी भिटौरा घाट के लिए निकली।

शहर के विभिन्न मार्गों का भ्रमण करते हुए भिटौरा घाट पर पहुंचेगी। रास्ते पर गीत, संगीत की धुन पर श्रद्धालु नाचते रहे। जिलाध्यक्ष चंद्र प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि भिटौरा घाट में भंडारे का भी आयोजन होगा। जिसमें श्रद्धालु काफी बड़ी संख्या में शामिल होंगे।

पूर्व योजनाओं से किसानों को कोई लाभ नहीं, शासन ने दिये 42 आजीविका सरोवर

●विभाग की चल रही है टीएसी जांच

●विभाग को मालामाल होने का मिला मौका

विनोद शुक्ला। हमीरपुर

जिले में खेत तालाब, चेकडैम, बंधी बनाने के बाद नमी संरक्षण व सिचाई में सफलता न मिलने के बाद शासन ने बुंदेलखंड पैकेज के तहत पहली मर्तवा जिले में भूमि संरक्षण विभाग को आजीविका सरोवर बनाने का लक्ष्य दे दिया है। इसके लिये तीनो इकाईयों को 42 तालाब निर्माण कराने को कहा गया है ये सभी तालाब गांव समाज की जमीन में खुदवाये जायेगे। करोड़ रुपये का बजट अभी फ्लिहाल आवंटित नही किया गया है।

जानकारी के मुताबिक भूमि संरक्षण विभाग में योजना संचालित में हुई धांधली को लेकर शासन से टीएसी जांच चल रही है जांच टीम अभी भी डेरा डाले हुये है जिसे काफी मात्रा में धांधली मिल रही है। इसके बाद भी शासन ने मल्टीपर्जज तालाब यानी आजीविका तालाब निर्माण करने का लक्ष्य दे दिया है एक तालाब की कीमत कम से कम छह लाख से लेकर दस लाख तक होगी जिले में दो प्रकार के तालाबों का निर्माण किया जायेगा। साठ बाई पचास व पचास बाई चालिस मीटर के तालाब बनाये जायेगे। हालाकि नयी योजना आने से विभाग के अफ्सरो की आंखो में चमक आ गयी है। बताया जाता है कि टीएसी टीम को जांच में काफी धांधली मिल रही है।

किसी न किसी अफसर के ऊपर गाज गिरना तय माना जा रहा है। इन तालाबों से किसानों को छोटी मोटी सिचाई व जल स्तर बढ़ाने के लिये शासन ने तालाब बनाने का फैसला किया है। हालाकि कई दशकों से विभाग में बंधी,तालाब व चेकडैम बनाये जा रहे है यही नही खेत तालाब योजना में सैकड़ो तालाब खोदे गये है जहा जहा तालाब खोदे गये है वही पर जल स्तर नीचे चला गया है नमी संरक्षण का तो कही नमोनिशान नही है। ऐसी हालत में आजीविका सरोवर क्या भूमिका निभायेगे इसको लेकर तरह तरह की अटकले लगायी जा रही है बताया जाता है कि कुछ स्थानों में विभाग ने स्थान चयन भी कर दिया है। केवल बजट आने का इंतजार किया जा रहा है। भूमि संरक्षण विभाग प्रथम को बैजेमऊ में दो, किशवाही,अरतरा में दो, अतरैया में दो, सिकरोढ़ी, दो, किशवाही समेत दस तालाब खोदे जाने है। इसी प्रकार भूमि संरक्षण विभाग दो में विहूनी खुर्द, छानी ,मुस्करा, भुजपूर, अतरौली, इंदरपुरा, इछौरा, विहूनकला, ऐझी, शिवनी, बजेहटा, बसरिया, बरहरा, लोधीपूर में चौदह तालाब खुदवाये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

डीएम-एडीएम ने किया राममंदिर का निरीक्षण

गुरसहायगंज, कन्नौज। पनगंवा ट्रस्ट द्वारा संचालित श्रीराम मंदिर में डीएम व एडीएम ने पहुंचकर औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं को परखा। साथ ही मंदिर में होने बाले धार्मिक कार्यो सहित निर्माण कार्य की जानकारी ली। रविवार को नगर के चौराहा स्थित प्राचीन श्री राम जानकी मंदिर का जिलाधिकारी सुभ्रांत कुमार एवं अपर जिलाधिकारी ने औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होनें साफसफाई तथा मंदिर में चल रहे निर्माण कार्य की प्रगति को देखनें व मंदिर में बने ध्यान कक्ष का निरीक्षण करनें के उपरान्त आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान उन्होनें मंदिर के महंत पं. राकेश चन्द्र दुबे को मंदिर में कार्यक्रम हेतु आने वाले लोगों को मंदिर की तरफ से एक पौधा उपहार स्वरूप देने तथा श्रद्धालुओं को एक पौधा मां के नाम अभियान के स्वरूप लगाए जाने हेतु प्रेरित किया।

पुलिस अधीक्षक के कड़े तेवरों से हड़कंप बचने को नए प्रयोग कर रहे थाना प्रभारी

संडीला, हरदोई। हरदोई में कुछ समय पूर्व तैनात हुए पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार सिंह जादौन की तेज़ तर्रार और सख़्त कार्यप्रणाली से जहां आमजन को सुरक्षा का एहसास तथा उनमें पुलिस की छवि के निखरने का दौर शुरू हुआ, वहीं पुलिस विभाग में 17 पुलिसकर्मियों के नीलंबन और कई के विरुद्ध अन्य कड़ी कार्रवाई से खौफ़ उत्पन्न हो गया है और अब स्थिति यह है कि नए नए शगूफ़े लाकर कुर्सी बचाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

पुलिस अधीक्षक श्री जादौन द्वारा कार्यभार ग्रहण करने के बाद एकमात्र सिद्धांत ईमानदारी से अपने कर्तव्य का निर्वाह करना ही न केवल सुरक्षित बल्कि नौकरी में शाबाशी की गारंटी है। एसपी ने कार्यभार ग्रहण करने के बाद एक महीने के कार्यकाल में अत्यंत लापरवाह और विभाग की छवि धूमिल करने वाले पुलिसकर्मियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की है। एसपी के इस प्रकार के तेवरों से कई दूर की कौड़ी लाने वाले पुलिस अधिकारियों ने येन केन प्रर्कारयण एसपी को प्रसन्न करने के प्रयास शुरू कर दिए हैं। इसी क्रम में थानों में हिस्ट्री शीटर की हाथों में 'अपराध से तौबा करने' संबंधी तख्तियां लेकर परेड कराना या किसी वाक्षित अपराधी का गले में तख्ती डालकर पहुंचने जैसे शगूफ़े किए जा रहे हैं। हालांकि हिस्ट्री शीटरों की कोतवाली में परेड कराने का या अभिनव प्रयोग कोतवाली संडीला में तत्कालीन प्रभारी निरीक्षक दिलेश कुमार सिंह ने किया था। उस समय कुछ पत्रकारों और न्यूज़ चैनल्स पर इस खबर को जमकर प्रचारित कराया गया था। वही दिलेश कुमार सिंह अब कोतवाली अतरौली के प्रभारी निरीक्षक हैं तथा हिस्ट्री शीटर की परेड का कार्यक्रम थाना अतरौली से ही शुरू हुआ है।

पुलिस अधीक्षक श्री जादौन ने कोतवाली अतरौली में तैनात एक हेड कॉन्स्टेबल को अवकाश स्वीकृत न करने तथा उसकी माता के कोमा में चले जाने पर काफ़ी सख़्त रवैया अपनाया था और जवाबतलब भी किया था। इसके अगले दिन हिस्ट्री शीटर की परेड शुरू हो गयी और थाने के 124 हिस्ट्री शीटर में 71 हिस्ट्री शीटर थाने पहुंचे। बताते चलें कि किसी थाने के हिस्ट्री शीटरों को मास में एक दिन थाने आकर अपनी हाजिरी लगवानी पड़ती है। इसके बाद दूसरे थानेदारों ने यही फॉर्मूला अपनाया। कोतवाली सवायजपुर में आयोजित हिस्ट्री शीटर की परेड में 39 में 13 जबकि मल्लावां में 84 हिस्ट्री शीटर में 52 हिस्ट्री शीटर इस परेड में उपस्थित हुए। दिनांक 10 अगस्त को पुलिस अधीक्षक श्री जादौन तथा डीएम एमपी सिंह अतरौली पहुंचे। यहां पुलिस अधीक्षक ने जांच में पाया कि प्रभारी निरीक्षक मामलों की जांच के लिए मौके पर नहीं जाते, इसपर एसपी काफ़ी नाराज़ हुए और उन्होंनें भविष्य में प्रार्थना पत्रों के निस्तारण के लिए मौके पर जाने की नसीहत प्रभारी निरीक्षक को दी।

हालांकि थाना प्रभारियों द्वारा अपनी थाना अध्यक्षी बचाने के लिए पहले भी तमाम तरह के प्रयोग किए गए लेकिन मौजूदा एसपी के तेवर और उनकी कार्यशैली पर पुराने फॉर्मूले बेकर सिद्ध हो रहे हैं। लोगबाग इस बात कर्मियों के विरुद्ध पुलिस अधीक्षक के पास पर्याप्त शिकायतें हैं और शीघ्र ही कड़ी कार्रवाई का दौर शुरू हो सकता है।

कांवड़ियों ने गंगा तट से जल ले जाकर पंडाबाग में किया भोलेनाथ का जलाभिषेक

संवाददाता। फर्रुखाबाद

अखिल भारत हिन्दू महासभा व जय भोले बाबा कमेटी के सौजन्य में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कांवर यात्रा को निकाला गया। कॉवर यात्रा में इस वर्ष भी भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने पूरी ऊर्जा और जोश के साथ भोलेनाथ की अटूटू भक्ति भाव में रंग के भाव-विभोर आस्था का सौलाव उमड गया। इस वर्ष भी बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों और नौजवानों ने इस यात्रा में दुर्वासा आश्रम के सामने माँ गंगा के तट से जल भरकर पाण्डेक्श्वर नाथ मंदिर में भोलेनाथ का गंगाजल से जलाभिषेक किया। इस वर्ष 201 कॉवर द्वारा भोलेनाथ के मंदिर में जलाभिषेक किया गया।रास्ते भर क.श्र. पर भक्ति भाव व धार्मिक भजनों से श्रृद्धालुओं ने भोले नाथ की जय-जयकार से गगन भेदी नारे लगाएं, कश्र पर बज रहे सावन मे भोलेनाथ के भजनों ने भक्तों में उत्साह भर दिया। कांवड़ यात्रा पर जगह जगह भक्तों ने आरती एवं पुष्प वर्षा की, पांडेश्वर नाथ पर जलाभिषेक महा आरती प्रसाद वितरण एवं भंडारा के साथ यात्रा समाप्त हुई।

लॉयन्स क्लब व समर्पण सेवा समिति ने मनाया सावन झूला उत्सव

कायमगंज, फर्रुखाबाद। लॉयन्स क्लब व समर्पण सेवा समिति की ओर से सावन झूला गीत एवं नृत्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। बच्चों के कार्यक्रम देख लोग मन मुग्ध हुए। नगर के सीपी गेस्ट हाउस में लॉयन्स क्लब व समर्पण सेवा समिति की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम सावन झूला गीत एवं नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्जवलन कर किया। कार्यक्रम की आयोजिका मिथलेश अग्रवाल ने झूले पर विराजमान कृष्ण.राधिका का माल्यार्पण किया व आरती उतारी। कार्यक्रम में सीपीवीएन नर्सरी विंग स्कूलए मां गायत्री विद्या पीठए शकुंतला देवी कॉलेजए श्रीराम उमाविए राम नरायण महिला डिग्री कॉलेज सीपी आईए सीपीवीएन इंटर कॉलेज के बच्चों ने कार्यक्रम में सावन गीतए आयो रे आयो सावनए परम प्रेम में राधिकाए आयी बागन में बहार, गोवर्धन लीला आदि प्रस्तुत किये।

ट्रक मालिक पर तमंचे से फायर करने वाला गिरफ्तार

कायमगंज, फर्रुखाबाद। तीन दिन पहले पुलगालिब तिराहे के पास जनपद एटा क्षेत्र के एक ट्रक मालिक पर तमंचे से फायर झोकने वाला चर्चित जुबैर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से तमंचा भी बरामद हुआ है। आरोपित अवैध तंबाकू की ढुलाई के लिए मालिक से ट्रक की मांग कर रहा था। 8 अगस्त की रात जैसे ही वह अरविंद नगर के पुलगालिब तिराहे के समीप पहुंचा तभी तंबाकू की फर्जी कंपनी के मुकदमे का आरोपित जुवैर खां अपने चार पांच अज्ञात साथियों के साथ पहुंचा और तमंचे के बल पर कार रोक दी और उसे कार समेत बंधक बनाकर बस स्टेंड की तरह ले गया और कार से उतार कर उससे अवैध तंबाकू की ढुलाई के लिए ट्रक मांगा। जब अरविंद ने मना कर दिया। इसी बीच अरविंद अपनी कार छोड़ कर वहां से भागा तभी जुबैर ने जान से मारने की नीयत से उसके ऊपर तमंचे से फायर कर दिया। मगर गोली उसकी कनपटी के पास से निकल गई।

एशियन स्कॉलरशिप परीक्षा में चार केन्द्रों पर 6432 छात्र सम्मलित हुए

फर्रुखाबाद। श्री विश्वनाथ सामाजिक सेवा संस्थान द्वारा संचालित एशियन कंप्यूटर इंस्टीट्यूट द्वारा 4 केंद्रों पर सामान्य ज्ञान परीक्षा में कुल 6432 छात्रों ने भाग लिया। फर्रुखाबाद में सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज श्याम नगर केंद्र पर सीनियर वर्ग में 1458 व जूनियर वर्ग में 1237, राजपुर में अमर ज्योति इण्टर कॉलेज में सीनियर वर्ग में 623 व जूनियर वर्ग में 584, शाहजहांपुर भरगंवा में अवंतीबाई इंटर कॉलेज केंद्र पर सीनियर वर्ग में 654 में जूनियर वर्ग में 596, नवाबगंज में जे एस इंटर कॉलेज में सीनियर वर्ग में 748 व जूनियर वर्ग में 534 छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। परीक्षा दो वर्गों में आयोजित हुई जूनियर वर्ग कक्षा 6 से 9 प्रात: 9 से 10. 00 बजे तक तथा सीनियर वर्ग कक्षा 10 से परास्नातक तक प्रात: 11. 00 से 12. 00 तक। छात्रों ने छात्रवृत्ति व पुरस्कार पाने के लिए दिमागी कसरत की। परीक्षा में समसामयिक, राजनीति, खेलकूद, तार्किक योग्यता, भूगोल इतिहास, गणित आदि के प्रश्नों को शामिल किया गया।

संस्था के निदेशक सुरेन्द्र पाण्डेय ने बताया कि यह प्रतियोगिता 22 वर्षों से निरंतर आयोजित हो रही है। इसके माध्यम से जहां एक ओर छात्र वर्तमान समय के अनुसार सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ते हैं, वहीं दूसरी ओर संस्थान द्वारा छात्रों को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित भी किया जाता है। सामान्य ज्ञान परीक्षा का परिणाम सीनियर वर्ग 13 व 14 अगस्त 2024 एवं जूनियर वर्ग 17 अगस्त 2024 को एशियन कंप्यूटर इंस्टीट्यूट की शाखाओं पर घोषित होगा।

प्रजापति समाज के प्रतिभावान छात्र व छात्राओं को किया गया सम्मानित

गुरसहायगंज, कन्नौज। भारतीय प्रजापति हीरोज आर्गेनाइजेशन कन्नौज द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में सर्वप्रथम सभी अतिथियों ने दक्ष प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। मुख्य अतिथि पूर्व एडीएम राजितराम प्रजापति, पूर्व पालिकाध्यक्ष धीरेन्द्र आर्य, निहारिका आर्य, वरिष्ठ समाजसेवी प्रमोद आर्य सहित अन्य अतिथियों नें समाज के मेधाबी छात्र छात्राओं को पुरूस्कृत कर उत्साहबर्धन किया। रविवार को भारतीय प्रजापति हीरोज आर्गेनाइजेशन कन्नौज द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में मेधाबियों को पुरूस्कार भेंट कर सम्मानित करनें के उपरान्त अथितियों नें कहा कि ऐसे आयोजनों से युवाओं को आगे बढनें की प्रेरणा मिलती है। वहीं अन्य अतिथियों ने अपने संबोधन में शिक्षा को आगे बढाने की बात रखते हुये कहा कि जो भी समाज के सक्षम लोग हैं वो एक-दूसरे की मदद करें। जिससे प्रजापति समाज के लोग शिक्षित हो सकें। इस दौरान दिलानी प्रजापति, राजू प्रजापति, मदनपाल सिंह प्रजापति, प्रमोद, रवि, आशीष प्रजापति, संतराम प्रजापति, अनुज प्रजापति, नरेश प्रजापति, हरिश्चंद्र प्रजापति, विजय प्रजापति, रविंद्र कुमार प्रजापति, महेंद्र प्रजापति, रवीश कुमार प्रजापति, अनिल प्रजापति सहित समाज के सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

सिलेंडर में लगी आग से गृहस्थी ख़ाक ग्रामीणों ने बमुश्किल पर पाया काबू

गुरसहायगंज, कन्नौज। विकासखंड गुगरापुर के ग्राम मोहनपुर रतनपुर में खाना पकाते समय आग लग गई जिससे गरीब मजदूर की गृहस्थी जलकर खाक हो गई। ग्रामीणों के सामूहिक प्रयास के बाद आग पर काबू पाया जा सका लेकिन मौके पर अग्निशमन गाड़ी नहीं पहुंची थी। ग्रामीणों ने शासन व प्रशासन से पीड़ित गरीब को आर्थिक सहायता एवं प्रधानमंत्री आवास दिलाए जाने की मांग की है। मिली जानकारी के अनुसार मोहनपुर रतनपुर निवासी सुशील पुत्र हरनाथ की पत्नी शनिवार की शाम खाना पका रही थी तभी सिलेंडर लीक होने के कारण अचानक आग लग गई देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। परिजनों ने घर से भाग कर जान बचाई आसपास के ग्रामीणों ने आग बुझाने का अथक प्रयास किया एक ग्रामीण ने जलता हुआ सिलेंडर घर के बाहर खींच कर बहादुरी का परिचय दिया बल्कि सामूहिक प्रयास से बोरे फट्टे डालकर आग बुझाने में सफलता पाई। जिससे बड़ी दुर्घटना होने से बच गई लेकिन गरीब का घर गृहस्ती छप्पर सहित सभी सामान जलकर राख हो गया। खाने पीने एवं रहने की कोई जगह शेष नहीं बची ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान पर आरोप लगाते हुए कहा कि पीड़ित ग्रामीण नें कई बार आवास के लिये आवेदन किया लेकिन हर बार पक्षपात के चलते इस किसान को प्रधानमंत्री आवास नहीं मिल सका, यदि मिल जाता तो यह नौबत न आती।

सरस्वती बाल मन्दिर में आयोजित हुआ तृतीय आचार्य चिन्तन शिविर

फतेहपुर। सरस्वती बाल मंदिर इंटर कॉलेज रघुवंशपुरम में संस्थान की 20 शाखाओं के अध्यापक/अध्यापिकाओं (प्राथमिक कक्षाओं के) का तृतीय आचार्य चिंतन शिविर कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के प्रबंधक राकेश त्रिवेदी ने किया। शिविर में सर्वप्रथम मां शारदा का पूजन वंदन हुआ। तत्पश्चात विभिन्न शाखाओं के प्रधानाचार्यों का स्वागत। किया गया। शिविर में प्रबंधक ने कहा कि इतिहास में ध्रुव, प्रहलाद, शिवा जी, श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि ढेरों उदाहरण हैं कि बाल्यावस्था में रोपित संस्कारों का बच्चों पर स्थायी प्रभाव पड़ता है, इसलिए प्रारम्भ से ही बच्चों के अन्दर संस्कार रोपित करने का प्रयत्न करें। रघुवंशपुरम के प्रधानाचार्य शिव बाबू ने अध्यापन कार्य को संसार का सबसे पुनीत कार्य बताया। खागा के प्रधानाचार्य राज कपूर ने कहा कि बच्चे आपकी बोली-भाषा, आपकी गतिविधियों से स्थायी रूप से प्रभावित होते हैं। क्षेत्रीय प्रबंधक सरेनी अरविंद कुमार ने कहा कि आधुनिकता के इस दौड में बाल मन्दिर संस्थान सभी आधुनिक साधन बच्चों को उपलब्ध कराएगा एवं इसके साथ-साथ बच्चों को संस्कार परक शिक्षा भी देने का कार्य करेगा। कार्यक्रम में संस्थान के सभी प्रधानाचार्य क्रमश: विनोद तिवारी, श्रवण कुमार, रविशंकर, श्यामराखन शास्त्री, मनोज कुमार आदि उपस्थिति रहे।

बुंदेलखंड में गिरते जल स्तर को लेकर निकाली गयी जल कोष यात्रा

मुस्करा, हमीरपुर। अटल भूजल योजना के तहत कलश यात्रा निकालकर जल कोष यात्रा का शुभारंभ किया गया। रविवार के दिन कस्बा मुस्करा के ब्लॉक परिसर से जल योद्धा पदमश्री उमाशंकर पांडे के नेतृत्व में जल कोष यात्रा का शुभारंभ किया गया । इस यात्रा में सबसे पहले महिलाओं ने अपने सिर पर कलश रखकर ब्लॉक से कालिका देवी मंदिर तक यात्रा की गई और इस यात्रा को सफल बनाने के लिए तालाब के किनारे पूजन किया गया। इस यात्रा के द्वारा लोगों को संदेश दिया गया ष्जो न जग जल के लिए वह न बचेगा कल के लिए, प्रकृति का अनुपम उपहार है जिसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती किसी जीव व वनस्पति को वायु के बाद जल जीवन रक्षा के लिए अति आवश्यक है प्राचीन भारतीय संस्कृति में जल को जीवन माना गया है जल में जीवनम यही कारण है कि विश्व की समस्त सभ्यताओं ने विकास में जल की उपलब्धता का विशेष महत्व रहा है प्रदेश में 70 फीसदी सिंचाई भूजल संसाधनों पर निर्भर है जबकि पेयजल की लगभग 80 फीसदी और औद्योगिक क्षेत्र की लंबाई 85 फीसदी आवश्यकताओं की आपूर्ति भी भूजल स्रोतों से ही की जाती है। उन्होंने बताया कि 21 ब्लॉक बुंदेलखंड के जिनका जल स्तर लगातार गिरता चला जा रहा है। इसी को देखकर आज बुंदेलखंड के मुस्करा ब्लॉक में इस जल कोष यात्रा का शुभारंभ किया गया है ताकि अटल भू जल योजना के तहत जल को हम बचा सके और आने वाले भविष्य में हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित रख सके ।इसी मौके पर भूगर्भ जल विभाग की ओर से सत्येंद्र सिंह चौहान और जीतू राजपूत ने भूगर्भ जल योजना के तहत भूजल संरक्षण के तहत कठपुतली के द्वारा जल संरक्षण के लिए संदेश दिया । इस कार्यक्रम में अटल भूजल योजना के एक्सपर्ट उत्तर प्रदेश साकेत श्रीवास्तव के साथ जनपद के संबंधित अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे। खंड विकास अधिकारी प्रवेंद्र कुमार पांडेए ब्लॉक प्रमुख मुस्करा वीर नारायण राजपूत के साथ ब्लॉक के 11 ग्राम पंचायतों के प्रधान सचिव मौजूद रहे।

उद्धव ने भगवा विचारधारा छोड़ दी, जनता उन्हें माफ नहीं करेगी

भाषा। मुंबई

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने रविवार को शिवेसना (यूबीटी) के प्रमुख उद्धव ठाकरे पर तीखा हमला बोलते हुए दावा किया कि उन्होंने भगवा विचारधारा छोड़ दी है और छत्रपति शिवाजी महाराज की विरासत से खुद को दूर कर लिया है। उन्होंने कहा कि जनता उद्धव ठाकरे को माफ नहीं करेगी। इससे एक दिन पहले, ठाणे में शिवसेना (यूबीटी) कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए ठाकरे ने आरोप लगाया था कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे दिल्ली के आगे झुक गए हैं। उन्होंने कहा था कि आगामी विधानसभा चुनाव उन लोगों के खिलाफ लड़ाई है, जो राज्य से नफरत करते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री ने यह भी कहा था कि उनकी पार्टी के कार्यकर्ता ही उनके वाघ-नख हैं। उन्होंने वाघ-नख का जिक्र ऐतिहासिक लड़ाइयों में छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा इस्तेमाल किए गए हथियार के एक प्रतीकात्मक संदर्भ में किया।

जब केंद्रीय गृह मंत्री ने ठाकरे पर औरंगजेब फैन क्लब का प्रमुख होने का आरोप लगाया था, तो इसके जवाब में पिछले महीने ठाकरे ने भाजपा नेता अमित शाह को अहमद शाह अब्दाली करार दिया था। सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में बावनकुले ने कहा, औरंगजेब फैन क्लब के नेता उद्धव ठाकरे ने ठाणे जाकर भाजपा को राम मुक्त बनाने के बारे में खूब शोर मचाया, लेकिन यह आपके लिए इस जीवनकाल में संभव नहीं होगा। उन्होंने ठाकरे की रैलियों में हरे झंडों की मौजूदगी के लिए उनकी आलोचना की और ठाकरे के आवास के बाहर हुए विरोध प्रदर्शन का जिक्र किया, जहां मुस्लिम समुदाय के सदस्यों ने लोकसभा चुनावों में उनकी पार्टी को वोट देने के बाद वक्फ बोर्ड के प्रति उनके समर्थन की कमी पर सवाल उठाया था।

बावनकुले ने ठाकरे पर छत्रपति शिवाजी महाराज की विरासत छोड़ने, औरंगजेब के उत्तराधिकारियों की पालकी उठाने और भगवा त्यागने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, यह आपके पतन की शुरुआत है। निजी लाभ के लिए आप पूज्य बालासाहेब को भूल गए, जनता आपको माफ नहीं करेगी। इससे एक दिन पहले महा विकास आघाडी (एमवीए) के गठबंधन सहयोगियों ने ठाणे में उद्धव ठाकरे के काफिले पर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) कार्यकर्ताओं के हमले को रोकने में विफल रहने के लिए गठबंधन सरकार पर निशाना साधा था। ठाकरे शनिवार को ठाणे के गडकरी रंगायतन सभागार में एक कार्यक्रम के लिए पहुंचे थे, तभी मनसे के कुछ कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन करते हुए उनके काफिले पर टमाटर व गोबर फेंका। पुलिस ने मनसे के कुछ कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया।इससे पहले शुक्रवार को शिवसेना (यूबीटी) के कुछ सदस्यों ने बीड में मनसे प्रमुख राज ठाकरे के काफिले पर सुपारी फेंकी थी। इन घटनाओं पर प्रतिक्रिया देते हुए शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने रविवार को कहा, अब्दाली को यह देखकर मजा आता है कि मराठी लोग आपस में लड़ रहे हैं। राउत ने दावा किया कि अब्दाली ने कुछ लोगों को विभाजन पैदा करने के लिए ठेके पर रखा है, हालांकि उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया। राज ठाकरे के काफिले पर हमले के बारे में पूछे जाने पर राउत ने कोई जवाब नहीं दिया और इसे मराठा आरक्षण की वकालत करने वाले व्यक्तियों का मामला बताया।उन्होंने (उद्धव ठाकरे के काफिले को निशाना बनाने वाले) हमलावरों को चेतावनी देते हुए कहा कि उन्हें जारी राजनीतिक तनाव के बीच अपने परिवारों के बारे में सोचना चाहिए। उन्होंने कहा, मैं सभी से दो महीने तक इंतजार करने का अनुरोध करता हूं। आने वाले समय में इस हरकत के प्रति प्रतिक्रिया का पता चलेगा। इस बीच, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) की नेता और लोकसभा सदस्य सुप्रिया सुले ने भी उद्धव ठाकरे के काफिले पर हमले की निंदा की। उन्होंने इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताया और शिवसेना (यूबीटी) नेता की सुरक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की।

ठाणे में उद्धव के काफिले पर हमला: मुख्यमंत्री शिंदे ने कहा, यह सिर्फ क्रिया की प्रतिक्रिया

ठाणे। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एवं शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे ने कहा है कि ठाणे में शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे के काफिले को निशाना बनाया जाना क्रिया की प्रतिक्रिया है। शनिवार को जब ठाकरे यहां गडकरी रंगायतन सभागार में अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं की एक बैठक के लिए पहुंचे तो राज ठाकरे की अगुवाई वाली महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया और उनके काफिले पर गोबर और टमाटर फेंके। घटना के बारे में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए शिंदे ने शनिवार रात कहा, इसकी शुरुआत किसने की? शिवसेना (यूबीटी) कार्यकर्ताओं ने औरंगाबाद में राज ठाकरे के काफिले को निशाना बनाया। यह सिर्फ क्रिया की प्रतिक्रिया थी। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे और शिवसेना नेता आनंद दिघे के विचारों को त्याग दिया है, उन्हें ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। शुक्रवार को शिवसेना (यूबीटी) समर्थकों ने बीड शहर में उद्धव के चचेरे भाई राज ठाकरे के काफिले पर सुपारी फेंकी थी।

न्यायालय के निर्देश पर आयोग जल्द ही जम्मू कश्मीर मे चुनाव की तारीखों की घोषणा करेगा: उपराज्यपाल

जम्मू। (भाषा) उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने रविवार को दोहराया कि अनुच्छेद 370 के कुछ प्रावधानों को निरस्त किए जाने के बाद से जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनावों पर सरकार का रुख अपरिवर्तित रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि निर्वाचन आयोग जल्द ही विधानसभा चुनाव की तारीखों की घोषणा करेगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रशासन केंद्र शासित प्रदेश में चुनाव कराने के लिए पूरी तरह से तैयार है। सिन्हा ने विश्वास जताया कि चुनाव शांतिपूर्ण और निष्पक्ष होंगे। सिन्हा ने यहां पीटीआई-भाषा के साथ एक विशेष साक्षात्कार में कहा, निर्वाचन आयोग की पूरी टीम जम्मू-कश्मीर आई और जमीनी हकीकत का आकलन करने के बाद लौट गई। चुनाव की तारीखें आयोग द्वारा तय की जाती हैं और जिस दिशा में चीजें आगे बढ़ रही हैं, मुझे उम्मीद है कि वह जल्द ही माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुसार विधानसभा चुनाव की तारीख घोषित करेगा। उन्होंने कहा, मैं आपको उस समय में ले जाना चाहूंगा जब अनुच्छेद 370 और 35ए के कुछ प्रावधानों को निरस्त किया गया था। उस दिन गृह मंत्री ने संसद में कहा था कि पहले परिसीमन होगा, उसके बाद विधानसभा चुनाव होंगे और फिर उचित समय पर राज्य का दर्जा दिया जाएगा। उस दिन से लेकर आज तक इस रुख में कोई बदलाव नहीं आया है। सिन्हा ने कहा, विधानसभा का आकार बढ़ाया गया और उसके बाद न्यायमूर्ति रंजना देसाई की अध्यक्षता में परिसीमन आयोग ने नई सीमाएं निर्धारित करने पर काम किया। यह एक समय लेने वाली प्रक्रिया थी। परिसीमन आयोग ने जम्मू-कश्मीर का भी दौरा किया।

पंजाब के होशियारपुर में उफनती नदी में बह गया वाहन

एक परिवार के आठ सदस्यों समेत नौ लोगों की हुई मौत

होशियारपुर। (भाषा) पंजाब के होशियारपुर से लगभग 34 किलोमीटर दूर जैजों में रविवार को पानी से लबालब छोटी बरसाती नदी में एक वाहन के बह जाने से एक परिवार के आठ सदस्यों समेत नौ लोगों की मौत हो गई, जबकि दो अन्य लापता हैं। पंजाब में हुई भारी बारिश के कारण नदी उफान पर है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि परिवार के 11 सदस्य स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल (एसयूवी) चालक के साथ हिमाचल प्रदेश के ऊना जिले के मेहतपुर के निकट देहरा से विवाह समारोह में शामिल होने पंजाब के एसबीएस नगर जिले के मेहरोवाल गांव जा रहे थे। अधिकारियों ने कहा कि जब वाहन जैजों में भारी बारिश के कारण पानी से लबालब भरी छोटी नदी से गुजरा, तो वह बह गया। पुलिस ने कहा कि कुछ स्थानीय लोगों ने पानी की तेज लहरों के कारण वाहन चालक को नदी पार करने को लेकर आगाह भी किया, लेकिन वह उनकी बात अनसुनी कर आगे बढ़ गया। हालांकि, स्थानीय निवासी वाहन में सवार दीपक भाटिया को किसी तरह बचाकर जैजों में सरकारी चिकित्सालय ले गए। घटना के एक वीडियो में वाहन पानी से भरी नदी में फंसा हुआ दिख रहा है। होशियारपुर की उपायुक्त कोमल मित्तल ने कहा कि बचाव और लापता व्यक्तियों की तलाश से संबंधित अभियान में सहायता के लिए राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की एक टीम तैनात की गई है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र लांबा ने बताया कि नदी से पांच महिलाओं समेत नौ लोगों के शव बरामद किए गए हैं, जबकि दो लापता लोगों की तलाश जारी है। मृतकों के परिजन ने पुलिस को बताया कि वाहन में 12 लोग सवार थे। जैजों में नदी के दूसरी ओर, हिमाचल प्रदेश से लाए गए करीब पांच वाहन और एक जेसीबी मशीन तैनात है, और पानी कम होने की प्रतीक्षा की जा रही है। लांबा ने बताया कि इन वाहनों में सवार लोगों ने चालक को रुकने के लिए कहा, लेकिन वह वाहन को आगे ले गया, जिससे यह दुखद घटना हुई।पुलिस उपाधीक्षक जागीर सिंह ने बताया कि वाहन तेज पानी में बहकर लगभग 200 मीटर नीचे चला गया। पुलिस ने कहा कि मृतकों की पहचान सुरजीत भाटिया, उनकी पत्नी परमजीत कौर, भाई स्वरूप चंद, भाभी बिंदर, भतीजियों भावना और अनु, भतीजे हर्षित और वाहन चालक बिंदु के रूप में हुई है। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने इस दुखद घटना पर शोक व्यक्त किया और कहा कि राज्य सरकार इस संकट की घड़ी में पीड़ितों के परिवार के साथ खड़ी है। उन्होंने आश्वासन दिया कि राज्य सरकार की ओर से उन्हें हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी और इस संबंध में ऊना जिला प्रशासन को निर्देश दिए गए हैं।

बाणगंगा में नहाते समय सात युवकों की डूबने से मौत

जयपुर। (भाषा) राजस्थान के भरतपुर जिले के बयाना सदर थाना क्षेत्र में रविवार को बाणगंगा नदी में नहाते समय सात युवकों की डूबने से मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि श्रीनगर गांव के आठ युवक गांव के पास से बह रही बाणगंगा नदी में नहाने गए थे तथा नदी में एक गहरा गड्ढे में सात युवक फंस गए और डूब गए जबकि एक युवक सुरक्षित बच निकला। उसने गांव में जाकर घटना की जानकारी दी तो ग्रामीण मौके पर पहुंचे और सभी सात शवों को बाहर निकाला गया। थानाधिकारी बलराम यादव ने बताया कि मृतक युवकों की पहचान पवन सिंह जाटव (20), सौरभ जाटव (18), भूपेंद्र जाटव (18), शांतनु जाटव (18), लक्खी जाटव (20), पवन जाटव (22) और गौरव जाटव (16) के तौर पर हुई है। उन्होंने बताया कि सभी मृतक युवक आपस में रिश्तेदार हैं और एक ही गांव के रहने वाले हैं।

भारत में घुसपैठ करते 11 बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया गया

नई दिल्ली। (भाषा) पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा और मेघालय में अंतरराष्ट्रीय सीमा के रास्ते भारत में घुसपैठ करने का प्रयास करते समय 11 बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया गया है। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने रविवार को यह जानकारी दी। एक प्रवक्ता ने कहा कि उनसे पूछताछ की जा रही है और विस्तृत कानूनी कार्वाई के लिए उन्हें राज्य की पुलिस को सौंपा जाएगा। उन्होंने कहा कि बीएसएफ आपसी मुद्दों, विशेषकर भारतीय नागरिकों और बांग्लादेश में अल्पसंख्यक समुदायों के लोगों पर अत्याचार की रोकथाम के लिए अपने समकक्ष बीजीबी के साथ नियमित संपर्क में है। बीएसएफ के कोलकाता मुख्यालय वाले दक्षिण बंगाल फ्रंटियर ने एक बयान में कहा कि उसकी पूर्वी कमान के प्रमुख, अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी) रवि गांधी ने शनिवार को एक सम्मेलन की अध्यक्षता की, जिसमें बांग्लादेश में मौजूदा अशांति के बीचै और 15 अगस्त को आगामी स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर 4,096 किलोमीटर लंबी भारत-बांग्लादेश सीमा पर सुरक्षा की समीक्षा की गई। बीएसएफ ने कहा, भारत में घुसपैठ करते समय 11 बांग्लादेशी नागरिकों को सीमा पर हिरासत में लिया गया है। पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा सीमा से दो-दो, जबकि मेघालय सीमा से सात को पकड़ा गया। उन्होंने बताया कि उनसे पूछताछ की जा रही है और विस्तृत कानूनी कार्वाई के लिए उन्हें राज्य की पुलिस को सौंप दिया जाएगा। उन्होंने कहा, सीमा नियंत्रण, सुरक्षा और प्रबंधन को और बेहतर बनाने के लिए विस्तृत विचार-विमर्श किया गया है। इसके अलावा, अपने समकक्ष बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (बीजीबी) के साथ घनिष्ठ सहयोग जारी रखने का निर्णय लिया गया हैै। उन्होंने कहा कि बीएसएफ आपसी मुद्दों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाने के लिए बीजीबी के साथ फ्लैग बैठक कर रही है और बीजीबी बांग्लादेश में भारतीय नागरिकों विशेष रूप से अल्पसंख्यक समुदायों के लोगों पर अत्याचारों की रोकथाम को लेकर अच्छी प्रतिक्रिया दे रही है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने हाल ही में शेख हसीना सरकार के पतन के बाद बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के सामने आने वाली समस्याओं पर विचार करने के लिए एडीजी के नेतृत्व में एक समिति का गठन किया है।

हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के संबंध में केंद्र से कदम उठाने की मांग

संत समाज बांग्लादेश कूच को भी है तैयार

हरिद्वार। (भाषा) बांग्लादेश में हिन्दू समाज के साथ हो रहे अत्याचार पर साधु-संतों ने रविवार को गंभीर चिंता जाहिर करते हुए केंद्र सरकार से इस संबंध में ठोस कदम उठाने की मांग की और कहा कि जरूरत पड़ने पर संत समाज बांग्लादेश कूच करने को भी तैयार है। यहां अवधूत मण्डल आश्रम में साधु-संतों की एक बैठक की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष श्रीमहंत रविन्द्र पुरी ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है और मंदिरों को तोड़ा जा रहा है। उन्होंने कहा कि वहां हिंदुओं पर हमले हो रहे हैं तथा उनके प्रतिष्ठानों को जलाया जा रहा है और उनकी हत्याएं की जा रही हैं। महामण्डलेश्वर स्वामी प्रबोधानंद गिरि महाराज ने कहा कि यदि बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले नहीं रूके तो भारत का संत समाज जरूरत पड़ने पर बांग्लादेश कूच के लिए भी तैयार है। श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी के सचिव श्री मंहत पुरी ने कहा कि इससे निपटने के लिए केंद्र सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाए और बांग्लादेश को कड़ी चेतावनी दे जिससे

बांग्लादेश में हिंदुओं की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र से भी इस मामले में हस्तक्षेप करने की मांग की। बैठक में महामण्डलेश्वर स्वामी यतीन्द्रानंद गिरि ने कहा कि बांग्लादेश की घटना से हिंदू समाज उद्वेलित है और आरोप लगाया कि चुन-चुनकर उन्हें निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने दावा किया कि महिलाओं व बालिकाओं के साथ बलात्कार कर उनकी हत्या की जा रही है। गिरि ने दावा किया कि हरिद्वार में भी बड़ी संख्या में रोहिंग्या व बांग्लादेशी मुसलमान रह रहे हैं, उन्हें भी देश से बाहर किया जाना चाहिए अन्यथा वे देश के लिए बड़ा खतरा बन सकते हैं। महामण्डलेश्वर स्वामी रूपेन्द्र प्रकाश महाराज ने केंद्र को बांग्लादेश में हिंदुओं व मठ-मंदिरों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाने को कहा। उन्होंने किसी का नाम लिए बिना पूछा कि एक वर्ग विशेष से प्रेम का समय-समय पर इजहार करने वाले आज चुप क्यों हैं? उन्होंने कहा कि भारत की मदद से फलने-फूलने वाले बांग्लादेश की नई पीढ़ी में जहर घोलकर भारत को कमजोर करने की कोशिश की जा रही है जिससे केंद्र को सतर्क रहना चाहिए। महामण्डलेश्वर स्वामी प्रबोधानंद गिरि महाराज ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग भी इस संबंध में मौन साधे बैठा है।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में संभल में निकाला गया मार्च

संभल। (भाषा) बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ हो रहे कथित अत्याचार के विरोध में रविवार को संभल जिले के चंदौसी में एक हिंदूवादी संगठन ने जनाक्रोश मार्च निकाला। हिंदू संगठन सनातन सेवक संघ द्वारा निकाले गए जनाक्रोश मार्च में लगभग 50 लोगों ने भाग लिया। प्रदर्शनकारियों ने भारत में रोहिंग्या शरणार्थियों और बांग्लादेशी जिहादियों के खिलाफ विवादास्पद नारे लगाए।संगठन के सदस्य कौशल किशोर ने बताया कि बांग्लादेश में तख्तापलट के बाद जिस तरह से हिंदू अल्पसंख्यक समुदाय के साथ अत्याचार हो रहे हैं, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। किशोर ने कहा, हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में हमने यह मार्च निकाला है। हम देश के प्रधानमंत्री से यह मांग करते है कि बांग्लादेश में रह रहे हिंदुओं के साथ अत्याचार बंद हो। वहीं, संगठन के अन्य सदस्य विवेक नागपुर ने कहा, हम बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ अत्याचार तुरंत बंद करने की अपील करते हैं। साथ ही सरकार वहां के जिहादियों के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक करे।

माकपा ने भी हमले को लेकर चिंता जताई

नई दिल्ली। (भाषा) मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के पोलित ब्यूरो ने रविवार को बांग्लादेश में हिंदू मंदिरों पर हमलों को लेकर चिंता व्यक्त की और मांग की कि देश की अंतरिम सरकार अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। माकपा पोलित ब्यूरो ने यह भी कहा कि भारत सरकार को बांग्लादेश के समक्ष यह मुद्दा उठाना चाहिए। पार्टी ने एक बयान में कहा, माकपा पोलित ब्यूरो शेख हसीना सरकार के पतन के बाद से बांग्लादेश में हिंदू मंदिरों और अल्पसंख्यक समुदाय पर कई हमलों की रिपोर्ट पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त करता है। बयान में कहा गया, यह स्पष्ट है कि बांग्लादेश में अराजक स्थिति के मद्देनजर कट्टरपंथी ताकतें अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बना रही हैं। इसमें कहा गया, अल्पसंख्यकों, उनके घरों और पूजा स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अंतरिम सरकार को तत्काल और ठोस कदम उठाने चाहिए।

सेवा के विचार के साथ भारत लौटा हूं, भाजपा पर है मुझे चुनाव लड़ाए या नहीं: शौर्य डोभाल

नई दिल्ली। भाजपा नेता शौर्य डोभाल ने कहा है कि उन्होंने कभी चुनाव लड़ने की इच्छा नहीं जताई है, लेकिन अगर पार्टी उन्हें चुनाव मैदान में उतारने का फैसला करती है तो वह इसके लिए तैयार हैं। बैंकर से राजनेता बने डोभाल ने कहा कि वह सेवा के विचार के साथ 2009 में ब्रिटेन से भारत वापस आए और अपने संगठन इंडिया फाउंडेशन की स्थापना की। यह पूछे जाने पर कि क्या उन्हें इसलिए चुनावी राजनीति में मौका नहीं मिला क्योंकि उनके पिता अजीत डोभाल राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार हैं, उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा कि शायद यह मेरे पिता की वजह से हो सकता है, लेकिन जाहिर है कि मुझे टिकट नहीं मिला और इसीलिए मैंने चुनाव नहीं लड़ा है। यहां समाचार एजेंसी के मुख्यालय में पीटीआई संपादकों के साथ बातचीत में भाजपा की उत्तराखंड राज्य कार्यकारी समिति के सदस्य डोभाल ने कहा कि उन्होंने कभी भी चुनाव लड़ने के लिए पार्टी से टिकट नहीं मांगा। चुनावी लड़ने से जुड़े एक सवाल पर शौर्य डोभाल ने कहा, जब मैं इस क्षेत्र में आया था, तो मैं राजनीति के नजरिए से नहीं आया था।

पेज 1 का शेष

कोलकाता...

और स्वस्थ व्यक्ति की मौत इतनी जल्दी नहीं हो सकती। उन्होंने कहा, पोस्टमार्टम रिपोर्ट पूरी तरह से सामने नहीं आई है, इसलिए हम यह समझ नहीं पा रहे हैं कि यह सामूहिक बलात्कार था या किसी जानवर का कृत्य था। संजय दास नामक नागरिक स्वयंसेवक बंगाल पुलिस की बिना शस्त्र वाली शाखा में दैनिक वेतन पर काम करता है, जिसे अपराध करने के आरोप में शनिवार को गिरफ्तार किया गया। उसने अपराध कबूल कर लिया है और पूछताछ करने वालों से उसे जल्द से जल्द फांसी पर लटकाने के लिए कहा है, जिससे नागरिक समाज के सदस्यों में संदेह पैदा हो रहा है कि क्या उसे कुछ अन्य लोगों को बचाने के लिए बलि का बकरा बनाया जा रहा है। यह तब हुआ जब सोशल मीडिया पर एक निराधार ऑडियो क्लिपिंग वायरल हुई जिसमें एक रेजिडेंट डॉक्टर दूसरे व्यक्ति से मामले को दबाने के प्रयासों के बारे में बात कर रहा है। बातचीत में दोनों को इस बारे में बात करते हुए सुना जा सकता है कि सीसीटीवी फुटेज से कैसे छेड़छाड़ की जा सकती है और क्या उच्च संबंधों वाले किसी साथी डॉक्टर ने इस क्रूर कृत्य में भाग लिया हो सकता है। पीड़िता के माता-पिता ने यह भी कहा कि वे जांच से संतुष्ट नहीं हैं, उन्होंने कहा, इसमें कोई अन्य आंतरिक व्यक्ति या अंदरूनी शामिल होना चाहिए क्योंकि मेरी बेटी आरजी मेडिकल कॉलेज नहीं जाने की शिकायत करती थी। उस पर किसी बात का दबाव था...उसका बलात्कार किया गया और उसकी हत्या कर दी गई और एक व्यक्ति अकेले ऐसा नहीं कर सकता। सरकार ने रविवार को अस्पताल अधीक्षक और उप-प्रधानाचार्य को हटा दिया, जबकि जूनियर डॉक्टरों और पीड़ित के परिवार के सदस्यों ने प्रिंसिपल को हटाने और चेस्ट मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष सहित साथी डॉक्टरों से पूछताछ की मांग की। इस बीच, बंगाल भाजपा अध्यक्ष और कनिष्ठ केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार ने रविवार को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा को एक पत्र लिखकर मृतक डॉक्टर को न्याय दिलाने में उनके शीघ्र हस्तक्षेप करने की मांग की। मजूमदार ने कहा, मैंने जेपी नड्डा जी को एक पत्र लिखा है जो स्वास्थ्य मंत्री और भाजपा अध्यक्ष भी हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया बंगाल के सभी मेडिकल कॉलेजों और अन्य अस्पतालों की सुरक्षा और सुरक्षा परिदृश्य का निरीक्षण करने के लिए विशेषज्ञों की एक टीम भेजें। डॉक्टरों के लिए कोई सुरक्षा नहीं है और टीएमसी के लोग पूरी चीज को नियंत्रित कर रहे हैं। उन्होंने मामले की सीबीआई जांच की भी मांग की। मजूमदार ने कहा, मामले को दबाने का गंभीर प्रयास किया जा रहा है, ताकि किसी प्रभावशाली व्यक्ति को बचाया जा सके...यहां तक कि गिरफ्तार किया गया नागरिक स्वयंसेवक भी टीएमसी से जुड़े पुलिस संगठन का सदस्य है। उन्होंने कहा कि भाजपा आंदोलनकारी डॉक्टरों के साथ खड़ी रहेगी और पीड़िता को न्याय दिलाने के लिए किसी भी हद तक जाएगी। संयोग से, टीएमसी के राष्ट्रीय महासचिव और पार्टी के दूसरे नंबर के नेता ने शनिवार को ऐसे जघन्य कृत्यों में शामिल ऐसे अपराधियों के लिए मुठभेड़ की वकालत की थी। उन्होंने कहा, मैं केंद्र से ऐसे कानून लाने की अपील करूंगा, जिससे ऐसे आरोपियों को गिरफ्तार किया जा सके, उन पर मुकदमा चलाया जा सके और फिर एक हफ्ते के भीतर उनका एनकाउंटर किया जा सके, ताकि दूसरों को सबक मिल सके।

उप चुनाव...

लेकिन सरकार इसपर पर्याप्त ध्यान नहीं दे रही है। बसपा प्रमुख ने कहा कि सरकार की नीयत और नीति पर जनता अब आंख बंद कर विश्वास नहीं करती है, लिहाज़ा बसपा को अपनी गरीब व सर्वजन हितकारी बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की नीति और सिद्धांत के जरिए जनता का विश्वास जीतने का प्रयास जारी रखना होगा, जिसका चुनावी लाभ भी जरूरी एवं स्वाभाविक है। मायावती ने यह भी पूछा कि जब एससी-एसटी वर्ग के लोगों को आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ेपन के आधार पर आरक्षण की सुविधा दी गई है, तब इसमें 'क्रीमी लेयर' का सवाल ही कहां से पैदा होता है? उन्होंने कहा कि इन समुदायों के लोगों के उप-वर्गीकरण की सोच अनुचित है। कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर उत्तर प्रदेश सरकार पर हमला बोलते हुए मायावती ने कहा कि कानून-व्यवस्था के मामले में सरकार की सख्ती कागजों पर ज्यादा है और भाजपा के लोगों पर यह बेअसर है। बाढ़ से कई लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है।

हिंडनबर्ग..

वर्ष 2017 में सेबी के पूर्णकालिक सदस्य के रूप में माधवी पुरी बुच की नियुक्ति और मार्च 2022 में इसका चेयरपर्सन बनने से काफी पहले ए निवेश किए गए थे। इसके मुताबिक, बरमूडा स्थित ग्लोबल ऑपर्च्युनिटीज फंड भी इस फंड में निवेश करने वालों में शामिल था। अदाणी समूह से जुड़ी इकाइयों द्वारा समूह की कंपनियों के शेयरों में कारोबार के लिए कथित तौर पर ग्लोबल ऑपर्च्युनिटीज फंड का ही इस्तेमाल किया गया था। निवेश कंपनी ने व्हिसलब्लोअर दस्तावेजों का हवाला देते हुए कहा, सेबी की वर्तमान प्रमुख बुच और उनके पति के पास अदाणी समूह में धन के हेराफेरी घोटाले में इस्तेमाल किए गए दोनों अस्पष्ट ऑफशोर फंड में हिस्सेदारी थी। विदेशी बाजारों में निवेश करने वाले फंड को ऑफशोर फंड या विदेशी कोष कहते हैं।रिपोर्ट में दावा किया गया है कि विनोद अदाणी अस्पष्ट विदेशी कोष बरमूडा और मॉरीशस कोषों को नियंत्रित करते थे। हिंडनबर्ग का आरोप है कि इन कोषों का इस्तेमाल धन की हेराफेरी करने और समूह के शेयरों की कीमतें बढ़ाने के लिए किया गया था। हिंडनबर्ग ने अपनी ताजा रिपोर्ट में कहा, आईआईएफएल में एक प्रमुख के हस्ताक्षर वाले फंड की घोषणा में कहा गया है कि निवेश का स्रोत वेतन है और दंपति की कुल संपत्ति एक करोड़ अमेरिकी डॉलर आंकी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, दस्तावेजों से पता चलता है कि अच्छी साख वाले हजारों भारतीय म्यूचुअल फंड होने के बावजूद सेबी की चेयरपर्सन माधवी बुच और उनके पति ने कम परिसंपत्तियों के साथ एक बहुस्तरीय विदेशी कोष में हिस्सेदारी ली थी। हिंडनबर्ग ने कहा कि इनकी परिसंपत्तियां उच्च जोखिम वाले अधिकार क्षेत्र से होकर गुजरती थीं। इसकी देखरेख घोटाले से कथित तौर पर जुड़ी एक कंपनी करती थी। यह वही इकाई है, जिसे अदाणी के निदेशक चलाते थे और विनोद अदाणी ने कथित अदाणी नकदी हेरफेर घोटाले में महत्वपूर्ण रूप से उपयोग किया था।रिपोर्ट में उच्चतम न्यायालय के उस आदेश का हवाला भी दिया गया है जिसमें कहा गया था कि सेबी इस बात की जांच में खाली हाथ रहा कि अदाणी के कथित विदेशी शेयरधारकों का वित्तपोषण किसने किया था। हिंडनबर्ग ने कहा, अगर सेबी वास्तव में विदेशी कोष धारकों को ढूंढना चाहता था तो शायद सेबी प्रमुख खुद को आईने में देखकर इसकी शुरुआत कर सकती थीं। इसमें कहा गया, हमें यह आश्चर्यजनक नहीं लगता कि सेबी उस मामले का पीछा नहीं करना चाहता था, जो उसके अपने प्रमुख तक जाता था।सेबी ने इस साल 26 जून को हिंडनबर्ग को एक कारण बताओ नोटिस भेजकर "जानबूझकर सनसनी फैलाने और कुछ तथ्यों को विकृत करने के साथ अपना दांव लगाने के लिए न्यूयॉर्क हेज फंड के साथ काम करने का आरोप लगाया था। इससे पहले जनवरी, 2023 में हिंडनबर्ग रिसर्च ने आरोप लगाया था कि अदाणी समूह खुल्लम-खुल्ला शेयरों में गड़बड़ी और लेखा धोखाधड़ी में शामिल रहा है। उस समय अदाणी समूह की प्रमुख कंपनी अदाणी एंटरप्राइजेज 20,000 करोड़ रुपए का अनुवर्ती सार्वजनिक निर्गम (एफपीओ) लाने की तैयारी कर रही थी। वहीं अमेरिका की शोध एवं निवेश कंपनी हिंडनबर्ग रिसर्च द्वारा भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) की प्रमुख माधवी बुच पर लगाए गए आरोपों के बीच समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को सेबी की जांच की मांग की।

मुल्ला पेरियार....

पर ऊपर बताए गए पाँच जिलों के 40 लाख से ज़्यादा लोग मारे जाएंगे। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टलिन द्वारा मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष में पांच करोड़ रुपए दान करने के कदम को केरल में राज्य सरकार की चुप्पी को भुनाने की चाल के रूप में देखा जा रहा है। जॉर्ज ने कहा, जिस 8100 एकड़ ज़मीन पर बांध बनाया गया है, वह केरल की है और बांध का निर्माण त्रावणकोर राज्य द्वारा दिए गए पैसे से किया गया है। तमिलनाडु को इसका फ़ायदा मिल रहा है और वह इसे खा भी रहा है।

पीएम ने जलवायु अनुकूल बीजों की 109 किस्में जारी कीं

कृषि उपज बढ़ाने में मिलेगी मदद

भाषा। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कृषि और बागवानी फसलों की उच्च उपज वाली, जलवायु अनुकूल और जैव-सुदृढ़ीकृत बीजों की 109 किस्मों को जारी किया। इस पहल का उद्देश्य कृषि उत्पादकता और किसानों की आय को बढ़ाना है। इन किस्मों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने विकसित किया है और ए कुल 61 फसलों से संबंधित हैं। इनमें 34 खेतों में लगाई जाने वाली और 27 बागवानी की फसलें हैं। मोदी ने दिल्ली के पूसा परिसर में तीन प्रायोगिक कृषि भूखंडों पर बीजों को पेश किया। इस मौके पर प्रधानमंत्री ने किसानों और वैज्ञानिकों के साथ बातचीत भी की। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, मोदी ने किसानों के साथ इन नई किस्मों के महत्व पर चर्चा करते हुए कृषि में मूल्य संवर्धन के महत्व पर जोर दिया। इस अवसर पर मौजूद किसानों ने कहा कि 61 फसलों से संबंधित ए नई किस्में कम लागत के कारण उनके लिए अत्यधिक लाभकारी होंगी। प्रधानमंत्री ने बाजरे के महत्व पर चर्चा की और इस बात पर जोर दिया कि लोग किस तरह पौष्टिक भोजन का रुख कर रहे हैं। उन्होंने प्राकृतिक खेती के लाभों और जैविक खेती के प्रति आम लोगों की बढ़ती रुचि के बारे में भी बात की। मोदी ने कहा कि लोगों ने जैविक खाद्य पदार्थों का उपभोग और मांग करना शुरू कर दिया है। बयान के मुताबिक, किसानों ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में सरकार के प्रयासों और कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) की भूमिका की भी सराहना की। मोदी ने सुझाव दिया कि केवीके को हर महीने विकसित की जा रही नई किस्मों के लाभों के बारे में किसानों को सक्रिय रूप से बताना चाहिए। प्रधानमंत्री ने इन नई फसल किस्मों के विकास के लिए वैज्ञानिकों की भी सराहना की। केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बाद में संवाददाताओं से कहा कि आज का दिन किसानों के लिए ऐतिहासिक है, क्योंकि 61 फसलों की बीजों की 109 किस्में जारी की गई हैं। इससे किसानों की आय बढ़ाने, उत्पादन बढ़ाने और लागत कम करने में मदद मिलेगी। चौहान ने कहा कि इन फसलों के बीज जलवायु के अनुकूल हैं और प्रतिकूल मौसम में भी अच्छी फसल दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि ए किस्में पोषण से भरपूर हैं। वैज्ञानिकों ने बताया कि वे अप्रचलित फसलों को मुख्यधारा में लाने के लिए प्रधानमंत्री के सुझाव के अनुरूप काम कर रहे हैं। खेती की फसलों में अनाज, बाजरा, चारा, तिलहन, दलहन, गन्ना, कपास और फाइबर फसलें शामिल हैं। वहीं बागवानी की फसलों में फलों, सब्जियों, मसालों, फूलों और औषधीय पौधों की नई किस्में शामिल हैं। प्रधानमंत्री मोदी वर्ष 2014 से ही किसानों की आय बढ़ाने के लिए टिकाऊ खेती के तरीकों और जलवायु अनुकूल तरीकों की वकालत करते रहे हैं। उन्होंने लगातार जैव-सुदृढ़ किस्मों को बढ़ावा देने पर जोर दिया है।

उपचुनाव के बाद राजग की नजर रास में बहुमत हासिल करने पर

नई दिल्ली। अगले महीने राज्यसभा की 12 सीटों के लिए होने वाले उपचुनाव के बाद भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को उच्च सदन में स्पष्ट बहुमत हासिल होने की उम्मीद है। इससे पार्टी को वक्फ (संशोधन) विधेयक जैसे प्रमुख विधेयकों को पारित कराने में मदद मिलेगी। वर्तमान में 229 सदस्यों वाले उच्च सदन में भाजपा के 87 सांसद हैं तथा इसके सहयोगी दलों के साथ यह संख्या 105 है। छह मनोनीत सदस्यों, जो आमतौर पर सरकार के पक्ष में वोट करते हैं, को मिलाकर राजग के सांसदों की संख्या 111 हो जाती है, जो 115 के बहुमत के आंकड़े से चार कम है। उच्च सदन

में कांग्रेस के 26 सदस्य हैं तथा इसके सहयोगी दलों के 58 सदस्य और जुड़ने से विपक्षी गठबंधन के सदस्यों की संख्या 84 हो गई है। प्रमुख तटस्थ दलों में 11 सदस्यों वाली वाईएसआर कांग्रेस पार्टी और आठ सदस्यों वाली बीजद शामिल हैं। नौ राज्यों की 12 रिक्त राज्यसभा सीटों के लिए तीन सितंबर को चुनाव होगा। भाजपा और इसके सहयोगी दलों को चुनाव में 12 में से 11 सीट मिलने की उम्मीद है, जिससे 245 सदस्ईय सदन में राजग का संख्याबल 122 हो जाएगा। जम्मू-कश्मीर से उच्च सदन में चार सीट रिक्त हैं क्योंकि केंद्र शासित प्रदेश को अभी तक अपनी पहली विधानसभा नहीं मिली है। इससे राज्यसभा की प्रभावी संख्या घटकर 241 रह गई है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल, सर्बानंद सोनोवाल और ज्योतिरादित्य सिंधिया समेत मौजूदा सदस्यों के लोकसभा के लिए चुने जाने के कारण राज्यसभा की 10 सीट खाली हो गई हैं। तेलंगाना और ओडिशा में भी दो सीटों के लिए उपचुनाव होना है।

अन्नामलाई ने तिरंगा यात्रा की अनुमति नहीं देने पर द्रमुक पर निशाना साधा

तिरुपुर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की तमिलनाडु इकाई के अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने रविवार को कहा कि पुलिस ने उनकी पार्टी को मोटरसाइकिल पर तिरंगा यात्रा निकालने की अनुमति देने से इनकार कर दिया। अन्नामलाई ने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) ने दिखा दिया कि उसे राष्ट्रीय ध्वज पसंद नहीं है।अन्नामलाई ने यहां संवाददाताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हर घर तिरंगा अपील और पार्टी की देश भर में तिरंगा यात्रा निकालने की योजना का भी जिक्र किया।उन्होंने कहा, यह भाजपा का झंडा नही है और सभी का स्वागत है। यात्रा में वाहन और राष्ट्रीय ध्वज होंगे। यह तिरंगा यात्रा है और इसका उद्देश्य लोगों में (बेहतर) जागरूकता पैदा करना और सभी घरों पर फहराते राष्ट्रीय ध्वज को देखना है। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने कहा, यह एक बहुत आश्चर्य की बात है, जो सिर्फ तमिलनाडु में हुई है। द्रमुक के लोगों के लिए राष्ट्रीय ध्वज खुद एक समस्या है। देखिए कि वे किस तरह दिखा रहे है कि उन्हें राष्ट्रीय ध्वज पसंद नहीं है। यात्रा के लिए अनुमति न देकर उन्होंने फिर से अपना गुस्सा जाहिर कर दिया है।

भाईचारे और देशभक्ति से सराबोर करेगी नमक निशान

मुंबई। अमेज़न मिनीटीवी अपनी आनेवाली सीरीज़ नाम नमक निशान के साथ दोस्ती और भाईचारे की भावना का जश्न मनाने की तैयारी कर चुकी है। इस स्ट्रीमिंग सेवा ने आज एक दिलकश ट्रेलर को पेश किया, जिसमें ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकादमी ओटीए पर आधारित युवा कैडेटों के प्रेरणादायक सफ़र की झलक दिखाई गई है। यह सीरीज़ इन युवा कैडेटों की कहानी पर आधारित है जो भारत के फ़ौजी बनने के अपने लक्ष्य को पाने के लिए वर्गए संप्रदाय और भी बहुत सी बातों के साथ.साथ अपने व्यक्तिगत मतभेदों को भूलकर आगे निकल आते हैं। यह कहानी सम्मान, वीरता और अटूट भाईचारे के सार को प्रस्तुत करने की कोशिश करती है। जगरनॉट स्टूडियो द्वारा प्रोड्यूस की गई हैए जिसमें वरुण सूदए दानिश सूदए हेली शाह और रोशनी वालिया की मुख्य अदाकारियाँ हैंए नाम नमक निशान 14 अगस्त से अमेज़न मिनीटीवी पर निःशुल्क प्रीमियर की जायेगी।

हरियाणाः तेरह साल के लड़के पर पांच वर्षीय बालिका से दुष्कर्म का आरोप

भिवानी (हरियाणा)। जिले के उचाना थाना इलाके के एक गांव में तेरह वर्षीय एक लड़के ने पांच साल की एक बच्ची के साथ कथित रूप से दुष्कर्म किया है। पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि पीड़िता की मां ने रविवार को उचाना थाने में शिकायत दी, जिसके बाद आरोपी के खिलाफ एक मामला दर्ज किया गया। पुलिस के मुताबिक, पीड़िता की मां ने अपनी शिकायत में कहा कि शनिवार को उसकी पांच वर्षीय बेटी खेलने गई थी। उसने शिकायत में कहा कि इसी दौरान उनकी बेटी के साथ खेल रहा 13 वर्षीय एक लड़का उनकी बेटी को एकांत में ले गया और उसके साथ कथित रूप से दुष्कर्म किया।

केरल : नवजात की मौत के मामले में मां और दोस्त गिरफ्तार

अलप्पुझा। केरल पुलिस ने रविवार को 22 वर्षीय एक महिला और उसके दोस्त को यहां थाकाझी के समीप एक जगह से अपने नवजात बच्चे का शव खोदकर निकालने के बाद गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि आरोपियों की पहचान पूचक्कल की रहने वाली डोना और थाकाझी के रहने वाले थॉमस (24) के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक, महिला के दोस्त और उसके एक साथी को हिरासत में लिया गया है। पुलिस ने बताया कि घटना 10 अगस्त को उस समय सामने आई, जब महिला इलाज के लिए कोच्चि के एक निजी अस्पताल पहुंची।

कांग्रेस की दिलचस्पी अराजकता और विवादों में : सिंधिया

हिंडनबर्ग विवाद पर कहा

भाषा। ग्वालियर

केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने रविवार को कांग्रेस पर सेबी की अध्यक्ष माधवी पुरी बुच के खिलाफ हिंडनबर्ग रिसर्च के आरोपों को लेकर अराजकता और विवाद फैलाने का आरोप लगाया। अमेरिकी शोध एवं निवेश फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च ने संदेह जताया है कि अडाणी समूह के खिलाफ कार्वाई करने में पूंजी बाजार नियामक सेबी की अनिच्छा का कारण सेबी अध्यक्ष बुच और उनके पति की अडाणी समूह से जुड़े विदेशी फंड में हिस्सेदारी हो सकता है।सिंधिया ने हिंडनबर्ग की रिपोर्ट पर संवाददाताओं के सवाल का जवाब देते हुए कहा, कांग्रेस का काम केवल अराजकता फैलाना और देश को विवादास्पद मामलों में उलझाना है। गुना से सांसद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भारतीय जनता

पार्टी (भाजपा) के कार्यकर्ता विकास व प्रगति की मशाल लेकर चल रहे हैं जबकि कांग्रेस वर्षों से देश को गुमराह करने तथा अंधेरे में रखने की कोशिश कर रही है।सेबी प्रमुख ने हिंडनबर्ग के आरोपों को आधारहीन और चरित्र हनन का प्रयास बताया है। वहीं, अडाणी समूह ने कहा कि उसका बुच के साथ कभी कोई व्यावसायिक संबंध नहीं रहा।सेबी प्रमुख और उनके पति ने एक संयुक्त बयान जारी कर हिंडनबर्ग के आरोपों को पूरी तरह निराधार बताते हुए खारिज किया है।बुच दंपति ने कहा, रिपोर्ट में लगाए गए आरोप पूरी तरह से आधारहीन और बेबुनियाद हैं। इनमें तनिक भी सच्चाई नहीं है।

सिंधिया ने विपक्ष से माफी की मांग की

ग्वालियर (मध्य प्रदेश)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और समाजवादी पार्टी की सांसद जया बच्चन के बीच हुई नोकझोंक का जिक्र करते हुए केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने रविवार को मांग की कि विपक्ष को राज्यसभा के सभापति से माफी मांगनी चाहिए। राज्यसभा में शुक्रवार को समाजवादी पार्टी की सदस्य जया बच्चन ने सभापति जगदीप धनखड़ के बोलने के लहजे पर आपत्ति जताई, जिसके बाद दोनों के बीच नोकझोंक हो गई और सभापति ने कहा कि उनके (जया) जैसी सेलिब्रिटी को भी शिष्टाचार का पालन करने की जरूरत है। इस टकराव के बारे में पूछे गए एक सवाल का जवाब देते हुए सिंधिया ने कहा कि राज्यसभा के सभापति धनखड़ के साथ जिस तरह का व्यवहार किया गया, वह बहुत दुखद है। केंद्रीय मंत्री ने कहा, वह केवल सदन के सभापति ही नहीं, देश के उपराष्ट्रपति भी हैं। विपक्ष के हर व्यक्ति को इस व्यवहार के लिए माफी मांगनी चाहिए। यह सदन के सभापति और उपराष्ट्रपति का अपमान नहीं है, बल्कि संविधान और हमारे तिरंगे का अपमान है। सिंधिया ने कहा कि सदन में हो रहे शोर-शराबे और अपमान के बारे में देश की जनता सब समझती है। उन्होंने कहा कि जनता ने उन्हें 2014, 2019 और अब 2024 में सबक सिखाया है, और आने वाले समय में सिखाएगी।

करदाताओं को धमकाने की जगह मार्गदर्शन का नजरिया अपनाएं आयकर अधिकारीः सीबीडीटी प्रमुख

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) के चेयरमैन रवि अग्रवाल ने कहा है कि आयकर विभाग के अधिकारियों को करदाताओं के साथ व्यवहार करते समय डराने-धमकाने के बजाय सलाह देने का नजरिया अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को जिम्मेदार, उत्तरदाई, पारदर्शी दिखने के लिए नए सिरे से प्रयास करने चाहिए। अग्रवाल ने सुझाव दिया कि भारत में आयकर व्यवस्था के 164 वर्ष पूरे होने पर कर अधिकारियों को विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।सीबीडीटी प्रमुख ने हाल ही में 24 जुलाई को मनाए गए 165वें आयकर दिवस के अवसर पर एक ऑनलाइन वीडियो संवाद सत्र द चेयरमैन स्पीक्स के माध्यम से अपने सहकर्मियों से बात की। कर विभाग में बदलावकारी परिवर्तन हुए हैं, प्रौद्योगिकी को अपनाया गया है, करदाताओं का आधार बढ़ाया गया है और इसका स्वरूप प्रवर्तन और विरोधात्मक विभाग से बदलकर काफी हद तक एक सेवा विभाग बन गया है।

विभिन्न देशों से हिंदुओं का सफया करने की कोशिश की जा रही हैं : होसबाले

भाषा। बेंगलुरु

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरकार्यवाह (महासचिव) दत्तात्रेय होसबाले ने रविवार को दावा किया कि विभिन्न देशों से हिंदुओं का सफाया करने की कोशिशें की जा रही हैं और उन्होंने हिंसाग्रस्त बांग्लादेश में हिंदुओं, बौद्धों और अन्य अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की आवश्यकता पर जोर दिया। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के क्षेत्रीय कार्यालय धर्मश्री भवन के उद्घाटन के

अवसर पर होसबाले ने कहा कि दुनिया के कई स्थानों पर हिंदुओं के मानवाधिकार चिंताजनक स्तर पर पहुंच गए हैं और इस संबंध में आवाज उठानी होगी। आरएसएस के दूसरे नंबर के नेता ने दावा किया कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में हिंदू जिस देश में रहते हैं, उसके विकास में योगदान दे रहे हैं, वे नियमों और विनियमों का पालन करते हैं और शांति से रहते हैं, जो गर्व की बात है। होसबाले ने कहा, फिर भी, विभिन्न देशों से हिंदुओं का सफाया करने की कोशिशें हो रही हैं। हम देख रहे हैं कि बांग्लादेश में क्या हो रहा है। भारत सरकार अपनी तरफ से कोशिश कर रही है। बांग्लादेश में हिंदुओं, बौद्धों और अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा की जानी चाहिए।

मराठा आंदोलनकारियों ने पवार का काफिला रोका

रैली में जरांगे के समर्थन में नारे लगाए

सोलापुर,। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के नेता शरद पवार को रविवार को अलग-अलग जगहों पर मराठा आरक्षण आंदोलनकारियों के आक्रोश का सामना करना पड़ा। आंदोलनकारियों ने सोलापुर जिले में उनके वाहन को रोककर नारेबाजी की जबकि बर्शी कस्बे में रैली को संबोधित करते समय काले झंडे दिखाए। टेलीविजन चैनलों पर प्रसारित वीडियो में देखा जा सकता है कि मराठा आरक्षण के नारे लगाते हुए लोगों के एक समूह ने कुर्दुवाड़ी गांव के पास पवार की कार रोककर उनसे आरक्षण के मुद्दे पर रुख स्पष्ट करने

को कहा। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री पवार को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि उन्होंने आरक्षण का समर्थन किया है, लेकिन प्रदर्शनकारियों ने कहा कि वह इस मुद्दे पर अपनी बात नहीं कह रहे हैं। एक प्रदर्शनकारी ने पवार से पूछा, "आप लंबे समय से मराठा समुदाय के लिए आरक्षण का समर्थन करने की बात कर रहे हैं। आप इस मुद्दे पर अपना रुख सार्वजनिक रूप से क्यों नहीं बताते ?इसके कुछ घंटे बाद कुछ युवक बार्शी कस्बे में पवार के रैली स्थल पर पहुंचे और आरक्षण आंदोलन के नेता मनोज जरांगे के समर्थन में नारे लगाए। पवार जब भाषण दे रहे थे, तब युवकों ने काले झंडे भी दिखाए। घटना की पुष्टि करते हुए सोलापुर पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि पवार की रैली में चार युवकों ने जरांगे के समर्थन में नारे लगाए। सुरक्षा कर्मियों और पुलिसकर्मियों ने उन्हें काबू किया और हिरासत में लेकर थाने ले गए। रैली को संबोधित करते हुए पवार ने किसानों की आय दोगुनी करने के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आश्वासन पर कटाक्ष किया और दावा किया कि भाजपा शासन में किसानों की आत्महत्या की घटनाएं दोगुनी हो गई हैं।

अभिषेक बनर्जी ने दुष्कर्म और हत्या मामलों में त्वरित न्याय के लिए विधेयक लाने का आह्वान किया

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अभिषेक बनर्जी ने बलात्कारियों और हत्यारों पर त्वरित गति से मुकदमा चलाने और एक सप्ताह के भीतर सजा सुनाने के लिए संसद में एक विधेयक पेश करने का आह्वान किया है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि उन्हें अनुकरणीय सजा मिले। बनर्जी ने पश्चिम बंगाल के डायमंड हार्बर निर्वाचन क्षेत्र के आमतला में एक प्रशासनिक बैठक के बाद यह टिप्पणियां कीं। तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव ने शनिवार को पत्रकारों से बातचीत में कोलकाता के एक सरकारी अस्पताल में एक महिला परास्नातक प्रशिक्षु चिकित्सक के यौन उत्पीड़न और हत्या के बाद सड़कों पर प्रदर्शन करने के लिए भाजपा के नेताओं की निंदा की। बनर्जी ने भाजपा नेताओं से प्रदर्शन के बजाय त्वरित न्याय के लिए केंद्र पर विधेयक पारित करने का दबाव डालने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि तृणमूल कांग्रेस संसद में विरोधी दल होने के नाते इस विधेयक का समर्थन करेगी और इसे कांग्रेस तथा वामपंथी दलों का भी समर्थन मिल सकता है। बनर्जी ने कहा कि ऐसे कानून से मुकदमे के लंबा खिंचने पर रोक लगेगी और यह सुनिश्चित करके करदाताओं का पैसा बचाया जाएगा कि बलात्कारी और हत्यारे समाज में न रहें।

पश्चिमी त्रिपुरा में बांग्लादेश में अशांति के मद्देनजर प्रदर्शन करने की अनुमति नहींः पुलिस

अगरतला। बांग्लादेश में अशांति के मद्देनजर त्रिपुरा पुलिस ने कानून व्यवस्था की स्थिति बनाए रखने के लिए अगरतला सहित पश्चिमी त्रिपुरा जिले में प्रदर्शन या रैली करने की अनुमति नहीं देने का फैसला किया है। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी पुलिस ने इसके साथ ही सोशल मीडिया पर भड़काऊ संदेश पोस्ट करने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार भी किया है। पश्चिमी त्रिपुरा के पुलिस अधीक्षक किरण कुमार ने संवाददाताओं से कहा, बांग्लादेश में स्थिति अस्थिर है। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर चौकसी बढ़ा दी गई है। सीमा पार से किसी भी घुसपैठ की कोशिश को विफल करने के लिए त्रिपुरा स्टेट राइफल्स (टीएसआर) सीमा पर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों के साथ संयुक्त गश्त कर रही है। उन्होंने कहा कि एहतियाती उपायों के तहत पुलिस ने विरोध प्रदर्शन या बांग्लादेश से संबंधित कार्यक्रमों की अनुमति नहीं देने का फैसला किया है। पुलिस ने फेसबुक पेज पर लिखा, कृपया कोई भी भड़काऊ संदेश प्रसारित करने से बचें। अगर ऐसा कोई संदेश किसी व्हाट्सऐप ग्रुप में साझा किया जाता है तो ग्रुप के एडमिन कानूनी कार्वाई के लिए उत्तरदाई होंगे। इसने अपने पोस्ट में लिखा कि सोशल मीडिया पर भड़काऊ ऑडियो संदेश पोस्ट करने के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है और एयरपोर्ट पुलिस थाने में मामला दर्ज किया गया है। कानूनी कार्वाई के लिए अन्य आरोपियों की पहचान की जा रही है।

एससी सांसदों को लामबंद करेंगे चिराग

आरक्षण पर शीर्ष अदालत के फैसले की समीक्षा की मांग की

भाषा। नई दिल्ली

केंद्रीय मंत्री एवं लोजपा (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान समुदाय के भीतर आरक्षण के उप-वर्गीकरण की अनुमति देने के उच्चतम न्यायालय के फैसले के खिलाफ पुनर्विचार याचिका दायर करने से पहले समर्थन जुटाने के लिए विभिन्न दलों के अनुसूचित जाति के सांसदों की बैठक बुलाने की योजना बना रहे हैं। लोक जनशक्ति पार्टी (लोजपा) के नेता पहले ही फैसले से अपनी असहमति जता चुके हैं और कह चुके हैं कि उनकी पार्टी शीर्ष अदालत के समक्ष

पुनर्विचार याचिका दायर करेगी।सूत्रों ने कहा कि पासवान ने फैसले पर अनुसूचित जाति के सांसदों के विचार जानने के लिए उनसे संपर्क किया है। अदालत के इस फैसले का दूरगामी राजनीतिक प्रभाव पड़ सकता है। कई प्रमुख राष्ट्रीय दलों ने इस मसले पर चुप्पी साध रखी है।पासवान जल्द ही इस पर चर्चा के लिए अनुसूचित जाति के सांसदों की एक औपचारिक बैठक बुला सकते हैं।हालांकि, यह देखा जाना बाकी है कि विभिन्न दलों के अनुसूचित जाति के सांसदों की प्रतिक्रिया क्या होती है। इनमें से कई ने अपने निर्वाचन क्षेत्रों की स्थिति के आधार पर अलग-अलग रुख अपनाया है।पासवान या मायावती के नेतृत्व वाली बहुजन समाज पार्टी (बसपा) जैसी पार्टियां अदालत के इस फैसले के खिलाफ खुलकर सामने आ गई हैं। भाजपा के एक अन्य सहयोगी दल हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) के प्रमुख केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने फैसले की सराहना करते हुए कहा कि मांझी समुदाय को आरक्षण से मिलने वाले लाभों में बहुत कम प्रतिनिधित्व मिला है क्योंकि नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में ज्यादातर पदों पर संपन्न अनुसूचित जाति के समुदाय का कब्जा है।

क्विक न्यूज

एमआई-17 केदारनाथ से वापस, क्षतिग्रस्त रास्तों को ठीक करने का काम युद्धस्तर पर जारी

देहरादून। केदारनाथ में बचाव अभियान पूरा होने के बाद वायुसेना के एमआई17 हेलीकॉप्टर को रविवार को वापस भेज दिया गया जबकि अतिवृष्टि और बादल फटने से क्षतिग्रस्त रास्तों को ठीक करने का काम युद्धस्तर पर जारी है।अधिकारियों ने यहां बताया कि केदारनाथ में स्वेच्छा से रुके 78 लोगों को एमआई17 हेलीकॉप्टर के जरिए सुबह गुप्तकाशी पहुंचाया गया जिनमे स्थानीय दुकानदार, साधु-संत, घोड़ा-खच्चर चालक आदि शामिल थे। उन्होंने कहा कि केदारनाथ में नीचे लाने के लिए अब कोई व्यक्ति शेष नही है और बचाव अभियान के पूरा होने के साथ ही एमआई-17 हेलीकॉप्टर को विदा कर दिया गया है। उनके मुताबिक, बचाव अभियान में मदद कर रहे वायु सेना के चिनूक हेलीकॉप्टर को भारी मशीनों को पहुंचाने के लिए अभी रोका गया है। मौसम के ठीक होते ही केदारनाथ में बड़ी मशीनों को पहुंचाकर चिनूक को भी रवाना कर दिया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि केदारनाथ मार्ग पर 31 जुलाई को अतिवृष्टि और बादल फटने के कारण क्षतिग्रस्त रास्तो को ठीक करने का काम युद्धस्तर पर जारी है। उन्होने बताया कि 29 विभिन्न स्थानो पर मार्ग क्षतिग्रस्त हुए थे जिनमें से 25 जगह पर इसे यात्रियों के पैदल आवागमन के योग्य बना दिया गया है।

ओडिशा के मुख्यमंत्री ने ममता बनर्जी से की बात, आलू की आपूर्ति में सुधार का आग्रह किया

भुवनेश्वर। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने रविवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से बात की और उनसे आलू की आपूर्ति में सुधार करने का अनुरोध किया। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने एक बयान में यह जानकारी दी। माझी ने टेलीफोन पर बातचीत के दौरान कहा कि नई दिल्ली में उनकी बैठक के बाद ओडिशा को आलू की आपूर्ति में सुधार हुआ था, लेकिन अब स्थिति फिर से खराब हो गई है। सीएमओ ने बयान में कहा कि मुख्यमंत्री माझी ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से इस मामले में हस्तक्षेप करने और समस्या का समाधान करने का आग्रह किया। बयान के मुताबिक बनर्जी ने माझी को मुद्दे को सुलझाने के लिए उचित कदम उठाने का आश्वासन दिया है। पश्चिम बंगाल पुलिस द्वारा ओडिशा में आलू के अनधिकृत परिवहन की जांच के लिए सीमावर्ती गांवो में सीसीटीवी लगाए जाने के बाद ओडिशा के मुख्यमंत्री ने बनर्जी को फोन किया। ओडिशा सरकार ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के तहत राज्य भर में खुदरा दुकानों पर 100 रुपए में तीन किलोग्राम की दर से आलू बेचना शुरू कर दिया है। राज्य के खाद्य आपूर्ति एवं उपभोक्ता कल्याण मंत्री के सी पात्रा ने रविवार को कहा कि नैफेड (भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड) के माध्यम से राज्य के विभिन्न स्थानों पर आलू भेजे गए है। पात्रा ने कहा कि सरकारी खुदरा दुकानों ने रसोई की आवश्यक सामग्री आलू को 100 रुपए में तीन किलोग्राम की दर से बेचना शुरू कर दिया है। मंत्री ने यहां संवाददाताओं से कहा, सरकार के इस कदम के बाद व्यापारियों ने भी आलू को बाजार में उतारना शुरू कर दिया है। मुझे उम्मीद है कि व्यापारी भी उचित दाम पर आलू बेचना शुरू कर देंगे। पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल द्वारा आलू की आपूर्ति रोक दिए जाने तथा राज्य के व्यापारियों द्वारा उत्तर प्रदेश से आलू खरीदने से इनकार करने के बाद ओडिशा मे आलू का गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है।

असम-मिजोरम सीमा विवाद को लेकर अगले दौर की वार्ता जनवरी में होगीः असम के मंत्री

गुवाहाटी। असम के सीमा सुरक्षा और विकास मंत्री अतुल बोरा ने रविवार को कहा कि मिजोरम के साथ सीमा विवाद को सुलझाने के लिए अगले दौर की चर्चा अगले साल जनवरी में गुवाहाटी मे होगी। मंत्री बोरा ने कहा कि दोनों राज्य सरकारें दशकों पुराने विवाद का समाधान चाहती है ताकि दोनो तरफ अंतर-राज्ईय सीमा के पास रहने वालो के लिए स्थाई शांति और सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। मंत्री आइजोल से लौटने के बाद गुवाहाटी मे संवाददाताओं से बात कर रहे थे। असम सरकार ने सीमा विवाद को सुलझाने के लिए पिछले सप्ताह मिजोरम सरकार के गृह मंत्री के सपडांगा के नेतृत्व वाली एक टीम के साथ बातचीत की थी। आइजोल मे असम के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व बोरा ने किया था। बोरा ने कहा, पिछले साल मिजोरम मे विधानसभा चुनावो के कारण सीमा विवाद को लेकर वार्ता नही हो पाई। अब हम फिर से विवाद को सुलझाने की दिशा मे बढ़ रहे है। मिजोरम का एक मंत्रिस्तरीय समूह जनवरी तक अगले दौर की वार्ता के लिए गुवाहाटी का दौरा करेगा। हमने उन्हे अपना निमंत्रण दिया है। दोनो पूर्वोत्तर राज्यो ने 20 महीने के अंतराल के बाद पिछले सप्ताह आइजोल मे सीमा विवाद को सुलझाने के लिए वार्ता की। पिछली बैठक नवंबर 2022 मे गुवाहाटी मे आयोजित की गई थी। उन्होने बताया कि असम प्रतिनिधिमंडल ने यात्रा के दौरान मिजोरम के मुख्यमंत्री लालदुहोमा से भी मुलाकात की।

अहमदाबाद में डाकघर से उच्च किस्म का गांजा बरामद, पार्सल के पैकेट में छुपाकर रखा गया था

अहमदाबाद। गुजरात के अहमदाबाद मे एक विदेशी डाकघर अनुभाग से खिलौनो और महिलाओ के जूतो मे छिपाकर रखे गए उच्च किस्म के गांजे से भरे पार्सल के पैकेट बरामद किए गए है। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि प्रारंभिक जांच से इसका संकेत मिला है कि इस गांजे की खरीद डार्क वेब से की गई हो और यह संभावित तौर पर विदेश से जुड़ा हो सकता है। अधिकारियो ने रविवार को बताया कि शनिवार रात 37 पैकेट मे भरा 5.670 किलोग्राम उच्च किस्म का गांजा बरामद किया गया जिसकी अनुमानित कीमत 1.70 करोड़ रुपए है। अधिकारियो ने कहा कि साइबर अपराध शाखा और सीमा शुल्क विभाग ने इन पैकेट को डिलीवरी के लिए भेजे जाने से पहले ही जब्त कर लिया। अधिकारियो ने बताया कि मादक पदार्थ तस्करो द्वारा विदेश से प्रतिबंधित सामान खरीदने के लिए इंटरनेट और अन्य सोशल मीडिया मंचो का इस्तेमाल करने के संबंध मे सूचना मिलने के बाद साइबर अपराध और सीमा शुल्क विभाग के एक संयुक्त दल ने निगरानी शुरू कर दी थी।

मिस्ट्री ड्रामा ग्यारह-ग्यारह ने किया आकर्षित

मुंबई। मुंबई के आईकॉनिक डेविड ससून लाइब्रेरी के क्लॉक टॉवर में जी-5 ने अभी-अभी रिलीज़ हुई अपनी मिस्ट्री थ्रिलर ग्यारह ग्यारह् का दिल को लुभाने वाला 3 डी् प्रोजेक्शन आयोजित किया। मुंबईवासियों के लिए यह नज़ारा हैरत में डालने वाला थाए क्योंकि विभिन्न भाषाओं की कहानी को दशकों तक पहुँचाने वाले प्लेटफ़ॉर्म ने इस मिस्ट्री ड्रामा की एक झलक दिखाकर राहगीरों और वहाँ खड़े लोगों का दिल जीत लिया। गुनीत मोंगा की सिख्या एंटरटेनमेंट और करण जौहर की धर्माटिक एंटरटेनमेंट द्वारा साथ मिलकर प्रोड्यूस की गई सीरीज़ए ग्यारह ग्यारह् का निर्देशन उमेश बिष्ट ने किया है, जिसमें राघव जुयाल,कृतिका कामरा और धैर्य करवा की दमदार तिकड़ी ने मुख्य किरदार निभाए हैं। डेविड ससून लाइब्रेरी को अपनी विक्टोरियन गोथिक आर्किटेक्चर के लिए जाना जाता है, जो मुंबई की विरासत का बेहद अहम हिस्सा है। 9 अगस्त को इस सीरीज़ को रिलीज़ किया गया और उसी दिन मुंबई के सबसे ऐतिहासिक स्थलों में से एक की पृष्ठभूमि में इस बेहतरीन शो के ज़रिये सीरीज़ की शानदार झलक पेश की गईए जिसमें समय का रुख मोड़ने वाली कहानी को जीवंत किया गया। म्म्5 की यह कोशिश इस बात की मिसाल है किए ब्रांड लोगों के दिलों पर गहरी छाप छोड़ने वाली अपनी पहलों के माध्यम से हर वर्ग के दर्शकों का मनोरंजन करने और उन्हें अपने साथ जोड़ने के विज़न पर कायम है। इस 3डी् शो के आयोजन से पहले जी-5 ने इस सीरीज़ का धमाकेदार ट्रेलर लॉन्च किया और इस इंडस्ट्री के दिग्गजों एवं सिनेमा प्रेमियों के लिए बड़े जबरदस्त अंदाज़ में स्पेशल स्क्रीनिंग का आयोजन किया। दर्शकों की बेकरारी को दूर करने के लिए जी5 ने इस मिस्ट्री थ्रिलर के सभी 8 एपिसोड 8 अगस्त को रात 11. 11 बजे रिलीज़ कर दिए। ग्यारह ग्यारह में राघव जुयालए कृतिका कामरा और धैर्य करवा ने मुख्य किरदार निभाए हैं।

भारत का हिंद महासागर क्षेत्र में प्रमुख साझेदार है मालदीव : जयशंकर

भाषा। माले

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने रविवार को कहा कि मालदीव हिंद महासागर क्षेत्र में भारत का एक प्रमुख साझेदार है तथा दोनों देश अपने सहयोग को आधुनिक साझेदारी में बदलने की आकांक्षा रखते हैं। जयशंकर ने अड्डू पुनर्ग्रहण और तट संरक्षण परियोजना का हस्तांतरण समारोह और एक्जिम बैंक की ऋण सहायता के तहत भारत सरकार की मदद से बनाई गई 4-लेन डेटोर लिंक सड़क परियोजना के उद्घाटन के अवसर पर यह बात कही। इस अवसर पर मालदीव के विदेश मंत्री मूसा जमीर भी मौजूद थे। जयशंकर ने कहा, मालदीव हमारे लिए हिंद महासागर क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण साझेदार है। यह पड़ोसी प्रथम की हमारी नीति के केंद्र में है। और इसलिए यह बहुत ही स्वाभाविक है कि हमारे दोनों देशों के बीच सहयोग पारंपरिक भूमिका से आगे बढ़ गया है तथा आज वास्तव में एक आधुनिक साझेदारी बनने की आकांक्षा है। उन्होंने कहा, विकास के क्षेत्र में हमारे सहयोग का उद्देश्य लोगों के जीवन के सभी पहलुओं को छूना और उनके जीवन में इसके ठोस लाभ लाने के तरीके खोजना है। जयशंकर ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में भारत ने मालदीव में लगभग 22 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश किया है, जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि भारत मालदीव में क्षेत्रीय विकास को कितना महत्व देता है। विदेश मंत्री ने कहा, आज हम अन्य देशों के अलावा सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक हैं। हम भारत से मालदीव में अधिक निवेश प्रवाह भी देख रहे हैं, खासकर पर्यटन क्षेत्र में। उन्होंने कहा कि भारत ने मालदीव सरकार के साथ अड्डू पुनर्ग्रहण और तट संरक्षण परियोजना में साझेदारी की है, ताकि इसे एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में विकसित करने का एक स्थाई तरीका ढूंढ़ा जा सके।

मुख्य विपक्षी दल ने मुइज्जू सरकार की भारत नीति में अचानक आए बदलाव को सराहा

माले। मालदीव के मुख्य विपक्षी दल मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) ने राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू नीत सरकार द्वारा अपनी भारत नीति में अचानक किए गए बदलाव का स्वागत किया और कहा कि माले इस बात को लेकर हमेशा आश्वस्त रहा है कि देश पर जब भी संकट आएगा और वह मदद के लिए पुकारेगा तो नई दिल्ली सबसे पहले सहायता करेगा। एमडीपी के अध्यक्ष अब्दुल्ला शाहिद ने शनिवार को यहां भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर से मुलाकात के बाद यह बात कही। एमडीपी अध्यक्ष ने कहा कि उनकी पार्टी की मांग है कि मुइज्जू सरकार से अपने अधिकारियों के कृत्यों, झूठ और गैर-जिम्मेदाराना बयानों के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगे जिनकी वजह से मालदीव को विदेश और आर्थिक मोर्चे पर खासा नुकसान हुआ है। जयशंकर द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए मालदीव की तीन दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर है।

रूसी जमीन पर सैन्य कारवाई की : जेलेंस्की

भाषा। कीव

रूस के कुर्स्क सीमावर्ती क्षेत्र में यूक्रेन द्वारा चौंकाने वाली सैन्य कार्वाई शुरू किए जाने के कई दिन बाद राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने अपने संबोधन में इस पर अपनी सरकार की चुप्पी तोड़ी और युद्ध का रुख आक्रमणकर्ता के क्षेत्र की ओर मोड़ देने से जुड़ी इस कार्वाई को परोक्ष रूप से स्वीकार किया। रूस द्वारा यूक्रेन के कीव में रविवार रात भर किए गए ड्रोन और मिसाइल हमले में चार वर्षीय लड़के सहित दो लोगों की मौत हो गई। कुर्स्क के क्षेत्रीय गवर्नर एलेक्सी स्मिरनोव ने कहा कि रूसी वायु रक्षा तंत्र ने एक यूक्रेनी मिसाइल को मार गिराया जो एक आवासीय भवन पर गिरी जिससे 13 लोग घायल हो गए। यूक्रेन की वायुसेना ने कहा कि रूस ने यूक्रेन पर चार बैलेस्टिक मिसाइल और 57 शाहेद ड्रोन दागे, लेकिन उसकी वायु रक्षा प्रणाली ने 53 ड्रोन मार गिराए। यूक्रेन की आपातकालीन सेवा के अनुसार रूस ने कीव के ब्रोवेरी जिले के एक आवासीय क्षेत्र में कई मिसाइल दागीं, जिससे वहां इमारतें क्षतिग्रस्त हो गईं और इसके मलबे से 35 वर्षीय एक व्यक्ति और उसके बेटे के शव बरामद हुए। इस हमले में तीन लोग घायल भी हुए हैं। कीव सिटी मिलिट्री एडमिनिस्ट्रेशन के प्रमुख सेरही पोपको ने कहा कि रूस ने इस महीने में दूसरी बार यूक्रेन की राजधानी को निशाना बनाया है। पोपको ने कहा कि रूस की ओर से दागी गईं बैलिस्टिक मिसाइल राजधानी तक नहीं पहुंच सकीं लेकिन इससे उपनगर प्रभावित हुए, जबकि राजधानी की ओर लक्ष्य साध रहे ड्रोन को मार गिराया गया।

कीव क्षेत्र में चार वर्षीय लड़के सहित दो की मौत

कीव। रूस द्वारा यूक्रेन के कीव में रविवार रात भर किए गए ड्रोन और मिसाइल हमले मे चार वर्षीय लड़के सहित दो लोगों की मौत हो गई। यूक्रेन ने इसकी जानकारी दी। यूक्रेन की राज्य आपातकालीन सेवा के अनुसार, रूस ने कीव के ब्रोवेरी जिले के एक आवासीय क्षेत्र मे कई मिसाइलें दागी, जिससे वहां इमारते क्षतिग्रस्त हो गईं और इसके मलबे से 35 वर्षीय एक व्यक्ति और उसके बेटे का शव बरामद किया गया। रूस के हमले मे जिले के अन्य तीन लोग घायल हो गए है। कीव सिटी मिलिट्री एडमिनिस्ट्रेशन के प्रमुख सेरही पोपको ने कहा कि रूस ने इस महीने मे दूसरी बार यूक्रेन की राजधानी को निशाना बनाया है।

ट्रंप के प्रचार की कमान संभाल रही टीम ने ई-मेल हैक किए जाने का दावा किया

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति चुनाव प्रचार अभियान की कमान संभाल रही टीम ने शनिवार को कहा कि उनके ई-मेल हैक किए गए है। टीम ने दावा किया कि ईरान के लोग इन संवेदनशील आंतरिक दस्तावेज चुराने और उनके प्रसार में शामिल है। हालांकि, प्रचार अभियान की कमान संभालने वाली टीम ने ईरान की संलिप्तता को लेकर सीधे कोई सबूत नहीं दिया, लेकिन उसका यह दावा माइक्रोसॉफ्ट द्वारा एक रिपोर्ट जारी किए जाने के बाद आया है। इस रिपोर्ट में 2024 में अमेरिकी अभियान में हस्तक्षेप करने के विदेशी एजेंटों के प्रयासों का विवरण दिया गया है। ट्रम्प के चुनाव प्रचार अभियान के प्रवक्ता स्टीवन चेउंग ने हैकिंग के लिए अमेरिका के प्रति शत्रुता रखने वाले विदेशी स्रोतों को जिम्मेदार करार दिया है। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के एक प्रवक्ता ने एक बयान में कहा कि उसने (परिषद) अनुचित विदेशी हस्तक्षेप की रिपोर्ट को बेहद गंभीरता से लिया है और वह अमेरिकी लोकतांत्रिक संस्थानों में विश्वास को कम करने का प्रयास करने वाली सरकार या संस्था की निंदा करती है।

ब्रिटेन में स्कूली छात्रों को फर्जी खबरों की पहचान का प्रशिक्षण दिया जाएगा

लंदन। सोशल मीडिया पर गलत सूचना के कारण ब्रिटेन के कई शहरों में दक्षिणपंथियों के दंगों के मद्देनजर पाठ्यक्रम में प्रस्तावित बदलावों के तहत स्कूली बच्चों को सिखाया जाएगा कि चरमपंथ से जुड़ी ऑनलाइन सामग्री और फर्जी खबरों को कैसे पहचाना जाए। ब्रिटेन की शिक्षा मंत्री ब्रिजेट फिलिप्सन ने रविवार को द डेली टेलीग्राफ को बताया कि वह प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्कूली पाठ्यक्रम की समीक्षा शुरू कर रही हैं ताकि विभिन्न विषयों में आलोचनात्मक नजरिए की सोच विकसित की जा सके और बच्चों को षड्यंत्र सिद्धांतों के खिलाफ तैयार किया जा सके। इसका अर्थ यह है कि स्कूली बच्चे अंग्रेजी पाठों में लेखों का विश्लेषण कर सकते हैं, ताकि उन्हें यह सीखने में मदद मिल सके कि सटीक रिपोर्टिंग से मनगढ़ंत चीजों को कैसे अलग किया जाए।

तुर्किए ने इंस्टाग्राम पर लगाया प्रतिबंध हटाया

इस्तांबुल। तुर्किए ने सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम तक उपयोगकर्ताओं की पहुंच शनिवार को बहाल कर दी। देश के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्राधिकरण ने दो अगस्त को बिना कोई विशेष कारण बताए इंस्टाग्राम तक पहुंच प्रतिबंधित कर दी थी। बाद में सरकारी अधिकारियों ने कहा था कि प्रतिबंध इसलिए लगाया गया, क्योंकि सोशल मीडिया मंच तुर्किए के कानूनों का पालन करने में विफल रहा है। तुर्किए के परिवहन एवं बुनियादी ढांचा मंत्री अब्दुलकादिर उरालोग्लू ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, इंस्टाग्राम के अधिकारियो के साथ बातचीत में हमें आश्वासन दिया गया कि हमारा अनुरोध स्वीकार किया जाएगा, खासतौर पर आपराधिक गतिविधियों से संबंधित अनुरोध। हमसे वादा किया गया कि हम उपयोगकर्ताओं को सेंसर करने के उपायों पर मिलकर काम करेंगे। उरालोगलू ने एक्स पर एक वीडियो साझा करते हुए बताया कि इंस्टाग्राम तुर्किए के कानून का अनुपालन सुनिश्चित करेगा और जिन मामलों में कानून का उल्लंघन किया गया है, उनमें त्वरित एवं प्रभावी हस्तक्षेप करेगा। मंत्री ने कहा कि आतंकवादी संगठनों से जुड़े सभी अकाउंट पर प्रतिबंध लगाया जाएगा और पीकेके, पीवाईडी तथा एफईटीओ सहित ऐसे सभी संगठनों के एजेंडे को बढ़ावा देने वाली प्रत्एक सामग्री हटा दी जाएगी।

विदेश सचिव मिस्री नेपाल के शीर्ष नेतृत्व से मिले, संबंधो पर चर्चा

● मजबूती पर ध्यान

काठमांडू। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने रविवार को नेपाल के शीर्ष नेतृत्व से मुलाकात की और विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को गति प्रदान करने के तरीकों पर चर्चा की। नेपाल के विदेश सचिव सेवा लामसाल के निमंत्रण पर दो दिवसीय यात्रा पर यहां आए मिस्री ने काठमांडू में राष्ट्रपति कार्यालय शीतलनिवास में राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल से शिष्टाचार भेंट की। नेपाल स्थित भारतीय दूतावास नेअ सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर कहा, भारतीय नेतृत्व की ओर से शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने सभी क्षेत्रों में भारत-नेपाल संबंधों को और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। मिस्री ने सिंहदरबार स्थित प्रधानमंत्री के.पी शर्मा ओली के कार्यालय में उनसे भी मुलाकात की। भारतीय दूतावास ने अन्य पोस्ट में कहा, विदेश सचिव ने भारत और नेपाल के सभ्यतागत, घनिष्ठ और बहुआयामी संबंधों पर जोर दिया और विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को गति प्रदान करने के तरीकों पर चर्चा की।

नेपाल भाषा परिषद के नए भवन का उद्घाटन

काठमांडू। विदेश सचिव विक्रम मिस्री और नेपाल के शहरी विकास मंत्रालय में सचिव मणिराम गेलल ने रविवार को संयुक्त रूप से नेपाल भाषा परिषद के नए भवन का उद्घाटन किया जिसका निर्माण भारत की ओर से भूकंप के बाद पुनर्निर्माण के लिए दी गई अनुदान राशि से किया गया है। मिस्री, भारत और नेपाल के बीच संबंधों को और मजबूत करने तथा हिमालयी राष्ट्र के साथ पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंधों को आगे बढ़ाने के तरीकों पर देश के नेतृत्व और अधिकारियों के साथ चर्चा करने के लिए दो दिवसीय यात्रा पर यहां आए है।भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर कहा, विदेश सचिव विक्रम मिस्री और नेपाल के शहरी विकास मंत्रालय के सचिव मणिराम गेलल ने संयुक्त रूप से काठमांडू में नेपाल भाषा परिषद के नए भवन का उद्घाटन किया, जिसे भारत की ओर से भूकंप के बाद पुनर्निर्माण के लिए दी गई अनुदान राशि से बनाया गया है।

भारत-द.अफ्रीका वैश्विक मंच पर नेतृत्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं : सूकलाल

जोहानिसबर्ग। भारत में अफ्रीकी राष्ट्र के नवनियुक्त राजदूत अनिल सूकलाल ने कहा कि भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच विशेष संबंध है जिनमें हर स्तर पर संभावनाएं है और उम्मीद जताई कि दोनों देश वैश्विक मंच पर नेतृत्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। भारत में दक्षिण अफ्रीका के राजदूत नियुक्त होने वाले भारतीय मूल के पहले व्यक्ति सूकलाल ने अपनी नियुक्ति के सम्मान में आयोजित एक समारोह में यह बात कही। सूकलाल ने कहा, दक्षिण अफ्रीका और भारत के बीच विशेष संबंध है, और मैं खुद को बेहद गौरवान्वित और भाग्यशाली महसूस कर रहा हूं कि हमारे संबंधों के इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण दौर में भारत में अपने देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए मेरा चयन किया गया। उन्होंने कहा कि भारत के साथ विशेष संबंध का उल्लेख दिवंगत राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने भी किया था। उन्होंने कहा कि मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका के पहले लोकतांत्रिक नेता के रूप में निर्वाचित होने के बाद भारत का दौरा न केवल भारत सरकार, बल्कि भारत के लोगों को उनकी महत्वपूर्ण भूमिका (रंगभेद के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने के लिए नेतृत्व करने में) के लिए धन्यवाद देने के लिए किया था।

क्विक न्यूज

चार्ल्स तृतीय ने ब्रिटेन में हुई हिंसा में नस्लवाद के खिलाफ एकजुटता दिखाने वालों की सराहना की

लंदन। ब्रिटेन के महाराजा किंग चार्ल्स तृतीय ने देश में उत्पात मचाने वाली दक्षिणपंथी हिंसक भीड़ के खिलाफ मोर्चा संभालने और नस्लवाद के विरोध में सड़कों पर उतरकर एकजुटता दिखाने वालों की सराहना की है। दक्षिणपंथियों ने तीन लड़कियों की चाकू घोंपकर हत्या करने के बारे में गलत सूचना फैलाई थी, जिसके बाद देश में दंगे भड़के थे। बकिंघम पैलेस ने एक बयान में कहा कि चार्ल्स ने शुक्रवार को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टॉर्मर और कानून प्रवर्तन के अधिकारियों के साथ फोन पर बातचीत की। इस दौरान उन्होंने पुलिस और अन्य आपातकालीन कर्मचारियों को देश में कानून-व्यवस्था बनाए रखने और हिंसा से प्रभावित लोगों की मदद करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। बयान में कहा गया, महाराजा इस बात से बेहद खुश हुए कि किस तरह लोगों ने नस्लवाद के खिलाफ एकजुटता दिखाते हुए आक्रामकता और अपराध का मुकाबला करुणा और साहस से किया। ब्रिटेन में नस्लवाद के विरोध में और हिंसा को पुनः भड़कने से रोकने के लिए हजारों की संख्या में लोग शनिवार को सड़कों पर उतर आए और शांति मार्च निकाला। देश में एक सप्ताह से अधिक समय तक दंगे हुए थे। प्रवासी-विरोधी और इस्लाम के खिलाफ नारे लगाने वाली भीड़ ने मस्जिदों पर हमला किया था, दुकानों को लूटा और पुलिस के साथ झड़पें की थी। ब्रिटेन में यह हिंसा तब शुरू हुई थी, जब दक्षिणपंथी कार्यकर्ताओं ने 29 जून को सोशल मीडिया पर यह झूठा दावा किया था कि उत्तर-पश्चिम इंग्लैंड के साउथपोर्ट टेलर स्विफ्ट थीम वाले हॉलिडे क्लब में घुसकर छह से नौ वर्ष की तीन लड़कियों की हत्या कर दी गई थी।

पाकिस्तान के शीर्ष नेतृत्व ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा का संकल्प लिया

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के शीर्ष नागरिक एवं सैन्य नेतृत्व ने रविवार को अल्पसंख्यकों के अधिकारों व धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करने का संकल्प लिया और समाज के सभी वर्गों से अंतरधार्मिक सद्भाव, प्रेम, सहिष्णुता, भाईचारे तथा एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए काम करने का आग्रह किया।पाकिस्तान ने देश के संस्थापक एमए जिन्ना के ऐतिहासिक भाषण के सम्मान में वर्ष 2009 में 11 अगस्त को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक दिवस के रूप में घोषित किया था। जिन्ना ने 11 अगस्त, 1947 को अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करने का वादा किया था।पाकिस्तान के सरकारी रेडियो के अनुसार, राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने अपने संदेश में कहा कि देश में अल्पसंख्यकों को संविधान द्वारा प्रदान किए गए सभी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकार प्राप्त हैं। जरदारी ने कहा, हम 11 अगस्त 1947 को कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा देश के अल्पसंख्यकों को उनके अधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा करने के वादे के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार अल्पसंख्यकों के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण के लिए कई कदम उठा रही है।राष्ट्रपति ने समाज के सभी वर्गों से लोगों को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करने और अंतर-धार्मिक सद्भाव, प्रेम, सहिष्णुता, भाईचारे तथा एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए काम करने का आग्रह किया ताकि पाकिस्तान को एक मजबूत देश बनाया जा सके।

ब्राजील विमान दुर्घटना में सभी 62 मृतकों के अवशेष बरामद, बचाव अभियान समाप्त

विन्हेडो। ब्राजील के साओ पाउलो प्रांत में शुक्रवार को हुए विमान हादसे में मारे गए सभी 62 लोगों के अवशेष बरामद होने के साथ ही बचाव अभियान समाप्त कर दिया गया। मृतकों के परिजन अपने प्रियजनों की शिनाख्त करने और उन्हे दफनाने के लिए साओ पाउलो पहुंच रहे है। विमानन कंपनी वेपास ने बताया कि दुर्घटनाग्रस्त एटीआर72 विमान में 58 यात्री और चालक दल के चार सदस्य सवार थे। उसने बताया कि विमान ग्वारुल्होस मे साओ पाउलो के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर जा रहा था, तभी यह विन्हेडो में दुर्घटनाग्रस्त हो गया।कंपनी ने पहले बताया था कि उसके विमान में 62 यात्री सवार थे, लेकिन बाद में उसने संख्या को संशोधित कर 61 कर दिया और शनिवार सुबह एक बार फिर संख्या बढ़ा दी, जब उसने पाया कि कॉन्स्टेंटिनो माइया नामक यात्री का नाम उसकी मूल सूची में नही था। साओ पाउलो सरकार ने एक बयान में कहा कि बचाव अभियान शनिवार को स्थानीय समयानुसार शाम 6.30 बजे समाप्त हो गया। उसने बताया कि फॉरेंसिक विशेषज्ञों ने विमान के पायलट और सह-पायलट के शवों की पहचान कर ली है तथा मलबे से 34 पुरुषों व 28 महिलाओं के शव बरामद किए गए है। ब्राजील के अधिकारियों ने शुक्रवार को सभी शव मुर्दाघर में स्थानांतरित कर दिए और परिजनों से मृतकों की पहचान करने में मदद के लिए किसी भी चिकित्सकीय जांच, एक्स-रे या दंत परीक्षण की रिपोर्ट लाने को कहा। शवों की पहचान करने के लिए खून की जांच भी की गई। विन्हेडो में शुक्रवार को पत्रकारों से बात करते हुए साओ पाउलो के सार्वजनिक सुरक्षा सचिव गिलहर्मे डेरिट ने कहा कि विमान का ब्लैक बॉक्स बरामद कर लिया गया है, जो स्पष्टतः संरक्षित अवस्था मे है। ब्राजील की वायुसेना ने शनिवार को बताया कि विमान के दोनों ब्लैक बॉक्स राजधानी ब्रासीलिया स्थित विश्लेषण प्रयोगशाला में भेज दिए गए है। उसने कहा कि हमें उम्मीद है कि 30 दिनों के भीतर जांच के नतीजे सामने आ जाएंगे।

पाकिस्तान के कराची में लोगों को पसंद आ रहे हैं शुद्ध शाकाहारी भारतीय व्यंजन

कराची। पाकिस्तान का औद्योगिक और वित्तीय केंद्र कराची खाने के शौकीनों के लिए खाद्य राजधानी बन गया है। नवीनतम चलन में प्रामाणिक और परिष्कृत भारतीय शाकाहारी व्यंजनों जैसे सोयाबीन आलू बिरयानी , आलू टिक्की , वड़ा पाव , मसाला डोसा और ढोकला के प्रति लोगो की रुचि काफी बढ़ रही है। सिंध प्रांत की राजधानी कराची के लाखों लोगों के लिए इसकी खूबसूरती यहां उपलब्ध भोजन के विकल्पों में है, जिसमे सबसे महंगे यूरोपीय और इतालवी व्यंजनों से लेकर किफायती चीनी भोजन या साधारण बन कबाब तक शामिल है, क्योंकि यह खाद्य राजधानी हर किसी के स्वाद और जेब को ध्यान में रखती है। हाल के महीनों मे खाने के शौकीन लोगों मे शुद्ध शाकाहारी व्यंजनों के प्रति रुचि विकसित हुई है। कराची में एम ए जिन्ना रोड के ऐतिहासिक पुराने परिसर मे स्थित महाराज करमचंद वेजिटेरियन फूड्स इन रेस्तरां के मालिक महेश कुमार का कहना है कि उनका व्यवसाय फल-फूल रहा है, क्योंकि लोगो मे शाकाहारी व्यंजनों के प्रति रुचि पैदा हो रही है, जिन्हे कराची में शुद्ध शाकाहारी भारतीय व्यंजन के रूप मे जाना जाता है। शहर का नारायण परिसर इलाका, जहां विभाजन से पहले हिंदू, सिख और ईसाई शांति और सद्भाव से रहते थे, वहां न केवल रेस्तरां है, बल्कि सदियों पुराना स्वामीनारायण मंदिर और एक गुरुद्वारा भी है। शुरुआत मे परिसर के लोगो के लिए बनाया गया महाराज करमचंद रेस्तरां अब इन वकीलों और आगंतुकों के लिए एक लोकप्रिय स्थान है, जो परिसर के ठीक सामने स्थित शहर की अदालतों मे या पुराने कराची के इस व्यावसायिक रूप से जीवंत क्षेत्र मे अन्य व्यवसायों के लिए हर दिन आते है। महेश कुमार ने कहा, हमारी सोयाबीन आलू बिरयानी, आलू टिक्की, पनीर कढ़ाई और मिश्रित सब्जियां प्रसिद्ध है तथा दोपहर के भोजन के दौरान हमारे यहां बड़ी संख्या मे लोग आते है और साथ ही बहुत सारे टेकअवे और डिलीवरी भी होती है। उन्होने कहा कि उनके पिता ने 1960 मे यह रेस्तरां शुरू किया था और इसमें वही पुरानी लकड़ी की कुर्सियां और मेजे है, लेकिन जो चीज मुस्लिम और गैर-मुस्लिम ग्राहकों को आकर्षित करती है, वह है यहां के व्यंजन तैयार करने मे इस्तेमाल किए जाने वाले घर के बने मसालों के अलावा ताजी सब्जियां और तेल। महेश मानते है कि वह अपने रेस्तरां का प्रचार नही करते, क्योंकि अभी भी कुछ मुस्लिम रूढ़िवादी लोग है जो मुसलमानो के लिए हिंदुओं द्वारा तैयार भोजन खाना वर्जित मानते है। उन्होने कहा, हमारे पास पर्याप्त ग्राहक है जो हमारे भोजन और सेवा से खुश है लेकिन हम इसका प्रचार करना पसंद नही करते है। ऐसा नही है कि केवल यह हिंदू-संचालित शाकाहारी रेस्तरां ही अच्छा काम कर रहा है, बल्कि कराची के अन्य भागों मे भी उद्यमी हिंदू, ईसाई और मुस्लिम महिलाओं ने परिष्कृत भारतीय शाकाहारी व्यंजन जैसे पाव भाजी , वड़ा पाव , मसाला डोसा और ढोकला मे विशेषज्ञता वाले खाद्य स्टॉल लगाए है।

हैरिस ने राष्ट्रपति निर्वाचित होने पर टिप पर करों को समाप्त करने का वादा किया

लास वेगास। अमेरिका में डेमोक्रेटिक पार्टी की राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार कमला हैरिस ने शनिवार को जनता से वादा किया कि वह रेस्तरां कर्मचारियों और अन्य सेवा कर्मचारियों को दिए जाने वाले टिप पर लागू करों को समाप्त करने की दिशा में काम करेंगी। हैरिस से पहले उनके प्रतिद्वंद्वी डोनाल्ड ट्रंप भी अपने चुनाव प्रचार अभियान के दौरान ऐसा ही वादा जनता से कर चुके हैं। दिलचस्प बात यह है कि राष्ट्रपति पद के दोनों उम्मीदवार अपने चुनाव प्रचार में लगभग एक जैसी ही बात कर रहे हैं। हैरिस ने लास वेगास के नेवादा विश्वविद्यालय परिसर में एक रैली में यह घोषणा की। लास वेगास की अर्थव्यवस्था काफी हद तक होटल, रेस्तरां और मनोरंजन उद्योगों पर निर्भर है। ट्रंप ने भी जून में एक रैली में कमोबेश यही बात कही थी, लेकिन हकीकत यह है कि कांग्रेस (संसद) के समर्थन के बिना न तो ए कदम ट्रंप उठा सकते हैं और न ही हैरिस। हैरिस ने अपने संबोधन में कहा, सभी से मेरा वादा है कि जब मैं राष्ट्रपति बनूंगी तो हम अमेरिका के कामकाजी परिवारों के लिए अपनी लड़ाई जारी रखेंगे। इसमें न्यूनतम वेतन बढ़ाना और सेवा तथा आतिथ्य कर्मचारियों को दिए जाने वाले टिप पर करों को खत्म करना शामिल है।

राष्ट्रपति मुर्मू फिजी, न्यूजीलैंड व तिमोर-लेस्ते की यात्रा के बाद स्वदेश लौटीं

भाषा। दिली (तिमोर-लेस्ते)

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू तीन देशों-फिजी, न्यूजीलैंड और तिमोर-लेस्ते की यात्रा पूरी करने के बाद रविवार को स्वदेश रवाना हो गईं।मुर्मू की यह यात्रा तीनों देशों के साथ भारत के संबंधों को मजबूत करने पर केंद्रित थी। उन्होंने तीन देशों की अपनी यात्रा के अंतिम चरण के तहत तिमोर-लेस्ते की यात्रा की, जहां उन्होंने दक्षिण-पूर्व एशियाई देश के राष्ट्रपति जोस रामोस-होर्ता के साथ विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के लिए व्यापक चर्चा की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की तिमोर-लेस्ते की सफल यात्रा संपन्न, जिससे दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती मिली। एक विशेष सम्मान के तहत राष्ट्रपति रामोस-होर्ता ने मुर्मू को हवाई अड्डे पर गर्मजोशी से विदाई दी। रामोस-होर्ता ने राष्ट्रपति मूर्मू को देश के सर्वोच्च सम्मान ग्रैंड कॉलर ऑफ द ऑर्डर ऑफ तिमोर-लेस्ते से सम्मानित किया। इसके साथ ही उन्होंने पलासियो नोब्रे डी लोहाने में राष्ट्रपति मुर्मू के सम्मान में एक राजकीय भोज का भी आयोजन किया।

इजराइल ने चेताया, इलाके खाली करें

● गाजा में स्कूल पर हमले के बाद दिया आदेश

भाषा। दीर अल-बलाह

इजराइल की सेना ने शरणार्थी शिविर में तब्दील एक स्कूल पर घातक हमले में कम से कम 80 फलस्तीनियों की मौत के बाद रविवार तड़के दक्षिण गाजा में और इलाके खाली करने का आदेश दिया है। स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह जानकारी दी। इजराइल ने कहा है कि उसने चरमपंथियों की एक कमान चौकी को निशाना बनाकर हमला किया है, जिसमें 19 लड़ाकों की मौत हुई है। इजराइल के सैनिक बुरी तरह तबाह हुए उन इलाकों की ओर लौट रहे हैं जहां उन्होंने पहले फलस्तीनी चरमपंथियों से लड़ाई लड़ी थी। ऐसे में वह कई बार और इलाकों को खाली करने का निर्देश दे चुका है। गाजा की 23 लाख की आबादी में अधिकतर लोग 10 महीने से जारी युद्ध के दौरान कई बार विस्थापित हो चुके हैं। इजराइल की ओर से जारी ताजा आदेश में खान यूनुस शहर के कई इलाकों को खाली करने के लिए कहा गया है। इनमें इजराइल की ओर से मानवाधिकार सहायता क्षेत्र घोषित किया गया वह इलाका भी शामिल है, जहां से इजराइली सेना के अनुसार रॉकेट दागे गए थे। इजराइल हमास और अन्य आतंकवादियों पर नागरिकों के बीच छिपने और आवासीय क्षेत्रों से हमले करने का आरोप लगाता है। शनिवार को गाजा शहर में एक स्कूल के अंदर मस्जिद पर हमला किया गया था, जहां हजारों लोग शरण लिए हुए थे। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार हमले में 80 लोगों की मौत हुई है और करीब 50 लोग घायल हुए हैं। हालांकि इजराइली सेना का कहना है कि हमले में हमास और इस्लामिक जिहाद के 19 चरमपंथी मारे गए हैं।

युगांडा की राजधानी में कूड़े का ढेर ढहने की घटना में 18 लोगों की मौत

भाषा। कंपाला

युगांडा की राजधानी में कूड़े का ढेर ढहने की घटना में कम से कम 18 लोगों की मौत हो गई। रेड क्रॉस ने यह जानकारी दी। कंपाला कैपिटल सिटी अथॉरिटी ने एक बयान में बताया कि शुक्रवार देर रात किटेजी में कूड़े का ढेर ढहने से कम से कम 14 अन्य लोग घायल हो गए। इसमें कहा गया है कि किटेजी लैंडफिल, कांपला के अधिकांश हिस्से से निकलने वाले अपशिष्ट का निपटान स्थल है। ऐसा माना जा रहा है कि भारी बारिश के कारण कूड़े का ढेर ढह गया। घटना कैसे हुई इसकी सटीक जानकारी नहीं मिल पाई लेकिन शहर के अधिकारियों ने बताया कि बेतरतीब तरीके से कचरे को फेंका गया था, जिसकी वजह से ए ढेर ढह गया। युगांडा रेड क्रॉस की प्रवक्ता इरेन नाकासीता ने बताया कि रविवार को घटनास्थल से और शव बरामद होने के बाद मृतकों की संख्या 18 हो गई। उन्होंने बताया, अभियान अभी पूरा नहीं हुआ है। बारिश के कारण बचाव दलों के कचरे के ढेर को खोदने के प्रयासों में बाधा आ रही है। किटेजी लैंडफिल शहर के पिछले इलाके में स्थित एक खड़ी ढलान पर स्थित है, जहां प्लास्टिक कचरा इकट्ठा करने वाली महिलाएं और बच्चे अक्सर काम के लिए जमा होते हैं। लैंडफिल वाली जगह के करीब कुछ घर भी बने हुए हैं।

मंदिरों और घरों पर हमलों के बीच बांग्लादेशी हिंदुओं ने विरोध प्रदर्शन किया

भाषा। ढाका

बांग्लादेश की राजधानी ढाका और उत्तर-पूर्वी बंदरगाह शहर चटगांव में शनिवार को लगातार दूसरे दिन अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के हजारों सदस्यों ने बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने देश भर में मंदिरों, उनके घरों और व्यवसायों पर हमलों के बीच सुरक्षा की मांग की वे अल्पसंख्यकों पर अत्याचार करने वालों के खिलाफ मुकदमा चलाने में तेजी लाने के लिए विशेष न्यायाधिकरणों की स्थापना, अल्पसंख्यकों के लिए 10 प्रतिशत संसदीय सीट, अल्पसंख्यक संरक्षण कानून लागू करने आदि की मांग कर रहे थे। हिंदू प्रदर्शनकारियों की रैली से मध्य ढाका के शाहबाग में तीन घंटे से अधिक समय तक यातायात अवरुद्ध रहा। छात्रों सहित हजारों मुस्लिम प्रदर्शनकारियों ने भी यहां उनके साथ मिलकर अल्पसंख्यकों के हित के लिए एकजुटता व्यक्त की। बांग्लादेशी हिंदुओं को शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देने और सोमवार को भारत भाग जाने के बाद हिंसा और लूटपाट का खामियाजा भुगतना पड़ा है। कई हिंदू मंदिरों, घरों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में तोड़फोड़ की गई है तथा बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग पार्टी से जुड़े कम से कम दो हिंदू नेता हिंसा में मारे गए हैं।

रेफात नए प्रधान न्यायाधीश बने

ढाका। सैयद रेफात अहमद ने रविवार को बांग्लादेश के नए प्रधान न्यायाधीश के रूप मे शपथ ली। इससे एक दिन पहले ओबैदुल हसन ने प्रधान न्यायाधीश के पद से इस्तीफा दे दिया था। न्यायमूर्ति हसन के अलावा शीर्ष अदालत की अपीलीय डिवीजन के पांच न्यायाधीशों ने भी पद से इस्तीफा दे दिया था। प्रधान न्यायाधीश (65) ने शनिवार को अपना निर्णय दोपहर करीब एक बजे उस समय घोषित किया, जब भेदभाव विरोधी छात्र आंदोलन के प्रदर्शनकारी अदालत परिसर मे एकत्र हुए। प्रदर्शनकारी छात्रों ने हसन और अपीलीय डिवीजन के न्यायाधीशों को दोपहर एक बजे तक इस्तीफा देने का समय दिया था। डेली स्टार समाचार पत्र की रिपोर्ट के अनुसार, अहमद ने स्थानीय समयानुसार दोपहर करीब 12 बजकर 45 मिनट पर राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास के दरबार हॉल में एक समारोह के दौरान देश के नए प्रधान न्यायाधीश के रूप मे शपथ ली।

बिधान रंजन रॉय पोद्दार, सुप्रोदीप चक्मा ने बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के सलाहकार के रूप में शपथ ली

ढाका। बांग्लादेश मे बिधान रंजन रॉय पोद्दार और सुप्रोदीप चक्मा ने नोबेल पुरस्कार से सम्मानित मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार की सलाहकार परिषद के सदस्य के रूप मे रविवार को शपथ ली। सरकारी समाचार एजेंसी बीएसएस के अनुसार, राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने राष्ट्रपति भवन बंगभवन के दरबार हॉल में आयोजित एक समारोह में डॉ. पोद्दार और चक्मा को पद की शपथ दिलाई। इस दौरान अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार डॉ. यूनुस मौजूद थे। बृहस्पतिवार को 16 सदस्ईय सलाहकार परिषद के अधिकांश सदस्यों ने शपथ ली थी। परिषद अंतरिम सरकार के कामकाज में यूनुस की सहायता करेगी। समाचार एजेंसी के मुताबिक पूर्व राजदूत और चटगांव हिल ट्रैक्ट्स डेवलपमेंट बोर्ड के अध्यक्ष चक्मा और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ के पूर्व निदेशक डॉ. पोद्दार बृहस्पतिवार को शपथ नही ले सके थे, क्योंकि वे ढाका से बाहर थे। एक अन्य सलाहकार, मुक्ति संग्राम सेनानी फारूक-ए-आजम, शपथ नही ले पाए क्योंकि वह राजधानी से बाहर हैं।

पेरिस ओलंपिक का समापन, अमेरिका का दबदबा

● चीन दूसरे पर और जापान को तीसरा स्थान

● भारत 6 पदकों के साथ 71 वें स्थान पर रहा

भषा। पेरिस,

रंगारंग कार्यक्रम के साथ पेरिस ओलंपिक का समापन हो गया। स्पर्धा के अंतिम दिन रविवार को पदक तालिका (शीर्ष दस देश और भारत) इस प्रकार रही। भारत तालिका में एक रजत और पांच कांस्य पदक जीतकर 71वें स्थान पर रहा। अमेरिका पदक (126) तालिका में शीर्ष पर रहा जिसके बाद चीन-91 और जापान-45 पदकों के साथ क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे।

मुक्केबाजी में उज्बेकिस्तान का जलवा

कोच की जान बचाए जाने के बाद मुक्केबाजी रिंग में उज्बेकिस्तान का दबदबा

उज्बेकिस्तान के प्रिय मुख्य मुक्केबाजी कोच तुलकिन किलिचेव को पेरिस ओलंपिक में अपनी टीम के पहले स्वर्ण पदक का जश्न मनाने के बाद ब्रिटेन के ट्रेनिंग स्टाफ के दो सदस्यों ने दिल का दौरा पड़ने से बचाया। देश के मुक्केबाजों ने इसकी पुष्टि की। उज्बेकिस्तान की टीम ने पेरिस खेलों में पांच स्वर्ण पदक जीते जो 20 वर्षों में किसी भी ओलंपिक टीम का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इस तरह किलिचेव के मुक्केबाजों ने अपने कोच को जश्न मनाने का मौका दिया जो पेरिस के एक अस्पताल में भर्ती हैं। बखोदिर जलोलोव ने अपना दूसरा सुपर हैवीवेट स्वर्ण पदक जीतने के बाद कहा, (किलिचेव) वास्तव में एक कोच या पिता से कहीं अधिक हैं। उन्होंने कहा, उन्होंने हमें पाला है। उन्होंने हमें शिक्षित किया है। उन्होंने हम तक खेल भावना पहुंचाई है। वह हमेशा मेरे दिल में रहे हैं और कल हम उनसे अस्पताल में मिलने जाएंगे। लाईवेट वर्ग में हसनबाय दुसमातोव के गुरुवार को उज्बेकिस्तान का पहला स्वर्ण पदक जीतने के बाद किलिचेव बीमार पड़ गए। ग्रेट ब्रिटेन मुक्केबाजी के अनुसार टीम के डॉक्टर हरज सिंह और फिजियोथेरेपिस्ट रॉबी लिलीस ने किलिचेव को जानलेवा संकट में पाया। उन्होंने कोच को सीपीआर दिया और लिलीस ने डिफाइब्रिलेटर (हृदय गति सामान्य करने के लिए इस्तेमाल होने वाली मशीन) का भी इस्तेमाल किया।

विशिष्ट योगदान के लिए बिंद्रा ओलंपिक ऑर्डर से सम्मानित

पेरिस। भारतीय निशानेबाज अभिनव बिंद्रा को ओलंपिक आंदोलन में उनके विशिष्ट योगदान के लिए प्रतिष्ठित ओलंपिक ऑर्डर से सम्मानित किया गया।बीजिंग 2008 ओलंपिक खेलो मे 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा मे शीर्ष स्थान हासिल करके भारत के पहले ओलंपिक व्यक्तिगत स्वर्ण पदक विजेता बने बिंद्रा को शनिवार को यहां अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के 142वे सत्र के दौरान यह सम्मान प्रदान किया गया।बिंद्रा ने कहा, जब मै छोटा था तो ए ओलंपिक रिंग्स ही थे, जिन्होंने मेरे जीवन को अर्थ दिया। दो दशक से अधिक समय तक अपने ओलंपिक सपने को पूरा करने मे सक्षम होना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। खिलाड़ी के तौर पर अपने करियर के बाद, ओलंपिक आंदोलन मे योगदान देने की कोशिश करना मेरे लिए बहुत बड़ा जुनून रहा है। यह मेरे लिए सौभाग्य और सम्मान की बात है। आईओसी खिलाड़ी आयोग के उपाध्यक्ष 41 वर्षीय बिंद्रा ने कहा कि यह पुरस्कार उन्हे और भी अधिक मेहनत करने और ओलंपिक आंदोलन मे योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा। वर्ष 1975 मे स्थापित ओलंपिक ऑर्डर ओलंपिक आंदोलन का सर्वोच्च पुरस्कार है। यह ओलंपिक आंदोलन मे विशिष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।

सेबस्टियन आईओसी अध्यक्ष बनने की दौड़ में शामिल होने पर करेंगे विचार

पेरिस। विश्व एथलेटिक्स के अध्यक्ष सेबेस्टियन को ने रविवार को कहा कि वह अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के अध्यक्ष के रूप मे थॉमस बाक की जगह लेने के लिए होने वाली दावेदारी पर गंभीरता से विचार करेंगे। ओलंपिक के इस पूर्व स्वर्ण पदक विजेता से जब रविवार को पूछा गया कि क्या वह आईओसी अध्यक्ष के रूप मे थॉमस बाक की जगह लेने के लिए अपना नाम आगे बढ़ाएंगे तो उन्होंने कहा, बेशक, मै इस पर विचार करूंगा। लंदन ओलंपिक 2012 के आयोजन की देखरेख करने वाले सेबेस्टियन को लंबे समय से बाक के संभावित प्रतिस्थापन के रूप मे देखा जा रहा है। बाक ने शनिवार को 2025 मे पद छोड़ने की घोषणा कर सबको चौका दिया था। सेबेस्टियन हालांकि 67 साल के है और आईओसी अध्यक्ष के लिए संभावित चुनाव मे यह उनके खिलाफ जा सकता है। सेबेस्टियन ने ओलंपिक मे ट्रैक स्पर्धाओ के समापन पर संवाददाता सम्मेलन मे कहा, मैने हमेशा यह स्पष्ट किया है कि अगर मौका मिला तो मै इस पर गंभीरता से विचार करूंगा।

ओलंपिक पदक तालिका

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
अमेरिका	40	44	42	126
चीन	40	27	24	91
जापान	20	12	13	45
ऑस्ट्रेलिया	18	19	16	53
फ्रांस	16	26	22	64
नीदरलैंड	15	07	12	34
ब्रिटेन	14	22	29	65
कोरिया	13	09	10	32
इटली	12	13	15	40
जर्मनी	12	13	08	33
भारत	00	01	05	06

आइफिल टॉवर पर चढ़ा एक व्यक्ति, खाली कराया गया

पेरिस। एक व्यक्ति को रविवार को यहां ओलंपिक समापन समारोह से कुछ घंटे पहले पेरिस के ऐतिहासिक आइफिल टॉवर पर चढ़ते देखा गया जिसके बाद अधिकारियों ने आइफिल टॉवर को खाली करा दिया। एक व्यक्ति को बिना शर्ट पहने दोपहर मे 330 मीटर (1,083 फीट) ऊंचे टॉवर पर चढ़ते देखा गया। यह स्पष्ट नही है कि उसने अपनी चढ़ाई कहां से शुरू की, लेकिन उसे टॉवर के दूसरे हिस्से में लगे ओलंपिक रिंग्स के ठीक ऊपर देखा गया। समापन समारोह रात नौ बजे से आइफिल टॉवर से काफी दूर सेंट डेनिस मे स्टेड डी फ्रांस मे शुरू होना है।

अन्य अंतरराष्ट्रीय सितारों के साथ भारत में प्रतिस्पर्धा करना मेरा सपना: चोपड़ा

नई दिल्ली। स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा को उम्मीद है कि पेरिस ओलंपिक मे रजत पदक जीतने के बाद वह जल्द ही भारत में अन्य प्रमुख अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करते दिखेंगे।नीरज ने ओलंपिक.कॉम द्वारा प्रशंसकों के साथ आयोजित एक बातचीत सत्र के दौरान कहा, भारत में अन्य अंतरराष्ट्रीय सितारों के साथ प्रतिस्पर्धा करना मेरा सपना है। उम्मीद है कि भारत में जल्द ही एक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता होगी और मै ऐसा कर पाऊंगा।

ओलंपिक में क्रिकेट की वापसी का असर : पोंटिंग

दुबई। विश्व कप विजेता ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग का मानना है कि चार साल बाद आयोजित होने वाले लॉस एंजिल्स ओलंपिक में क्रिकेट की वापसी इस खेल के लिए एक बड़ी सकारात्मक बात होगी। क्रिकेट की 128 वर्षों के ओलंपिक मे वापसी हो रही है। इससे पहले क्रिकेट को एकमात्र बार 1900 ओलंपिक मे दो टीमों ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के बीच खेला गया था। इसका स्वर्ण पदक ब्रिटेन की टीम ने जीता था। पोंटिंग ने आईसीसी रिव्यू से कहा, यह हमारे खेल के लिए केवल एक सकारात्मक बात हो सकती है। मै पिछले 15 या 20 वर्षों मे विभिन्न समितियों का हिस्सा रहा हूं।

कांगो के धावक मुलांबा को पेरिस ओलंपिक में डोपिंग जांच में पॉजिटिव पाया गया

पेरिस। पेरिस ओलंपिक के उद्घाटन समारोह के लिए कांगो के ध्वजवाहकों में से एक फर्राटा धावक डोमिनिक लास्कोनी मुलांबा को एनाबॉलिक स्टेरॉयड के इस्तेमाल का दोषी पाया गया है। अंतरराष्ट्रीय जांच एजेंसी (आईटीए) ने रविवार को यह जानकारी दी। आईटीए ने कहा कि 100 मीटर फर्राटा दौड़ मे प्रतिस्पर्धा करने वाले मुलांबा ने जो नमूना दिया था उसकी जांच मे प्रतिबंधित पदार्थ स्टैनोजोलोल मेटाबोलाइट की पुष्टि हुई है

रुबलेव शीर्ष वरीय सिनर को हराकर सेमीफाइनल में

मांट्रियल। पांचवे वरीय आंद्रे रुबलेव ने शनिवार को यहां शीर्ष वरीय गत चैंपियन यानिक सिनर को कड़े मुकाबले मे 6-3, l-6, 6-2 से हराकर वर्षा से प्रभावित नेशनल बैंक ओपन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया।रुबलेव ने इससे पहले शनिवार को ही ब्रेंडन नाकाशिमा को 6-2, 6-2 से हराया था जबकि सिनर ने एलेजांद्रो तेबिलो को 6-4, 6-3 से शिकस्त दी थी।

खेलीफ ने उत्पीड़न के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई

पेरिस। ओलंपिक मुक्केबाजी चैंपियन इमाने खेलीफ ने पेरिस ओलंपिक के दौरान अपनी लिंग जांच के झूठे दावों के साथ ऑनलाइन उत्पीड़न के खिलाफ फ्रांस में कानूनी शिकायत दर्ज की है। उनके वकील ने रविवार को यह जानकारी दी। खेलीफ शुक्रवार को महिला वेल्टरवेट वर्ग में स्वर्ण पदक हासिल कर अपने देश अल्जीरिया के लिए बड़ी हस्ती बन गई।

फुटबॉल टीम का मुख्य कोच कोई भारतीय हो: मार्केज

नई दिल्ली। भारतीय फुटबॉल टीम का मुख्य कोच बनना मनोलो मार्केज के लिए सपना सच होने जैसा है लेकिन रविवार को इस स्पेनिश खिलाड़ी ने कहा कि भविष्य मे अगर कोई भारतीय ही राष्ट्रीय टीम को कोचिंग दे तो बेहतर होगा। पिछले महीने अखिल एआईएफएफ ने इगोर स्टिमक की जगह 55 वर्षीय मार्केज को तीन साल के लिए राष्ट्रीय पुरुष टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया था।

भारतीय अभियान में मनु रहीं स्टार

● विनेश को अयोग्य ठहराना निराशाजनक

भाषा। पेरिस

भारत के लिए पेरिस ओलंपिक में प्रदर्शन अच्छा और बुरा दोनों रहा जिसमें एक तरफ जहां युवा निशानेबाज मनु भाकर ने दो पदक जीते तो वहीं भाला फेंक सुपरस्टार नीरज चोपड़ा का रजत पदक उम्मीदों से कमतर रहा जबकि विनेश फोगाट का फाइनल से पहले अयोग्य ठहराया जाना निराशाजनक रहा जिसमें छह खिलाडियों के चौथे स्थान नासूर रहे। ओलंपिक के शुरू में पदक तालिका में दोहरे पदकों तक पहुंचना बहुत महत्वाकांक्षी लग रहा था लेकिन कई खिलाड़ियों के करीब से चूकने का काफी असर पड़ा। इसमें क्या होता के कई सवाल उठे। क्या होता अगर बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन कांस्य पदक के प्ले-ऑफ में अचानक हारते नहीं, क्या होता अगर तीरंदाज दीपिका कुमारी क्वार्टर फाइनल में कोरिया के खिलाफ एक शॉट में चूक नहीं जाती और क्या होता अगर मीराबाई चानू ने सिर्फ एक किलोग्राम वजन और उठा लिया होता? किसी को उम्मीद नहीं थी कि रंकीरेड्डी और शेट्टी पदक के बिना विदा होंगे। किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि स्वप्निल कुसाले स्कीट पदक के लिए इंतजार खत्म कर देंगे। देश के 117 सदस्ईय दल में महज छह पदक आना आदर्श नहीं हैं लेकिन भारत के लिए इस दौरान खुशी, उम्मीद, निराशा और दुख के पल भी आए। भारत तोक्यो ओलंपिक में जीते गए सात पदकों की बराबरी नहीं कर सका। अगर चौथे स्थान पर रहने वाले छह खिलाड़ी पदक जीतने में सफल रहते तो तालिका में दोहरे पदकों की संख्या संभव थी।

निशानेबाजों ने आखिरकार पदक जीते

युवा मनु भाकर की अगुआई मे निशानेबाजों का प्रदर्शन भारत के लिए राहत भरा रहा क्योंकि छह में से तीन पदक निशानेबाजी से आए। यह कहना अतिश्योक्ति नही होगी कि 22 वर्षीय भाकर ने अपने अभूतपूर्व प्रदर्शन से भारत का मान बचाया। उन्होने मिश्रित टीम 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में सरबजोत सिंह के साथ मिलकर एक और कांस्य पदक जीता। जब एक पदक भी स्टारडम की गारंटी देता है तो भाकर के दोहरे पदक ने उन्हें एक अलग ही श्रेणी में ला खड़ा किया है। बहुत कम लोगो ने कुसाले को स्कीट निशानेबाजी में भारत के लिए पहला पदक जीतने की उम्मीद की होगी। पर कल्पना कीजिए कि अगर निशानेबाजों ने फिर से धोखा दिया होता तो भारत पदक तालिका में कहां होता।

विनेश के दिल को झकझोर देने वाला ओलंपिक

भाग्य ने श्रीजेश को शानदार विदाई दी, लेकिन पहलवान विनेश फोगाट अपनी आत्मा पर कभी नहीं भरने वाला घाव लेकर मंच से चली गईं। एक मुश्किल मुकाबले के बाद एक मामूली हार और एक चुनौतीपूर्ण हार दोनों ही हो सकती है, लेकिन उनके मामले में वह जीतने के बावजूद हार गईं। यह उनकी काबिलियत या कौशल का सवाल नहीं था बल्कि तकनीकी पक्ष था जिसने उनसे पदक छीन लिया। अगर कोई एक भारतीय महिला पहलवान ओलंपिक पदक की हकदार थी तो वह विनेश ही थीं जिन्होंने साल भर लगातार खिताब

और पदक जीतकर अपनी बादशाहत साबित कर दी थी। उनकी वापसी में न तो कम तैयारी और न ही युई सुसाकी बाधा बन सकीं लेकिन उनका अपना 100 ग्राम का वजन इन सब पर पानी फेर गया। विनेश ने इस घटना के बाद खेल से संन्यास की घोषणा कर दी और अब वह अयोग्य ठहराए जाने के खिलाफ अपनी अपील पर फैसले का इंतजार कर रही हैं।

नीरज का रजत

नीरज ने 89.45 मीटर के सत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ क्वालीफिकेशन में शीर्ष स्थान प्राप्त करके भारत को एक और स्वर्ण की उम्मीद दी। नीरज जांघ की समस्या के बावजूद तैयार थे। पर पाकिस्तान के अरशद नदीम ने 92.97 मीटर का शानदार थ्रो फेंककर सचमुच प्रतियोगिता खत्म कर दी। नीरज 89.34 मीटर से बेहतर थ्रो नही कर पाए। उनसे ऐसी उम्मीदे थी कि रजत भी हार जैसा लग रहा था।

हॉकी में खुश

पुरुष हॉकी टीम के ओलंपिक मे लगातार दूसरा पदक जीतने की क्षमता पर सवाल बने हुए थे। टीम तोक्यो मे जीते गए पदक के रंग को बेहतर नही कर सकी, लेकिन जिस तरह से उसने ऑस्ट्रेलिया को हराया, बेल्जियम के खिलाफ मुकाबला खेला और जर्मनी और ब्रिटेन के खिलाफ दबाव झेला, उससे पता चलता है कि हरमनप्रीत सिंह की अगुआई वाली यह टीम मानसिक रूप से कितनी मजबूत हो गई है। भारतीय टीम अंडरडॉग की तरह शामिल हुई लेकिन चैंपियन की तरह खेली। गोलकीपर पीआर श्रीजेश के लिए संन्यास लेने के लिए यह बिलकुल सही समय था, जिन्होंने तोक्यो कांस्य से पहले अपनी पहचान हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे खेल के पुनरुद्धार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। श्रीजेश भारत के लिए अपना करियर खत्म करने वाले अकेले खिलाड़ी नही थे। पेरिस ओलंपिक निश्चित रूप से टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना और टेबल टेनिस खिलाड़ी शरत कमल के लिए आखिरी ओलंपिक थे। ऐसी संभावना है कि स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू 2028 ओलंपिक मे प्रतिस्पर्धा नही करें।

अमन ने कुश्ती अभियान को बचाया

मुक्केबाजों में निराशा

कोई भी मुक्केबाज पदक दौर में नहीं पहुंच सका लेकिन निशांत देव की हार सबसे ज्यादा खलेगी। एक अन्य दावेदार निकहत जरीन भी रो पड़ीं। हालांकि पहलवान अमन सेहरावत ने सुनिश्चित किया कि कुश्ती से पदक मिले। टीम में शामिल एकमात्र भारतीय पुरुष पहलवान उम्मीदों पर खरा उतरा। 57 किग्रा वर्ग में रवि दहिया की जगह लेने के पीछे भी कुछ कारण था और उन्होंने इसे साबित भी किया। कुश्ती ने लगातार पांचवें ओलंपिक में पदक जीता। सबसे निराशाजनक प्रदर्शन अंतिम पंघाल और अंशु मलिक का रहा। उनकी फिटनेस हमेशा संदेह के घेरे में रही।

भविष्य की उम्मीद : टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा और श्रीजा अकुला ने पहली बार व्यक्तिगत स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल मे जगह बनाकर उम्मीदों से बढ़कर प्रदर्शन किया। लक्ष्य सेन भले ही बैडमिंटन मे कांस्य पदक से चूक गए हो और पहलवान रीतिका हुड्डा पदक दौर मे नही पहुंच पाईं लेकिन उन्होने दिखाया कि उनमे बड़े मंच पर बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता है।

मेरे से भी अधिक प्रतिभाएं मौजूद: श्रीजेश

● नही पता कि मै हॉकी के अलावा क्या करूंगा

भाषा। पेरिस

लगभग दो दशक तक भारतीय गोल पोस्ट के सामने दीवार की तरह खड़े रहने के बाद दूसरे ओलंपिक कांस्य पदक के साथ हाल ही में संन्यास लेने वाले गोलकीपर पीआर श्रीजेश का मानना है कि भारतीय हॉकी में उनका उपयुक्त विकल्प खोजने के लिए काफी प्रतिभा मौजूद है।पेरिस ओलंपिक में 36 वर्षीय श्रीजेश ने शानदार प्रदर्शन किया और कांस्य पदक के मैच में भारत की स्पेन के खिलाफ 2-। की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।यहां इंडिया हाउस में पीटीआई को दिए साक्षात्कार में दिग्गज गोलकीपर श्रीजेश ने कहा, कोई खालीपन नहीं होगा। मेरी जगह कोई और आएगा। सभी खेलों में ऐसा ही होता है। सचिन तेंदुलकर थे और अब विराट कोहली हैं और कल कोई और उनकी जगह लेगा। इसलिए श्रीजेश कल थे लेकिन कल कोई और आएगा और उनकी जगह लेगा।

श्रीजेश को भारतीय जूनियर टीम में मार्गदर्शक (मेंटर) की भूमिका निभाने का प्रस्ताव दिया गया है। उन्होंने कहा

कि इतने वर्षों में उनका जीवन हॉकी के इर्द-गिर्द घूमता रहा है और अब जब वह संन्यास ले चुके हैं तो उन्हें नहीं पता कि वे क्या करेंगे। उन्होंने कहा, यह जीवन की कमी खलना जैसे है। मैं हॉकी के अलावा कुछ नहीं जानता। 2002 में जब मैं पहले दिन शिविर में गया था, तब से लेकर अब तक मैं उनके साथ रहा हूं। श्रीजेश ने कहा, मुझे नहीं पता कि मुझे किन चीजों की कमी खलेगी, शायद जब मैं घर पहुंचू तो मुझे पता चले। सुबह से ही मैं उनके साथ बाहर रहता हूं - ट्रेनिंग, जिम, मैदान पर - हमेशा एक मजेदार माहौल होता है। उत्साहवर्धक बातचीत, टीम बैठक, आपको उन पर चिल्लाना पड़ता है, यहां तक कि उन्हें बुरा-भला भी कहना पड़ता है। उन्होंने कहा, जीत के बाद जश्न मनाना या हार के बाद साथ में रोना, यह मेरी जिंदगी रही है। शायद हम नहीं जानते कि इससे बाहर रहना कैसा होता है। भारत ने यहां अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन अंतिम आठ के मुकाबले में किया जब टीम ने दूसरे क्वार्टर में 10 खिलाड़ियों तक सिमट जाने के बावजूद ब्रिटेन को पेनल्टी में 4-2 से हराया।

रेड कार्ड मिलने के बाद रात को सो नहीं पाया था: रोहिदास

पेरिस। भारतीय हॉकी खिलाड़ी अमित रोहित को पेरिस ओलंपिक के सेमीफाइनल मैच से निलंबित होने के कारण रात को सो नही सके थे लेकिन वह टीम के साथी खिलाड़ियों के आभारी है कि ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ क्वार्टर फाइनल मैच मे रेड कार्ड मिलने पर किसी ने उन पर सवाल नही उठाया। रोहिदास को इस अंतिम आठ मैच से बाहर होने के कारण भारतीय टीम को आखिरी 42 मिनट तक 10 खिलाड़ियों के साथ खेलना पड़ा था। रोहिदास ने यहां इंडिया हाउस मे शनिवार को टीम के सम्मान समारोह के दौरान पीटीआई-भाषा को दिए साक्षात्कार मे कहा, एक मैच के निलंबन के कारण मुझे सेमीफाइनल मैच से बाहर होने का मलाल है। यह काफी अहम मैच था। उन्होने कहा, पूरा देश और मेरे साथी खिलाड़ी मेरे साथ थे। टीम ने कभी भावनात्मक रूप से बाहर होने नही दिया। मेरा ध्यान बस अगले मैच पर था।

मेधांश ने चालों से जीता दिल

शिवानी कप चेस: दूसरा स्थान हासिल किया

टाईब्रेक स्कोर में बेहतर प्रदर्शन से आरिफ चैंपियन

लखनऊ। आरिफअली ने 40वां शिवानी कप संडे स्पेशल ओपन चेस टूर्नामेंट में कड़ी टक्कर के बाद बेहतर टाईब्रेक स्कोर के आधार पर विजेता ट्रॉफी जीत ली। दूसरी ओर महिलाओं में वर्तिका आरवर्मा व वेटरन में अनिल बाजपेयी ने बाजी मारी। लखनऊ जिला चेस स्पोर्ट्स एसोसिएशन व शिवानी पब्लिक स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 40 हजार रुपए की ईनामी राशि वाले इस टूर्नामेंट में 160 खिलाड़ियों ने आपस में जोर आजमाईश की। सातवें व अंतिम राउंड के बाद आरिफ अली व मेधांश सक्सेना के समान 6-6 अंक रहे। हालांकि टाईब्रेक स्कोर के चलते आरिफअली पहले स्थान पर रहे जबकि मेधांश को दूसरा स्थान मिला। इसी के साथ आशु वर्मा,मयंक पाण्डेय व संयम श्रीवास्तव को भी 6-6 अंक मिले जो क्रमशः तीसरे से पांचवें स्थान तक रहे। वेटरन60 वर्ष से अधिकद्ध आयु वर्ग में अनिल बाजपेयी सर्वाधिक साढ़े पांच अंक के साथ शीर्ष पर रहे। कमलेश कुमार केसरवानी व केके कुल्हरी ;दोनों 5.5 अंक टाईब्रेक स्कोर के चलते दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी वर्तिका आरणवर्मा सर्वाधिक 5 अंक के साथ बनीं। इस वर्ग में आद्या शुक्ला 4 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रहीं। आयु वर्ग के मुकाबलों में अंडर-16 आयु वर्ग में आभास कुमार श्रीवास्तव, शशांक श्रीवास्तव व उज्जवल राज श्रीवास्तव के समान 5.5 अंक रहे लेकिन टाईब्रेक स्कोर के चलते क्रमश पहलेए दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। अंडर 13 वर्ग में लक्ष्य निगम 5 अंक के साथ पहलेए माहिर अग्रवाल साढ़े चार अंक के साथ दूसरे व मेधांश राज 4 अंक के साथ तीसरे स्थान पर रहे। अंडर11 वर्ग में अंशुमान सिंह 4 अंक के साथ पहले स्थान पर रहे। यशप्रकाश मिश्रा व अथर्व दोनों के समान साढ़े तीन.साढ़े तीन अंक रहे लेकिन टाईब्रेक स्कोर के चलते क्रमश रू दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। समापन समारोह में मुख्य अतिथि भाजपा प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी व विशिष्ट अतिथि शिवानी ग्रुप आफस्कूल्स एंड कॉलेजेस के संस्थापक निदेशक मार्कण्डेय दुबे ने पुरस्कार वितरित किए। चेस स्पोर्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष सुधीर ने आभार जताया।

क्विक न्यूज

और लंबा हुआ इंतजार: खेल पंचाट ने विनेश की अपील पर फैसला 13 अगस्त तक टाला

पेरिस। खेल पंचाट (कैस) का तदर्थ प्रभाग ओलंपिक महिला 50 किलोग्राम फ्रीस्टाइल कुश्ती के फाइनल मुकाबले से पहले अयोग्य करार दी गईं भारतीय पहलवान विनेश फोगाट की अपील पर विचार करने पर अभी कुछ और समय लेगा और इस मामले पर फैसला अब 13 अगस्त को सुनाया जाएगा। मामले की सुनवाई शुक्रवार को समाप्त हुई जिसमे कैस ने विनेश की अपील स्वीकार कर ली थी। विनेश ने फाइनल मुकाबले की सुबह 100 ग्राम अधिक वजन होने के कारण अयोग्य ठहराए जाने के खिलाफ अपील की थी। इस अपील पर फैसला पहले रविवार शाम सुनाया जाना था। भारतीय ओलंपिक संघ ने पहले कहा था कि फैसला रविवार को आएगा, लेकिन फिर उसने स्पष्टीकरण जारी करते हुए कहा कि परिणाम 13 अगस्त को ही पता चलेगा। आईओए के बयान में कहा गया, सीएएस के तदर्थ प्रभाग ने विनेश फोगाट बनाम यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति मामले मे एकमात्र मध्यस्थ माननीय डॉ. एनाबेले बेनेट को 13 अगस्त 2024 को शाम छह बजे तक फैसला देने का समय दिया है।

विनेश कम से कम रजत पदक की हकदार: गांगुली

कोलकाता। भारत के पूर्व क्रिकेट कप्तान सौरव गांगुली ने रविवार को पहलवान विनेश फोगाट को अपना समर्थन देते हुए कहा कि वह पेरिस ओलंपिक मे 50 किग्रा फ्रीस्टाइल फाइनल में जगह बनाने के बाद कम से कम रजत पदक की हकदार है। गांगुली ने यहां कोलकाता फूड फेस्टिवल के इतर इस बारे मे पूछे जाने पर कहा, मै सटीक नियम नही जानता, लेकिन मै समझता हूं कि जब वह फाइनल में पहुंची तो उसने ठीक से क्वालीफाई किया होगा। जब आपने फाइनल में जगह बना ली तब आप स्वर्ण या रजत पदक ही जीतते है। उसे गलत तरीके से अयोग्य घोषित किया गया था या नही, मुझे नही पता, लेकिन वह कम से कम रजत पदक की हकदार है।

विनेश को न्याय मिलना चाहिए : खाप पंचायत

चंडीगढ़। हरियाणा में कई खाप पंचायतों ने रविवार को महिला पहलवान विनेश फोगाट के समर्थन करते हुए उनके लिए न्याय और उन्हे भारत रत्न दिए जाने की मांग भी की। खाप पंचायतों (जाति के आधार पर) ने हरियाणा के चरखी दादरी मे सर्व खाप महापंचायत की। सभी ने विनेश से कुश्ती से संन्यास लेने के अपने फैसले की समीक्षा करने की भी अपील की। महापंचायत के बाद पत्रकारों से बात करते हुए सांगवान खाप के प्रमुख सोमबीर सांगवान ने कहा कि पूरे मामले की जांच उच्चतम न्यायालय के मौजूदा जज से करवाई जानी चाहिए और उन्हे न्याय मिलना चाहिए। मामले मे किसी साजिश के सवाल पर सांगवान ने जानना चाहा कि उनका वजन अचानक कैसे बढ़ गया। उन्होंने कहा कि उनके साथ कई लोग थे और यह उनकी जिम्मेदारी थी कि उनका वजन नही बढ़े।

भारतीय महिला यूथ हैंडबॉल टीम चीन के लिए रवाना

नई दिल्ली। 2024। चीन में होने वाली आईएचएफ अंडर-18 यूथ महिला वर्ल्ड हैंडबॉल चैंपियनशिप-2024 में भारतीय महिला यूथ हैंडबॉल टीम भी प्रतिभाग करेगी। इस चैंपियनशिप के लिए चयनित भारतीय टीम रविवार को नई दिल्ली से चीन के लिए रवाना हो गई। चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम की कप्तान हिमाचल प्रदेश की खुशी व उपकप्तान साई की सुजाता को बनाया गया है। इस चैंपियनशिप के लिए रवानगी से पूर्व भारतीय टीम को हरीश नड्डा भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के पुत्र, एवं हैंडबॉल एसोसिएशन इंडिया के कार्यकारी निदेशक डा.आनन्देश्वर पाण्डेय ने वर्ल्ड चैंपियनशिप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दी। हैंडबॉल एसोसिएशन इंडिया के महासचिव ड तेजराज सिंह ने बताया कि आईएचएफ अंडर18 यूथ महिला वर्ल्ड हैंडबॉल चैंपियनशिप-2024 चुझोउ चीन में आगामी 14 से 25 अगस्त 2024 तक आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि इस चैंपियनशिप की तैयारी के लिए भारतीय महिला यूथ हैंडबॉल टीम का प्रशिक्षण शिविर गत 31 जुलाई से 9 अगस्त 2024 तक गांधीनगर गुजरातद्ध स्थित भारतीय खेल प्राधिकरणए एनसीओई में लगाया गया था। इस चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम के कोच एमकार्तिकेयन,सचिन चौधरी व मनीषा बनाए गए हैं। भारतीय टीम-गोलकीपर-आरुषी, कनिका, लवीषा, रेणुका, मुस्कान देवी , मनीषा जाट ,सुजाता,खुशी,काजल, मुस्कान, अनिका,ईशू , वैष्णवी , टीना, तन्नु ,तमन्ना,पूजा।

ऑस्ट्रेलिया ए ने भारत ए को सात विकेट से हराया

ब्रिसबेन।,ताहिला मैकग्रा की नाबाद अर्धशतकीय पारी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया महिला ए टीम ने रविवार को यहां तीसरे और अंतिम टी20 क्रिकेट मैच में भारत ए को सात विकेट से हराकर श्रृंखला में 3-0 से क्लीन स्वीप किया। ऑस्ट्रेलिया ने पहले दो मैच क्रमशः पांच रन और आठ विकेट से जीते थे। भारत के 121 रन के छोटे लक्ष्य का पीछा करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने ताहिला की 22 गेंद मे आठ चौको और दो छक्को से नाबाद 51 रन की पारी के बदौलत सिर्फ 13.5 ओवर में तीन विकेट पर 121 रन बनाकर जीत दर्ज की।ताहिला ने तेज गेंदबाज शबनम शकील की गेंदो पर लगातार तीन चौके लगाकर अपनी टीम को जीत दिलाई।

द.अफ्रीका ने वेस्टइंडीज पर 154 रन की बढ़त बनाई

पोर्ट ऑफ स्पेन (त्रिनिदाद)। दक्षिण अफ्रीका ने वेस्टइंडीज के खिलाफ शनिवार को यहां पहले टेस्ट मैच के वर्षा से प्रभावित चौथे दिन 154 रन की कुल बढ़त हासिल कर ली लेकिन ड्रॉ से बचने के लिए उसे अनुकूल मौसम की जरूरत होगी। शनिवार को शुरुआती छह घंटे का खेल बारिश के कारण धुलने के बाद दक्षिण अफ्रीका ने मेजबान टीम को 233 रन पर आउट करके पहली पारी मे 124 रन की बढ़त हासिल की और फिर दिन का खेल खत्म होने तक बिना विकेट खोए 30 रन बनाकर 154 रन की कुल बढ़त हासिल की।वेस्टइंडीज ने चार विकेट पर 145 रन से आगे खेलना शुरू किया लेकिन आखिरी छह विकेट सिर्फ 60 रन जोड़कर 233 रन तक गंवा दिए जिससे दक्षिण अफ्रीका की जीत की उम्मीद बंधी।

प्रज्ञानानंदा को ब्लिट्ज टूर्नामेंट में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद

सेंट लुई (अमेरिका)। भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा यहां शुरू हो रहे सेंट लुई रेपिड एवं ब्लिट्ज शतरंज टूर्नामेंट में एक बार फिर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों से भिड़ेंगे। आल के टूर्नामेंट मे प्रदर्शन मे थोड़ी गिरावट के बावजूद प्रज्ञानानंदा ग्रैंड शतरंज टूर की अंतिम तालिका मे पोडियम पर जगह बनाना चाहेंगे। अब तक के समग्र टूर परिणामो मे तीसरे स्थान पर चल रहे प्रज्ञानानंदा के पास अपनी स्थिति सुधारने के लिए लगातार दो टूर्नामेंट हैं।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।